THE

PEEP OF DAY.

॥ बालबोध सिक्षक ॥

~~195~~

~~50~~

10

THE

PEEP OF DAY,

TRANSLATED INTO HINDI

BY

MUNSHI GEORGE DOUGLAS MOHAN LÁL,

UNDER THE SUPERINTENDENCE OF

THE REV. JOSEPH OWEN, A. M.,

ALLAHABAD:

PRINTED AT THE PRESBYTERIAN MISSION PRESS.

Rev. L. G. HAY, *Superintendent.*

1855.

E Mortimer, Mrs Favell Lee
(Bevan)

॥ बालबोध सिक्षक ॥

जिसे

Bālabodha sikshaka

श्री पादरी ओवेन साहब के आज्ञानुसार

मुनशी

जार्ज डगलस मोहन लाल मसीही ने

अंगरेज़ी से हिन्दी भाषा में

उलथा किया ॥

इलाहाबाद
के प्रेसबिटेरियन मिशन के छापेखाने में छापा गया
कर्मकारक पादरी लारन्स गेनो हे साहब ॥
सन् १८५५ ईसवी ॥

ADVERTISEMENT.

The Peep of Day, or a series of the earliest religious instruction the infant mind is capable of receiving, so well known and extensively useful in England and America, now appears in a Hindí dress in the hope that it may also be useful in some of the Christian Schools and Christian families of Hindustán. We have attempted to reproduce it in a simplicity of style corresponding to the original. Our missionary friends and others are respectfully invited to send us any suggestions that may occur to them for the improvement of the translation in a future edition. The sequel to this, Line upon Line, is in progress by the same translator, and another friend has engaged to do Precept upon Precept, so we hope to have the whole series completed within twelve months from the present time.

J. OWEN.

Allahabad, 9th Jan. 1855.

॥ सूचीपत्र ॥

॥ सूचीपत्र ॥

॥ सूचीपत्र ॥

बाल बोध सित्तक ॥

पहिला पाठ ॥

देह के बिषय में ॥

प्र' हे छोटे प्यारे बालको तुम ने आकाश में सूर्य्य को देखा है सो किस ने सूर्य्य को आकाश में रक्खा है। परमेश्वर ने ॥

क्या तुम इतने ऊंचे तक पहुंच सक्ते हो। नहीं ॥

कौन सूर्य्य को सम्भालता है कि वुह गिरने नहीं पाता। परमेश्वर ॥

परमेश्वर आकाश में बास करता है और आकाश सूर्य्य से अति ऊंचा है ॥

क्या तुम परमेश्वर को देख सक्ते हो। नहीं ॥

तथापि वुह तुम्हें देखता है इस कारण कि परमेश्वर सब बस्तुन को देखता है ॥

आरम्भ में परमेश्वर ने सब बस्तुन को सृजा और उन की रक्षा भी करता है। परमेश्वर ने सूर्य्य को बनाया और परमेश्वर ही उसे प्रतिदिन उदय करता है परमेश्वर ने बर्षा बनाई और वही बरसाता है। परमेश्वर ने हवा बनाई और वही उसे चलाता है ॥

हे मेरे छोटे बालको परमेश्वर ने तुम्हें सृजा और परमेश्वर ही तुम्हें जीता रखता है॥

तुम एक छोटी देह रखते हो। तम्हारे सिर से लेके पांव लों तुम्हारी देह कहावती है॥

तुम्हारी छोटी देह जीती है पर क्या सब बस्तु जीती हैं। नहीं॥

पत्थर जीवते नहीं हैं परन्तु तुम पत्थर के समान नहीं हो पत्थर को टटोलो वे कैसे ठण्डे हैं पर तुम्हारी छोटी देह गरम है भला तो कौन गरम रखता है। परमेश्वर॥

यह परमेश्वर आकाश में है तथापि वुह तुम पर दृष्टि करता और तुम्हें जीवता रखता है॥

प्यारे तनिक अपना हाथ तो मुंह पर धरो और देखो तो मुंह से क्या निकलता है। यह तुम्हारा श्वास है तुम पल पल में श्वास लेते हो हां सोते में भी श्वास लेते हो। भला तुम श्वास लेने का कुछ उपाय नहीं कर सक्ते पर कौन तुम्हें श्वास लेने देता है॥

यह सब परमेश्वर के कार्य्य हैं परमेश्वर ही ने यह छोटी सी देह तुम को दिई है और उसी की सामर्थ से यह जीती चलती और श्वास लेती है। तुम्हारी देह में हड्डियां हैं जिन्हें परमेश्वर ने कड़ा और पोढ़ बनाया है तुम्हारे हाथ पांव के लिये हड्डी हैं और पीठ के लिये भी और अनेक हड्डियां अगल बगल के लिये हैं॥

परमेश्वर ने तुम्हारी हड्डियों पर चाम मढ़ा है और तुम्हारा मांस कोमल और गरम है॥

तुम्हारे मांस में लोहू है परमेश्वर ने चाम को देह के ऊपर रक्खा है जो इस मांस को कपड़े की नाईं ढांपे है॥

यही सब बस्तु जैसे हड्डी मांस चाम लोहू तुम्हारी देह कहावती है तो परमेश्वर की बड़ी दया थी कि तुम को यह देह दिई है और मैं आशा रखता हूं कि तुम्हारी देह को दुःख न होगा॥

क्या तुम्हारी हड्डियां टूट सक्ती हैं। हां यदि तुम ऊंचे स्थान से गिरो या गाड़ी के पहिये तले पड़ जाओ तो निःसन्देह टूट जायेंगी॥

यदि तुम बहुत ही बेराम होते तब तुम्हारा मांस गल जाता और केवल हाड़ चाम के और कुछ नहीं रहता॥

क्या तुम ने किसी बालक को बहुत दिन बेराम रहे देखा है। मैं ने एक छोटे बालक को बेराम देखा था उस के गोल मोल सुन्दर गाल तुम्हारे समान न थे और तुम्हारे इस हाथ की मोटाई के समान उस के हाथ मोटे न थे। उस छोटे बालक की देह में तनिक मांस न रहा और उस की छोटी हड्डी और चाम के अतिरिक्त कुछ भी न रहा। परन्तु तुम्हारा बड़ा भाग्य है कि परमेश्वर ने तुम्हें बलवन्त और आरोग्य रक्खा है। प्यारे तुम्हारी छोटी दुःखिया देह को सहज ही दुःख हो सक्ता है। यदि वुह आग में पड़े तो जल जायगी यदि गरम खौलता पानी उस पर पड़े तो झौंस जायगी

यदि गहिरे पानी में गिरे और तुरन्त निकाली न जाय तो वह डूब जायगी अथवा एक बड़ी छूरी तुम्हारी देह में धंसे तो उससे लोहू निकसेगा। यदि एक भारी सिन्दूक तुम्हारे सिर पर गिरे तो तुम्हारा सिर कुचल जायगा यदि तुम खिड़की से गिरो तो तुम्हारी गर्दन टूट जायगी। यदि तुम कुछ दिन लों न खाओ तो तुम्हारी देह दुर्बल हो कर बेराम पड़ेगी और तुम्हारा स्वास रुक जायगा और अन्त को तुम ठण्डे होकर तुरन्त मर जाओगे॥

तुम देखते हो कि तुम्हारी छोटी सी देह बहुत ही निर्बल है। क्या तुम अपनी देह को बेराम होने और दुःख पाने से बचा सक्ते हो। तुम्हें उपाय करना उचित है कि अपने को क्लेश न देओ तथापि केवल परमेश्वर ही तुम्हारी देह को हर एक दुर्दशा से जैसे आग पानी चोट चपेट और भांति भांति के रोग से बचा सक्ता है। घुटना टेको और परमेश्वर से यह प्रार्थना करो कि मैं तेरी बिन्ती करता हूं कि मेरी इस छोटी सी दुःखिया देह को क्लेश से बचाय रख तो परमेश्वर तुम्हारी सुनेगा और तुम्हारी रखवाली सदा करता रहेगा॥

दूसरा पाठ॥

माता की रखवाली के बिषय में॥

हे दुलारे मैं तुम्हारी देह के बिषय बतला चुका हूं।

भला तुम्हारी देह सदा से ऐसी ही थी जैसी अब है। नहीं। परन्तु एक समय निदान छोटी थी॥

जब तुम्हारी देह निदान छोटी थी तब तुम क्या कहावते थे। छोटा बालक। अब तुम कुछ कुछ अपनी रखवाली भी कर सक्ते हो पर उस समय कुछ भी न कर सक्ते थे। क्या छोटे छोटे लड़के चल सक्ते अथवा बोल सक्ते अथवा आप से खा सक्ते अथवा कपड़ा पहिन सक्ते हैं। नहीं॥

परन्तु परमेश्वर ने तुम्हें ऐसे के पास भेजा है कि जिस ने तुम्हें बाल अवस्था में जी दे देके बड़ी चौकसी से पाला। वुह कौन थी। तुम्हारी प्यारी मां उसी ने तुम्हारा रक्षण उस समय किया उसी ने तुम्हें अपनी गोद में ले लेके पाला पोसा और खिलाया और तुम्हें बाहर हवा खिलाने को ले गई तुम्हें नहलाया और कपड़ा पहिनाया। तुम अपनी मां को प्यार करते हो। हां॥

मुझे मालुम है कि तुम प्यार करते हो पर मां किस ने तुम्हें दिई। वुह परमेश्वर था जिस ने तुम्हें दयावन्त मां के पास भेजा॥

कुछ समय आगे तुम्हारा पता भी न था तब परमेश्वर ने तुम्हारी छोटी सी देह बनाई और उस ने तुम्हें तुम्हारी माता के पास भेजा जिस ने तुम्हें देखते ही मात्र प्यार किया। वुह परमेश्वर ही था जिस ने तुम्हारी माता से तुम्हें अति प्यार करवाया और उसे तुम पर दयाल किया॥

तुम्हारी प्रेमी माता ने तुम्हारी छोटी सी दुःखिया देह को साफ वस्त्र से संवारा और पालने में सोलाया जब तुम रोए तब तुम्हें भोजन दिया और सोलाने के हेतु अपनी गोद में तुम्हें हलराया और तुम्हें सुन्दर वस्तु देखाई जिसतें तुम्हें हंसावे। उस ने तुम्हारी सहायता किई और तुम्हें देखाया कि तुम कैसे कैसे अपने पांव उठाओ। उस ने तुम्हें बोलने को सिखाया और उस ने बेर बेर आंख की पुतली दुलारा प्यारा कहके चूमा चाटा॥

क्या तुम्हारी माता अब लों तुम पर दयाल है। हां अब लों है। तुम्हारी माता ने तुम्हें इस सुन्दर पाठशाला में भेजा है और जब तुम घर जाते तब तुम को भोजन देती है। मुझे मालूम है कि जब तक वुह जीयेगी तुम पर दयाल रहेगी॥

परन्तु चेत करो कि यह मां किस ने तुम को दिई है॥

मदान में रखने की सक्ती जहां कोई तुम्हें न देखता न तुम्हारी रखवाली कर सक्ता इस लिये परमेश्वर ने तुम्हें तुम्हारी प्यारी मां के पास भेजा॥

क्या तुम्हारी मां तुम को जीता रख सक्ती है। नहीं॥

वुह तुम्हें खिला सक्ती है परन्तु तुम्हारा स्वास नहीं चला सक्ती। परमेश्वर तुम्हारी चिन्ता पल पल में करता है यदि वह तुम्हें भूल जाय तो तुम्हारा स्वास रुक जायगा॥

क्या तुम अपनी माता की दया के लिये कभी उस का

धन्यबाद भी करते हो । हां। तुम अनेक बेर कहते हो सलाम और कभी कभी उस के गले में हाथ डालके कहते हो कि हे प्यारी मां मैं तुम को अधिक से अधिक प्यार करता हूं क्या तुम परमेश्वर के धन्यबाद न होगे जिस ने तुम को मां दिई और तुम्हें जीता रखता है। तुम घुटना टेको और जब तुम परमेश्वर से बिन्ती करते हो तो यह कहो हे परमेश्वर तू हमारे लिये कैसा भला है मैं तेरा धन्यबाद करता और तुझे प्यार करता हूं ॥

क्या परमेश्वर तुम्हारी इन छोटी बिन्तियों को सुनेगा। हां परमेश्वर सुनेगा और प्रसन्न होगा ॥

तीसरा पाठ ॥

पिता की रखवाली के विषय में ॥

वुह कौन है जो तुम्हें कपड़ा पहिनाती और खिलाती है। तुम्हारी प्यारी मां ॥

पर कपड़े और भोजन मोल लेने के लिये तुम्हारी मां दाम कहां से पाती है। बाप ले आते हैं ॥

तुम्हारा बाप दाम कहां से पाता है। खेत में काम करने से॥

तुम्हारा बाप दिन भर काम करने की सन्ती दाम पाता और घर में लाके तुम्हारी मां को देता है और तुम्हारी मां को कहता है कि इस दाम में से कुछ तो खाने को मोल लो और कुछ बालकों को दो। क्या तुम्हारा बाप तुम्हारे लिये

भोजन मोल लेने को अपना दाम देता है तो उस में बड़ी दया है। क्या तुम अपने बाप को प्यार करते हो॥

तुम्हारा बाप कैसे बड़े परिश्रम से खेतों में काम करता है हे छोटी जमुनी तुम्हारा बाप क्या करता है। वह दावता है। तो तुम्हारा बाप खलिहान में बड़ा परिश्रम करता है। बसन्त ऋतु में वुह अपने दास लेके घास काटता है और काटते समय उस की पीठ झुके झुके दुख उठती है। चैत में अपना हंसुआ लेके रब्बी काटता है यहां लों कि घाम के मारे उस का सिर जल उठता है। इस के उपरांत वुह अनाज को अपने सारे बल से दावता है। बर्षा में हर जोतता है यह। लों कि शीत और ठंडी बर्षा उस के मुंह में पड़ती है॥

यह सब किस लिये वुह सहता है। इस कारण कि तुम को बड़त सा भोजन मिले और तुम भले चङ्गे हो और हर जोतने के समय वुह बिशेष करके तुम्हारी चिन्ता करता है और आशा रखता है कि घर में आके तुम्हें भले लड़के की नाईं पावे। तुम उसे देखने को आनन्दित होते हो। मैं जानता हूं कोई समय तुम उसे मिलने को धाते हो। तुम चौकी लेके अग्नि के पास धर देते हो और उस के घुटनों पर कूदके चढ़ बैठते हो। कोई समय वुह बड़त थक जाता है और तम से नहीं बोलता जब लों वुह भोजन खा न चुके तब लों तुम्हें बाट जोहना पड़ता है॥

गंगिया तुम्हारा बाप कौन है वुह गड़रिया है। तुम्हारा
ाप दिन भर भेड़ें चराया करता है। कोई समय रात्री को
ठता है इस कारण कि मेम्नों और बेराम भेड़ों को देखे।
से दयावन्त बाप परमेश्वर ने तुम्हें दिये हैं। किस ने पहिले
ुम्हारे बाप से तुम्हें प्यार करवाया। वुह परमेश्वर था।
ुम्हारा बाप तुम्हें ऐसा प्यार करता है कि जो कुछ तुम्हें
ाहिये वुह तुम्हें देता है। उस के पास एक छोटी झोंपड़ी है
ौर उस के लिये वुह कुछ अपने दाम में से देता है परन्तु
ुम्हें उस में वुह अपने साथ रहने देता है। वुह तुम्हें अपनी
ौकियों में से एक पर अथवा एक छोटी तिपाई पर सुन्दर
अग्नि के पास बैठने देता है और वुह अपने भोजन में से
ुछ तुम्हें देता है। यदि तुम्हारा बाप मर जाय तो तुम क्या
करो। तब तो तुम बिना बाप के बालक होगे। क्या तुम्हारा
ाप मर सक्ता है। हां। बहुतेरे छोटे बालकों के बाप
हीं हैं। मैं ने एक छोटे बालक के बिषय में सुना है जिस
ा बाप अति ऊंची सिढ़ी से गिरके मर गया। दूसरे बालक
के बाप को घोड़े ने लात मारी और वुह मर गया। एक और
दूसरे का बाप कुआ खोद रहा था कि इतने में उस का खास
रुक गया। कितने के बाप रोगी होके मर जाते हैं। यदि
ुम्हारा बाप मर जाय किन्तु परमेश्वर उसे जीता रखता है।
ुम उस के जीते रहने के लिये परमेश्वर से बिन्ती कर सक्ते
हो बिहान को तुम यह कह सक्ते हो कि बाप सांझ को

कुशल से घर लौटे। यद्यपि परमेश्वर तुम्हारे बाप को म
जाने दे तथापि एक बाप तुम्हारे लिये उपस्थित है। मैं कि
कहता हूं उसे तुम अपनी प्रार्थना में क्या कहते हो
हमारे बाप जो स्वर्ग पर है। हां तुम्हारे इस बाप के अति
रिक्त जो घर में है एक और भी स्वर्गीय पिता है इस कारण
परमेश्वर तुम्हारा बाप है। क्या तुम्हारा स्वर्गीय बाप म
सक्ता है। नहीं कभी नहीं। क्या वुह तुम्हें प्यार करता है
हां। वुह तुम को तुम्हारे बाप से अधिक प्यार करता है
वुह नित्य तुम्हारी चिन्ता करता है वुह नित्य तुम्हें देखता
वुह तुम्हें अपनी वस्तु में से देता है वुह प्रसन्न करेगा कि
तुम कोई दिन जायकर उस के संग स्वर्ग में रहो। वुह तुम्हा
बाप को भी प्यार करता है वुह तुम्हारे बाप का बाप है
अब उन वस्तुन का बिचार किया चाहिये जो तुम्हारे स्वर्गी
पिता ने तुम्हें दिई हैं। आओ उन्हें गिनें॥

१ बाप तुम्हारे लिये कमाने को॥
२ मां तुम्हारी रक्षा करने को॥
३ घर रहने को॥
४ बिछौना सोने को॥
५ आग तापने को॥
६ कपड़ा पहिन्ने को॥
७ भोजन खाने को॥
८ स्वांस पल पल॥

चौथा पाठ ॥

प्राण के बिषय में ॥

क्या परमेश्वर कुत्तेः पर भी दयाल ङ्गआ है क्या उस ने
न्हें देह भी दिई है। हां ॥
क्या उन्हों की हड्डियां और मांस और लोह्र और चाम भी
हैं। हां ॥
तुम्हारे समान कुत्ते की भी देह है क्या कुत्ते की देह के
समान तुम्हारी भी देह है। नहीं ॥
तुम्हारे कै पांव हैं। दो। कुत्ते के कै पांव हैं। चार।
तुम्हारे हाथ भी हैं। हां दो। कुत्ते के हाथ हैं। नहीं ॥
उन के भुजा अथवा हाथ नहीं हैं परन्तु हाथ के बदले
गोड़ हैं। तुम्हारा चाम चिकना है परन्तु कुत्ते का रोम से
भरा है। क्या किसी की देह तुम्हारी देह की नाईं है।
नहीं वुह रोवां से भरी है ॥
क्या मुर्गी की देह तुम्हारी देह की नाईं है मुर्गी के कै
पैर होते हैं। दो। वैसे ही तुम्हारे दो पैर हैं पर क्या
उस के पैर तुम्हारे पैरों के समान हैं। नहीं मुर्गी के पैर
पतले और काले हैं ॥
क्या तुम्हारे चाम पर पर हैं तुम्हारे पंख हैं और क्या
तुम्हारा मुंह मुर्गी की चोंच के समान है क्या मुर्गी के दांत
हैं। नहीं। मुर्गी की देह तुम्हारी देह के समान किसी

रीति से नहीं तथापि मुर्गी को देह है इस कारण कि उस
के मांस हड्डियां और लोहू और चाम हैं ॥

क्या मक्खी की देह है। हां उस की काली सी देह है और
चार काले पैर और दो पंख ऐना की नाईं हैं उस की देह
तुम्हारी देह के समान नहीं ॥

किस ने कुत्तों और घोड़ों और मुर्गियों और मक्खियों
को देह दिई और कौन उन्हें जीता रखता है ॥

परमेश्वर इन सारे जीवों की चिन्ता पल पल करता है
क्या कोई कुत्ता परमेश्वर का धन्यबाद कर सक्ता है। नहीं
कुत्ते घोड़े भेड़ें और गायें परमेश्वर का धन्यबाद नहीं कर
सक्ते। क्या इस कारण कि वे बोल नहीं सक्ते। यह कारण
नहीं ॥

कारण यह है कि वे परमेश्वर के बिषय ध्यान नहीं कर
सक्ते परमेश्वर के बिषय उन्हों ने कभी नहीं सुना और न वे
उस के बिषय कुछ समझ सक्ते हैं। क्यों नहीं। क्या इस
कारण कि उन का आत्मा तुम्हारा सा नहीं है। क्या तुम
एक आत्मा रखते हो। हां तुम्हारी देह में एक अवि
नाशी आत्मा है जो कभी न मरेगा तुम्हारा आत्मा पर
मेश्वर के बिषय ध्यान कर सक्ता है ॥

जब परमेश्वर ने तुम्हारी देह को बनाया तब तुम्हारे
आत्मा को उस के भीतर रक्खा। क्या तुम इस्से आनन्द हो
जब परमेश्वर ने कुत्तों को बनाया तब तुम्हारा सा आत्मा

न के देह में नहीं रक्खा से वे परमेश्वर के बिषय ध्यान
हीं कर सक्ते हैं॥

क्या मैं तुम्हारे आत्मा को देख सक्ता हूं। नहीं। मैं उसे
ख नहीं सक्ता कोई उसे परमेश्वर के बिना नहीं देख
क्ता है वह जो कुछ तुम इस घड़ी बिचार करते हो
ानता है॥

कान भला है तुम्हारा आत्मा अथवा तुम्हारी देह।
म्हारा आत्मा अधिक भला है। तुम्हारा आत्मा क्यों अधिक
ला है। इस कारण कि तुम्हारी देह मर सक्ती है परन्तु
म्हारा आत्मा किसी रीति से मर नहीं सक्ता॥

मैं तुम्हें बताऊं कि तुम्हारी देह काहे से सिरजी गई धूल
। परमेश्वर ने धूल को मास और लोहू बनाया॥

तुम्हारा आत्मा काहे से बना। तुम्हारा आत्मा परमेश्वर
बनाया है॥

कोई दिन वुह कुत्ता मर जायगा। और उस की लोथ
की जायगी। जब उस की देह मरी तो उस के सङ्ग सब गया।
रन्तु जब तुम्हारी देह मरी तो तुम्हारा आत्मा जीता रहेगा
ौर तुम किसी रीति से मिट न जाओगे॥

यदि तुम मरो तो कहां धरे जाओगे। तुम्हारी देह
माधि में गाड़ी जायगी पर तुम्हारा आत्मा समाधि में न
हेगा एक अज्ञान छोटे बालक के भी आत्मा है॥

एक दिन मैं किसी गली से जाता था और एक मुरदे की

सन्दूक लिये जाते मैं ने देखा और कई एक लोग उस के पीछे रोते जाते थे। एक मरा बालक उस में था। क्या उस बालक का आत्मा सन्दूक में था। नहीं उस का आत्मा परमेश्वर के पास गया था॥

क्या तुम परमेश्वर से आत्मा पाने के लिये उस का धन्य-वाद न करोगे क्या तुम उस की बिनती न करोगे कि तुम्हारा आत्मा अपने साथ रहने के लिये लेवे। जिस समय कि तुम्हारी देह मरे बिनती करो कि जब मेरी देह मरे और धूल में मिल जाय तो तू हमारे आत्मा को अपने पास रहने के लिय ले ले॥

कौन सी बस्तु नहीं मरती आत्मा॥

तुम्हारी देह सड़ गल धूल हो जायगी परन्तु तुम्हारा आत्मा सनातन लों जीता रहेगा और कभी न सड़े न गलेगा॥

पांचवां पाठ॥

दूतों के बिषय में॥

तुम जानते हो कि परमेश्वर स्वर्ग में बास करता है। वह बड़े उजले सिंहासन पर बैठता है उस की देह नहीं इस कारण कि वुह परामात्मा है॥

क्या वुह स्वर्ग में अकेला बास करता है। नहीं दूतगण उस के सिंहासन के चारो ओर खड़े रहते हैं।

दूतगण कौन हैं दूतगण आत्मा हैं ॥

वे सूर्य्य की नाईं प्रकाशित हैं परन्तु वे परमेश्वर के समान ज्योतिष्मान नहीं हैं इस कारण कि वुह सूर्य्य से भी अधिक प्रकाशित है। सारे दूत परमेश्वर की ओर सदा ताकते रहते हैं और वुह परमेश्वर ही है जो उन्हें ऐसा चमकाता है ॥

वे परमेश्वर के बिषय में सोहावने गीत गाते हैं वे कहते हैं कि परमेश्वर कैसा भला है कैसा पवित्रमय और कैसा महान है ॥

स्वर्ग में रात कहां इस कारण कि दूतगण गाने से कभी नहीं थकते और सोने की इच्छा कभी नहीं करते वे कभी बेराम नहीं होते और न वे कभी मरेंगे ॥

वे कभी नहीं रोते पर मुसकुराते और सदा आनन्दित रहते हैं ॥

यदि वे नटखट होते तो आनन्दित न होते नटखटी लोगों को सदा शोकित करती है। दूतगण बहुत ही भले हैं वे परमेश्वर को अति प्यार करते हैं और सब जो वुह उन्हें आज्ञाकरता है कर लाते हैं ॥

उन के पंख हैं वे बड़ी जलदी उड़ सक्ते हैं और परमेश्वर उन्हें हमारे पास हमारी रखवाली करने को भेजता है। जैसे ही परमेश्वर किसी दूत को आज्ञा करता कि जा तो वुह तुरन्त जाता है वे बड़े बलवन्त हैं और हमें हानि से बचा सक्ते हैं ॥

तुम चाहते हो कि दूतगण रात्रो के समय तुम्हारे पास रहें॥ तुम को उचित है कि परमेश्वर से दूतों के निमित्त प्रार्थना करो इस कारण कि वे परमेश्वर की आज्ञा बिना कहीं नहीं जाते॥

परमेश्वर उन का पिता है उन के दो पिता तुम्हारे समान नहीं हैं दूतगण परमेश्वर के पुत्र हैं और परमेश्वर के निवास स्थान स्वर्ग में रहते हैं। जब तुम अपने पिता की आज्ञा को मानते हो तो तुम दूतों के समान हो जो परमेश्वर की आज्ञा को मानते हैं॥

दूतगण हम को बहुत प्यार करते हैं उन की इच्छा है कि हम भले होवें और जाकर उन के साथ स्वर्ग में रहें। जब कोई बालक अपनी नटखटी के कारण पश्चात्ताप करता और परमेश्वर से क्षमा के हेतु बिन्ती करता है तो दूतगण अति प्रसन्न होते हैं॥

जब कोई बालक जो परमेश्वर को प्यार करता बेराम पड़ता है और मरने के निकट है तो परमेश्वर दूतों से आज्ञा करता है कि जाओ और उस छोटे बालक के प्राण को स्वर्ग में ले आओ। तब दूतगण उड़कर नीचे उतरते हैं और वुह दुलारा अपनी आंखें बन्द करता और अपना सिर अपनी माता की गोद में धरता है उस का स्वास रुक जाता और वुह मर जाता है उस का प्राण कहां है दूतगण उस के प्राण को स्वर्ग में लिये जाते हैं॥

वुह बालक अब कैसा आनन्द है और उस का कष्ट जाता रहा और वुह बक्तत ही भला हो गया वुह दूत के समान चमकता है। वुह अपने हाथ में बाजा लेकर परमेश्वर के धन्यवाद करने और अति सोहावने गीत गाने को आरम्भ करता है। उस की छोटी लोथ समाधि में रक्खी जाती और माटी में मिल जाती है एक दिन परमेश्वर उस की लोथ को फिर जिलावेगा॥

हे प्यारे बालको क्या तुम परमेश्वर से बिन्ती न करोगे कि वुह अपने दूतगण भेजकर जब तुम मरो तो तुम्हारे प्राण को अपने पास बुलाय ले॥

छठवां पाठ॥

दुष्ट दूतगण के विषय में॥

परमेश्वर ने स्वर्ग में रहना कब से प्रारम्भ किया॥

परमेश्वर सदा से स्वर्ग में बास करता है॥

एक समय था जब कि तुम न थे परन्तु परमेश्वर सदा से था॥

एक समय था जब कि सूर्य्य न था परन्तु परमेश्वर सदा से था॥

एक समय था जब की दूतगण न थे परन्तु परमेश्वर सदा से था॥

किसी ने परमेश्वर को उत्पन्न नहीं किया परन्तु परमेश्वर

सब बस्तुन से पहिले से है और परमेश्वर ही ने समस्त बस्तुन को बनाया॥

दूतों को सिरजे बहुत दिन बीते कितने दूतगण उस ने बनाये कोई नहीं बताय सक्ता अनगणित हैं और वे भले और आल्हादित थे॥

परन्तु कोई कोई उन में से दुष्ट हो गये उन्हों ने परमेश्वर का प्यार करना त्यागा और अभिमानी और आज्ञा भंजक हो गये॥

तो क्या परमेश्वर ने उन के भ्रष्ट हो जाने के पीछे उन्हें स्वर्ग में रहने दिया। नहीं उस ने उन्हें बाहर ढकेल दिया और उन्हें बेड़ियों से जकड़के अन्धेरे स्थान में मूंद दिया॥

इन दुष्ट दूतगणों में एक का नाम शैतान था वुह दुष्ट दूतों में प्रधान था॥

वुह शैतान कहावता है वुह बड़ा ही दुष्ट है और परमेश्वर से घिन करता है॥

वुह कभी फिर स्वर्ग में नहीं जा सक्ता परन्तु वुह जहां हम रहते हैं आता है और अपने संग और दुष्टों को भी लाता है॥

हम लोग शैतान को नहीं देख सक्ते हैं इस कारण कि वुह आत्मा है परन्तु वुह सदा इधर उधर फिरा करता है कि लोगों से बुरे कर्म करावे॥

शैतान बुराई को प्यार करता है और वुह भला हो

नहीं चाहता शैतान लोगों के क्लेश और रोने से अति प्रसन्न होता है और लोगों की नटखटी देख वुह अधिक हर्षित होता है इस कारण कि वुह बिचार करता है कि वे आकर उस के संग अन्धकार स्थान में रहेंगे और वुह यही इच्छा रखता है कि बहुत से लोग नरक में जावें और इसी निमित्त हम से दुष्ट कर्म कराने के उपाय करता और परमेश्वर से प्रार्थना करने में हमें रोकता है॥

मैं तुम से बखान नहीं कर सक्ता कि शैतान कैसा दुष्ट है वुह दया रहित है इस कारण कि वुह दुःख देने में प्रसन्न होता है वुह झूठा है और लोगों को झूठ बोलना सिखावता है वुह अभिमानी है और चाहता है कि मनुष्य उसे परमेश्वर से अधिक मानें वुह डाही है और लोगों को आनन्दमय नहीं देख सक्ता॥

शैतान अति आशा रखता है कि तुम मरने के पीछे उस के संग जाकर रहोगे वुह जानता है कि यदि तुम उस के समान दुष्ट हो तो उस के संग रहोगे। परन्तु वुह परिश्रम करता है कि तुम्हें अपने समान दुष्ट बनावे जब तुम क्रोध करते तो उसी के समान होते और जब तुम कहते हो कि मुझे क्या चिन्ता है तो उस ही के समान हो और जब तुम अपने को भला समझते हो तब तुम उसी के समान अभिमानी होते हो॥

क्या परमेश्वर शैतान की आज्ञाकारी से तुम को रोक

सक्ता है। हां वुह रोक सक्ता है इस कारण कि परमेश्वर शैतान से अधिक बलवन्त है। इस्से अधिक परमेश्वर नित्य तुम्हारे निकट रहता है इस कारण कि वुह सर्वज्ञ है। परन्तु शैतान एक ही समय सर्वज्ञ नहीं हो सक्ता। यह सत्य है कि शैतान के पास अनेक दूत हैं जो उस की आज्ञा के समान जहां कहीं वुह चाहता जाते हैं शैतान और उस के दूत तुम्हारे पास जब तब आते हैं। परन्तु परमेश्वर सदा तुम्हारे निकट है वुह तुम्हारे आगे पीछे और चारो ओर है। वुह तुम्हारे बिछौने के आस पास है जब कि तुम शयन करते हो और वुह तुम्हारे मार्ग में है जब तुम चलते फिरते हो। इस लिये तुम को शैतान से डरना अवश्य नहीं केवल तुम परमेश्वर से सहाय मांगो और वुह तुम को देगा॥

शैतान तुम से अधिक बलवन्त है परन्तु परमेश्वर सभों से बलवन्त है। यदि कोई जन तुम्हें दुःख देने को जब तुम अकेले रहो आवे तो तुम अत्यन्त डर जाओगे परन्तु कदाचित तुम अपने पिता को अपनी ओर आते देखो तब तुम उस की ओर धाओगे और अति निडर हो जाओगे। सो देखो परमेश्वर तुम्हारा पिता है वुह शैतान को तुम्हें क्लेश देने से रोक सक्ता है। उस्से बिन्ती करके कहो कि हे प्रिय पिता तू मुझे शैतान की नाईं दुष्ट होने और नरक में पड़ने से बचा॥

सातवां पाठ ॥

जगत के बिषय में ॥

पहिला भाग ॥

यह स्थान जिस में हम बसते हैं सो पृथ्वी कहावती है। ह अति सुन्दर है। यदि हम ऊपर दृष्टि करें तो नीले आ- ाश को देखते हैं और यदि नीचे दृष्टि करें तो हरी घास ा देखते हैं। आकाश छत की नाईं हमारे सिर पर फैला और घास बिछौने की नाईं हमारे पैरों के नीचे है और ोतिमान सूर्य्य दीपक की नाईं हमें उंजियाला देने को है रमेश्वर की ऐसी बड़ी दया थी कि उस ने पृथ्वी को सृजा ार उस में हमें बसने दिया॥

परमेश्वर स्वर्ग में था और उस के समस्त ज्योतिमान दूत- ण उस के चारो ओर थे जब कि उस ने पृथिवी का सृज- ा आरम्भ किया॥

परमेश्वर का पुत्र उस के संग था इस कारण कि परमेश्वर पास सदा से एक पुत्र था जो ठीक उसी के समान था ार उस के पुत्र का नाम यशू खीष्ट है वुह महिमा और लाई में अपने पिता के समान था और पिता पुत्र एक ही रमेश्वर हैं वे सनातन से साथ २ थे और वे एक दूसरे को ति प्यार करते हैं सो पिता और पुत्र एक ही परमेश्वर और उन्हों ने पृथिवी को सृजा॥

६ परमेश्वर ने पृथिवी को कैसे सृजा अपने बचन से पृथि
में पहिले परमेश्वर ने उंजियाले को सिरजा। ईश्वर
कहा कि उंजियाला होवे और उंजियाला हो गया केव
परमेश्वर के और कोई अपने बचन से किसी बस्तु को सिर
नहीं सक्ता परमेश्वर ने समग्र बस्तुन को नास्ति से उत्प
किया है उस ने केवल आज्ञा किई और उंजियाला
७ गया॥

फिर परमेश्वर ने वायु को उत्पन्न किया तुम वायु को नह
देख सक्ते परन्तु तुम उस के स्पर्श को जान सक्ते हो वायु सर्व
है। कभी कभी तुम उस के शब्द को सुन सक्ते हो सो तु
जिस पवन का शब्द चलते सुन सक्ते हो वही पवन वायु है

फिर परमेश्वर ने कुछ जल को अत्यन्त ऊंचे पर रक्ख
है बादल जल से भरे हैं और कभी २ जल बरसता
तो हम उसे बर्षा कहते हैं॥

परमेश्वर ने एक बड़ा गहिरा स्थान बनाया और उ
जल से भर दिया परमेश्वर ने पानी को आज्ञा दिई और वु
बड़े बल से गहिरे स्थान में जाता रहा और इसी पान
को परमेश्वर ने समुद्र कहा॥

समुद्र अति बड़ा है और उस में नित्य लहरें उठ
करती हैं परन्तु वुह उस गहिरे स्थान से जिस में प
मेश्वर ने उसे स्थिर किया है बाहर नहीं जा सक्त
इस कारण कि परमेश्वर ने कहा तू वहीं रह ज

धी चलती तो समुद्र बड़ा शब्द और हा हा कार
ता है॥

परंतु परमेश्वर ने हमारे चलने फिरने के हेतु सूखी भूमि
बनाई जिस को हम पृथिवी कहते हैं हम समुद्र पर नहीं
सक्ते और न हम उस में घर द्वार बना सक्ते हैं परन्त
मि जो है सो दृढ़ और कठोर और सूखी है॥

अब मैं उन पांच बस्तुन को जिन्हें परमेश्वर ने बनाया
हैं बतलाय चुका॥

उंजियाला। २ वायु। ३ बादल। ४ समुद्र। ५ सूखी भूमि॥

आओ सिरजनहार परमेश्वर का धन्यवाद करें जिसने
सी बड़ी और सुन्दर पृथिवी को सृजा॥

आठवां पाठ॥

पृथिवी के बिषय में॥

दूसरा भाग॥

जब परमेश्वर ने सूखी भूमि को बनाया तो उस पर कुछ
था परन्तु वुह शून्य थी सो परमेश्वर ने आज्ञा किई
र भूमि से अनेक प्रकार की बस्तु उगीं वृक्ष उस में उपजे
र वे भांति भांति की हरी २ पत्तियों से ढंप गये कोई
म कोई इमली कोई अमरूत कहलाये और कोई २
ड़ों में सुन्दर २ फल फले जैसे बेर सेव नारंगी और
जीर आदिक॥

तरकारी आदि भी पृथिवी से उगीं जैसे आलू और ले
भिया कोभी और सेम ये सब तरकारी कहावती हैं॥

अनाज भी उस में उगा कोई गेहूं कोई जव कोई चन
कहाये जब अनाज की बालें पक जातीं तो पेड़ झुक जा
और वे सोने की नाईं पीली पीली देखाई देती हैं॥

परमेश्वर ने कोमल हरी घास को उगाया और फूलों को
घास ही में उपजाया और भांति २ के मधुर सुगन्ध के फू
जैसे चंपा गुलाब केतकी चम्बेली गुलचांदनी कंवल केवड़
जो फूलों में अति सुन्दर हैं उपजाये॥

देखो मैं ने पांच प्रकार की वस्तु जो पृथिवी से उपजती
हैं तुम्हें बतलाईं॥

१ पेड़। २ तरकारी। ३ अनाज। ४ घास। ५ फूल

जब पृथिवी घास और पेड़ों से भर गई तो अति सुन्दर
देखाई देती थी परंतु केवल परमेश्वर और दूतों ने उस की
सुन्दरता को देखा॥

तिस के पीछे परमेश्वर ने सूर्य्य को आकाश में रक्खा और
उसे सारे दिन उंजियाला देने की आज्ञा दिई कि पृथिवी
की एक दिशा से दूसरे लों प्रकाशित करे और परमेश्वर ने
चन्द्रमा को रात्री के समय उंजियाला देने को बनाया और
उस ने आकाश को तारों से भर दिया॥

तुम ने सूर्य्य के समान दीप्तिमान वस्तु कभी और कोई
न देखी होगी वुह निःसन्देह बहुत ही बड़ा है यद्यपि

ारा देखाई देता है इस कारण कि वुह बहुत दूर है वह
ाई समय गिर नहीं सक्ता इस लिये कि परमेश्वर उसे
भालता और उसे आकाश के बीचों बीच चलाता है॥

चन्द्रमा सूर्य्य के समान दीप्तीमान नहीं इस लिये कि पर-
ेश्वर उसे रात्रो के समय अंधेरा ही रहने देता है जिसतें
म सुस्तावें और बिश्राम से सो रहें॥

तारों को केवल परमेश्वर के और कोई नहीं गिन
सक्ता है वुह उन के नाम और उन की गिनती को जानता
है जब हम चन्द्रमा और तारों की ओर दृष्टि करें तो
बिचार करें कि परमेश्वर कैसा महान है तथापि वुह छोटी
छोटी चिड़ियों की सुध लेता और छोटे बालकों को
प्यार करता है॥

नवां पाठ॥

पृथिवी के विषय में॥

तीसरा भाग॥

परमेश्वर ने अनेक वस्तु बनाईं परन्तु कोई उन में
जीवधारी न थी तत्पश्चात उस ने कुछ जीवती वस्तु भी
बनाईं उस ने आज्ञा किई और जल अनगिनित मछलियों
से भर गया॥

तिन में कोई छोटी कोई बड़ी थीं। तुम ने ह्वेल
अथवा महा मच्छ का समाचार सुना होगा वुह जलचर

मन्दिर के समान लम्बा है। मछलियां गीत हैं और उन के पांव नहीं हैं वे न गा सक्तीं न बोल सक्तीं हैं॥

परमेश्वर ने मछलियों से अधिक सुन्दर नभचर पवन में उड़ने के निमित्त पखेरू भी जो पेड़ों में चहचहाते और डालियों के बीच गाते हैं बनाये॥

चिड़ियों के डैने हैं और वे नाना प्रकार के चित्र विचित्र पांखों से विभूषित हैं जैसे फरीदी तोता के पंख लाल होते हैं और कोइल के काले कबूतरों के काले कासनी सफेद बैंजनी और नीले ज़र्द होते हैं परन्तु मोर सभों से अधिक सुन्दर है उस के सिर पर चोटी होती हैं और लम्बी सी पूंछ जो भूमि पर घसिटती चलती है और कोई समय जब वुह अपने डैने पसारता है तो वे मानों बड़े पंखे के समान चित्र बिचित्र निरख पड़ते हैं देखियल तोता मैना सामा और भुजंगा कैसे मीठे राग से गाते हैं परन्तु एक चिड़िया है जो सब से अच्छा गाती है वह बुलबुल कहावती है रात्री समय जब दिन की चिड़ियां मौन हो रहतीं तब वुह जंगलों में अति सोहावन मनभावन गीत गाती है॥

कोई कोई चिड़ियें पानी में तैरतीं हैं जैसे बतक और सुन्दर राजहंस जिस का गला लम्बा और पंख पाला के समान श्वेत होते हैं॥

कोई २ चिड़ियें अति ऊंची हैं जैसे शुतुरमुर्ग जो मनुष्य

की नाईं ऊंचा होता है वुह और चिड़ियों की नाईं उड़ सक्ता है परन्तु वुह अत्यन्त बेगवती दौड़ता है॥

चील्ह भी अपना खोंता अति ऊंचे पर लगाती है उस के पंख बहुत बली होते हैं और वुह बादलों के बराबर जा कर मंडराती है॥

सब में कोमल पिण्डुकी है वुह गा नहीं सक्ती परन्तु वुह अकेले बैठ कर गुटकती है मानों वुह बड़ी उदास रहती है॥

मैं तुम को सब चिड़ियों का नाम नहीं बता सक्ता हूं परन्तु तुम आप बिचार करके और २ भांति के उन के नाम जान सक्ते हो॥

अरू और भांति के भी जीवधारी हैं जो रेंगवैये जन्तु वा भूचर कहावते हैं परमेश्वर ने उन्हें जैसे मछली आदिक पानी से वैसा नहीं परन्तु पृथिवी से उपजाया भूचर अति छोटे हैं और वे पृथिवी पर रेंगते हैं जैसे चींटी आदिक कोई २ रेंगवैये जन्तु उड़ भी सक्ते हैं जैसे मक्खियां और तितिली आदिक मक्खियां फूलों का रस चुहुक कर मोम और मधु बनाती हैं तितिली के पंख कैसे रंगीले होते हैं और उन की देह छोटे परों से ढंपी है और वे कैसे सूक्ष्म रूप हैं कि दिखाई नहीं देते॥

जब परमेश्वर ने समस्त कीड़े मकोड़ों को बनाया तब वे अच्छे और सुन्दर थे॥

पुनि परमेश्वर ने पशुओं को बनाया जब उस ने आज्ञा

किई तो वे पृथिवी से उपजे और पृथिवी पर चलते फिरते हैं और अनेक उन में चार पांववाले हैं परन्तु तुम भांति भांति के पशुन के नाम भी जानते हो जैसे भेड़ बकरी गाय बैल कुत्ते और बिलैया ये ही पशु कहावते हैं पर और २ भांति के पशु भी हैं जैसे गिलहरी जो एक डाली से दूसरे पर कूदती फांदती है और खरहा जो अपनी मांद में रहता है और बकरी जो ऊंचे पर्वतों पर चढ़ती है हां बारासिंघा जिस के सींघ अति सुन्दर हैं और सिंह जिस के भूरे भूरे बार होते हैं और बाघ जिस की देह पर चित्ती होती हैं हाथी सब पशुन से बड़ा है सिंह बली कुत्ता चतुर बारासिंघा महा सुन्दर परन्तु मेम्ना बहुत ही कोमल है पण्डुकी पक्षियों में और मेम्ना पशुन में अति कोमल हैं॥

अब परमेश्वर ने पृथिवी को जीवधारियों से भर दिया था और वे सब के सब अच्छे थे हां सिंह और बाघ भी भोले थे और किसी पर चोट चपेट न करते थे तो मैं ने तुम्हें चार भांति के जीवधारी बताए। १ मछली तो जलचर। २ पक्षी नभचर। ३ रेंगवैये भूचर जन्तु। ४ और पशु॥

इन सब जीवधारियों की देह है परन्तु तुम्हारी नाईं उन के चैतन्य आत्मा नहीं है हां वे चलते फिरते और स्वास लेते हैं परमेश्वर ही उन्हें प्रति दिन खिलाता और जीवता रखता है परमेश्वर सब के लिये भला है॥

दसवां पाठ ॥

आदम और हव्वा के बिषय में ॥

अब मैं तुम्हें बताऊंगा कि परमेश्वर ने सबसे पीछे क्या बनाया ॥

परमेश्वर ने भूमि की धूल से मनुष्य का पुतला बनाया और उस में जीवन का श्वास फूंका और प्राण दिया ऐसा कि मनुष्य को परमेश्वर के बिषय ज्ञान हुआ आदम परमेश्वर की नाईं पवित्र था और वह परमेश्वर को निपट प्यार करता था ॥

परमेश्वर ने उसे एक महा सुन्दर बारी में जिस में घने पेड़ फलों से लदे हुए थे रक्खा इस बारी का नाम अदन था और परमेश्वर ने आदम को सब पच्छी पशु दिखलाए और उसे आज्ञा दिई कि उन के नाम रक्खे तब परमेश्वर ने आदम से कहा कि मैं तुम को समस्त मछलियां रेंगवैये जीवधारी पच्छी और पशु देता हूं तुम्हीं उन के प्रधान हो सो आदम पृथिवी की सब बस्तुन का राजा हुआ ॥

और परमेश्वर ने आदम से कहा कि तू इस बारी के हर एक पेड़ के फल को जो इस में उगे खाया कर तथापि परमेश्वर ने उसे निश्चिन्त रहने न दिया परन्तु उसे बारी की रखवाली करने को आज्ञा दिई ॥

अब तुम देखते हो कि परमेश्वर आदम पर कैसा अति दयाल था। परन्तु आदम के पास कोई मित्र न था कि उस के संग रहे इस कारण कि पच्छी पशु उस्से बात चीत नहीं

कर सक्ता थे तब परमेश्वर ने कहा कि वुह आदम के लिये एक उपकारिणी बनावे सो उस ने आदम को बड़ी नींद में डाला और जब वुह भारी नींद में था तब परमेश्वर ने उस की पसुलियों में से एक लेके उस की सन्ती मास भर दिया और उस्से एक उपकारिणी बनाई परन्तु जब आदम जागा तो उस ने उस स्त्री को देखा और वुह जान गया, कि यह तो मेरी ही हड्डी और मास से बनी है और उस ने उसे अति प्यार किया उस उपकारिणी का नाम हव्वा था॥

समस्त वस्तु जो परमेश्वर ने बनाईं तुम सुन चुके हो कि वे अति सुन्दर थीं और सब के सब जीवधारी बड़े आनन्द में थे और किसी प्रकार का दुःख हाहाकार और पाप समस्त जगत् में न था॥

छः दिन लों परमेश्वर जगत को सिरजता रहा और जब समाप्त कर चुका तो उस ने बिश्राम किया और फिर किसी वस्तु को न सिरजा॥

दूतगण ने इस जगत को जिसे परमेश्वर ने बनाया देखा था वे अति प्रसन्न थे और परमेश्वर की स्तुति के हेतु उन्होंने मंगलाचार किया था और ईश्वर का पुत्र ईसा मसीह भी आनन्द था इस कारण कि वुह आदम और हव्वा को प्यार करता था॥

और मैं कैसे जानता हूं कि जगत् सिरजा गया था इस कारण कि बैबल में ऐसा ही लिखा है जो केवल परमेश्वर ही का ग्रन्थ है॥

तो आओ जो जो बस्तु ईश्वर ने बनाई हम फिर से गिने॥ १ उंजियाला। २ वायू। ३ बादल। ४ समुद्र। ५ सूखो [भू]मि। ६ वे बस्तु जो पृथिवी से उपजती हैं। ७ सूर्य्य [च]न्द्रमा और तारे। ८ और सब जीवधारी॥

ग्यारहवां पाठ॥

प्रथम पाप के बिषय में॥

आदम और हव्वा अदन की बारी में अति आनन्द थे [वे] एक दूसरे से बोलते चालते और एकट्ठे चलते फिरते थे और वे कभी झगड़ा न करते थे और परमेश्वर की दया और कृपा के हेतु वे उस की स्तुति करते थे॥

कभी कभी परमेश्वर भी उन से बातें करता था और वे उस के शब्द को सुन कर मगन होते थे इस कारण कि वे उस्से डरते न थे॥

परन्तु एक बात यह थी कि जिस के करने के हेतु परमेश्वर ने उन्हें निषेध किया था॥

बारी के बीच में एक पेड़ था और वह नदी के तीर पर उगा था और बहुत सुन्दर फल उस में फले थे परन्तु परमेश्वर ने आदम और हव्वा से कहा कि तुम उस पेड़ का फल न खाना और यदि तुम उस में से खाओगे तो तुम मर जाओगे॥

आदम और हव्वा को परमेश्वर की आज्ञाकारी भली लगी इस लिये उन्हों ने उस फल के खाने की इच्छा न किई॥

तुम जानते हो कि शैतान कैसा दुष्ट दूत है वह परमेश्वर से घिन करता है उस ने आदम और हव्वा से भी घिन किया उस ने इच्छा किई कि वे बुरे होवें जिस्तें नरक में जायें इसी कारण उस ने यह बिचार किया कि जाकर उस फल के खिलाने के निमित्त उन्हें फुसलावे वुह बारी में गया और सर्प्प के रूप में देखाई दिया उस ने जब हव्वा को उस पेड़ के निकट देखा तो उस्से कहा कि क्यों तू इस सुन्दर फल को नहीं खाती॥

हव्वा ने उत्तर दिया कि मैं ऐसा न करूंगी हम उस फल को कभी न खायेंगे और यदि हम खायें तो परमेश्वर ने कहा है कि हम मर जायेंगे तब सर्प्प ने कहा कि तुम निश्चय न मरोगे उस फल से तुम बुद्धिमान हो जाओगे॥

हव्वा ने उस फल की ओर देखा कि उस में सुस्वाद और वुह सुन्दर है तो उस के फल में से लिया और खाया और कुछ आदम को भी दिया और उस ने भी खाया॥

सो उस फल के खाने से उन्हों ने बड़ा पाप किया और वे दुष्ट हो गये और परमेश्वर का प्यार उन के अन्तःकरण से निकस गया॥

थोड़ी ही देर में उन्होंने परमेश्वर के शब्द को बारी में सुना और डर गये और जा कर अपने को बारी के पेड़ों में छिपाया परन्तु परमेश्वर ने उन्हें देखा इस लिये कि वुह सर्वज्ञ है॥

और परमेश्वर ने पुकारा कि हे आदम तू कहां है इस पर आदम और हव्वा पेड़ों से बाहर आये॥

तब परमेश्वर ने आदम से कहा क्या तू ने उस फल को खाया जो मैं ने तुझे बर्जा था॥

और आदम ने कहा कि इस स्त्री ने मुझे खाने को कहा और मैं ने खाया॥

और परमेश्वर ने हव्वा से कहा कि यह तू ने क्या किया॥

हव्वा ने कहा कि सर्प ने मुझे खाने को कहा॥

तब परमेश्वर सर्प से अति क्रोधित ऊआ और कहा कि तुझे सनातन लों दंड मिलेगा॥

परमेश्वर ने आदम और हव्वा से कहा कि तुम मर जाओगे मैं ने तुम्हारी देह धूल से बनाई और वुह धूल ही में फिर मिल जायेगी॥

तब परमेश्वर ने उन्हें उस मधुर बारी में रहने न दिया परन्तु एक दूत को अग्नि के खड्ग के साथ भेजा और उस ने उन्हें बाहर निकाल दिया॥

दूत फाटक पर अपना खड्ग लेके खड़ा भया जिसतें वे फिर बारी में न घसें॥

बारहवां पाठ॥

परमेश्वर के पुत्र के बिषय में॥

क्या तुम यह सुन के उदास नहीं होते कि आदम और हव्वा बारी से बाहर निकाले गये थे॥

बारी के बाहर कुछ सुख न था इस लिये कि वहां बहुते बनैले पेड़ और कंटकटारे उगे थे परन्तु बारी के भीत केवल मधुर फूलों और फलों के कुछ न था॥

आदम को भूमि भी गोड़ने पड़ी यहां लों कि वुह परिश्र से पसीना पसीना होकर थक जाता था इस कारण कि बिन परिश्रम वृक्ष फल नहीं देते थे॥

कोई कोई समय उस की देह में क्लेश होता था हां उस बाल भी पक गये और वुह अन्त को निपट बूढ़ा हो गया

अनेक बेर हव्वा भी कष्ट में पड़ती और दुर्बल हो जात थी और उस की आंखों से आंसू भी गिर पड़ते थे हाय आदम और हव्वा यदि तुम परमेश्वर की आज्ञाकारि करते तो तुम सदा लों आनन्दित रहते॥

अब आदम और हव्वा को सूझ पड़ा कि हम अन्त के मर जायेंगे। परमेश्वर ने उन्हें बालक दिये परन्तु उन्हें जान पड़ा कि ये बालक भी मरनेहारे हैं परमेश्वर ने उन्हें चिताय भी दिया था कि उन की देह धूल से बनी और धूल ही में मिल जायेंगी॥

परन्तु एक बात उदास होने की और भी थी कि वे अधिक दुष्ट हो गये। हां वे परमेश्वर के धन्यबाद से आगे की नाईं स्नेह न रखते थे। और वे कुकर्म्म करने को बड़ी इच्छा रखते थे यहां लों कि वे शैतान अर्थात् दुष्ट आत्मा के समान हो गये। परन्तु शैतान को यह आशा हुई कि

जिस समय उन की देह धूल में धरी जायेंगी तो उन का आत्मा उस के पास जायेगा इस कारण कि शैतान जानता था कि दुष्ट स्वभाव लोग परमेश्वर के पास स्वर्ग में बास नहीं कर सक्ते॥

यदि परमेश्वर उन पर कृपा दृष्टि न करता तो वे अपने सन्तान सहित नरक में जा चुके थे। इस कारण परमेश्वर जो दयासिन्धु है उस ने अपनी अपरमपार कृपा से उन पर दया दृष्टि से ताका और उन की मुक्ति का उपाय आप ठहराया और सर्प्प को श्राप दे आदम से यों प्रतिज्ञा करी कि मैं तेरे और स्त्री के ओ तेरे बंश ओ उस के बंश में बैर डालूंगा वुह तेरे सीस को कुचलेगा ओ तू उस की एड़ी को काटेगा इस दयासागर बचन में परमेश्वर ने एक मुक्तिदाता का आसा निरूपित करके आदम ओ हव्वा के टूटे अन्तःकरण को जोड़ा ओ पापात्मा के बल को तोड़ा निदान जब समय आय तुलाना तब स्वयं ईश्वर कृपानिधाना अवतार ले नर रूप धारण कर प्रभु यशु मसीह नाम धर व्यवस्था के बन्धन में प्रगट भये जौन आज्ञा आदम बंश ने पिता के उल्लंघनी स्वभाव के कारण से टाली थी सो प्रभु ने मन बच काया से नित प्रति आठोंजाम पालन करके व्यवस्था को सन्तुष्ट कर उस बचन के प्रतिपालन के निमित्त कि जो आदम ओ उस के सन्तान को आज्ञाकारी की परिछा के समय दिया गया रहा कि

जो तू उस फल को खायगा तो निश्चय मर जायगा आप अपने प्राण को मृत्यु में दिया और मृत्यु को जय करके और सर्वथा ईश्वर के योग्य पवित्रमय प्रायश्चित्त देके तीसरे दिवस जी उठा और जीवन मुक्ति का अधिकारी करने को प्रभु यसुअ समग्र आदम वंशों से नवीन नियम बांध यों आज्ञा करता भया कि जो मेरे केवल प्रायश्चित्त पर मनसा बाचा काया से विश्वास लावे औ मेरी प्रेमाज्ञा को अन्तःकरण से धारण करे औ उस के समान फल लावे तो मैं उसे जीवन मुक्ति दूंगा। यों परमेश्वर ने अपने सनातन प्रिय पुत्र को भी जिसे वुह निपट प्यार करता था न रख छोड़ा और उस के पुत्र को भी कैसी दया थी कि अपने प्रकाशित सिंहासन और दूतों को और अपने प्रिय पिता को छोड़े और अवतार लेके प्राण दे॥

अब तुम्हें जान पड़े कि हम आदम के नाती पोता हैं तो हमारे ही कारण ईसा मसीह प्राण देने को आया हम भ्रष्ट और दुष्ट हैं हम निःसन्देह नरक ही में पड़ते यदि मसीह हमारे बदले मरने को अंगीकार न करता तो हमें उचित है कि पिता पुत्र को प्यार करें इस लिये कि उन्हों ने हम पर कृपा किई॥

आओ दूतों के संग परमेश्वर का धन्यबाद करके कहें कि हे पिता हम तुम को नमस्कार और तुम्हारे कोमल प्रेम और प्रिय पुत्र के देने के हेतु तुम्हारी स्तुति करते हैं॥

हे पुत्र हम तेरे कोमल प्रेम और तेरे इस भवसागर में आने बलि देने और मर जाने के हेतु तेरा धन्यवाद करते हैं॥

तेरहवां पाठ॥

मरियम कन्या के बिषय में॥

परमेश्वर ने आदम और हव्वा से कहा कि मैं कोई समय अपने पुत्र को तुम्हारे हेतु मरने को भेजूंगा। परन्तु आदम और हव्वा ने परमेश्वर को प्यार न किया इस कारण कि वे दुष्ट हो गये थे॥

क्या परमेश्वर उन्हें सुधार न सक्ता था॥

हां वुह उन्हें सुधार सक्ता था इस लिये कि स्वर्ग में एक धर्मात्मा है जो उन के अन्तःकरण को पलट सक्ता था॥

हे छोटे बालको तुम्हें जान पड़े कि हम सब के सब दुष्ट हैं परन्तु परमेश्वर अपने धर्मात्मा से हमें अच्छा कर सक्ता है। यदि परमेश्वर अपने धर्मात्मा को हमारे हृदय में रक्खे तो हम किसी रीति नरक में जाकर शैतान के संग बास नहीं कर सक्ते॥

मैं आशा रखता हूं कि तुम धर्मात्मा के निमित्त परमेश्वर से बिन्ती करोगे। उस्से कहो कि हे परमेश्वर अपना धर्मात्मा मेरे हृदय में डालके मुझे अच्छा बना॥

आदम के बहुत से बालक और नाती पोता हुए और

उन के भी बालक ऊए अन्त को जगत् मनुष्यों से भर गया यहां लों कि वे अगणित हो गये॥

आदम और हव्वा के मरने के बऊत दिन पीछे जब कि जगत् मनुष्यों से अत्यन्त भर गया तब परमेश्वर ने अपने पुत्र से कहा कि अब तू जगत् में जा॥

परंतु पुत्र को छोटा बालक होना अवश्यक था क्योंकि सब कोई पहिले छोटा बालक होता है॥

सो परमेश्वर को यों ही भाया कि अपने पुत्र को एक दीन स्त्री का बालक करे और उस स्त्री का नाम मरियम था उस के कोई पुत्र न थे वुह बऊत सुसील स्त्री थी और परमेश्वर को प्यार करती थी सो परमेश्वर का धर्मात्मा उस के अन्तःकरण में आया और उस को दीन और कोमल किया॥

एक दिन एक दूत उस के पास आया और जब मरियम ने उस दीप्तिमान दूत को देखा तो वुह अत्यन्त डर गई परन्तु दूत ने कहा हे मरियम तू मत डर इस लिये कि परमेश्वर तुझ से प्रसन्न है वुह तेरे पास एक बालक को भेजेगा जो परमेश्वर का पुत्र कहलावेगा तू उस का नाम ईसा रखना वुह आकर मनुष्यों को शैतान से उद्धारेगा॥

मरियम दूत के बचन को सुन के अत्यन्त व्याकुल ऊई और अपने मन में अति चिन्ता करने लगी कि मैं तो ऐसी नहीं कि इस प्रभु बालक ईसा के पाने के योग्य होऊं जब दूत स्वर्ग को फिर लौट गया तो मरियम आनन्द होकर

परमेश्वर की कृपा दृष्टि के हेतु मधुर गीतों से उस का धन्य-बाद करने लगी और मरियम ने कहा कि मेरा प्राण प्रभु की महिमा करता है और मेरा आत्मा मेरे मुक्तिदाता से आनन्दित है॥

मरियम ने अपने बालक को अपना मुक्तिदाता कहा इस लिये कि वुह जानती थी कि वुह उसे नरक से बचावेगा॥

चौदहवां पाठ॥

ईसा का जन्म॥

मरियम का पति जिस का नाम यूसुफ़ था वुह बड़ा धर्म्मी और मरियम पर बहुत दयाल था॥

मरियम के पुत्र उत्पन्न होने से पहिले एक बड़े राजा ने यह आज्ञा प्रचारी कि सब कोई उसे कर देवें सो मरियम और यूसुफ़ ने कुछ रोकड़ लिया और घर द्वार छोड़ के दूर देश को गये जिस्तें राजा को कर देवें अन्त को वे एक नगर में आये जिस का नाम बैतलहम था॥

यह रात्री का समय था और सोने की जगह भी न थी तब तो वे एक सराय में गये और वहां के प्रधान से बिन्ती करके कहा कि हमें कृपा करके टिकने देओ इस लिये कि हम बहुत दूर से चले आते हैं॥

परन्तु सराय के प्रधान ने उन्हें उत्तर दिया कि तुम्हारे लिये सराय में ठौर नहीं है॥

शीलवन्त मरियम अब क्या करे अवश्य था कि वुह बाहर मार्ग में सोवे तब मरियम ने प्रधान से कहा यदि तेरी आज्ञा हो तो हम तवेले में सो रहें॥

सो मरियम और यूसुफ़ तवेले में गये वहां गाय और गदहे थे॥

जब मरियम तवेले में थी तो परमेश्वर ने उस छोटे बालक को जिस की उस ने उस्से प्रतिज्ञा किई थी भेजा वुह तुरन्त जान गई कि यह परमेश्वर का पुत्र है यद्यपि वुह और बालकों की नाईं था॥

उस ने उस बालक को बस्त्र में लपेटा जो सूती बस्त्र कहलाता है परन्तु उस के पास बालक के सोने के लिये पालना न था और उस की मा उसे भूमि पर भी न लेटा सकी इस लिये कि कहीं ऐसा न हो कि पशु उसे दबा डालें सो उस ने उसे चरनी में रक्खा और वुह उस के पास उस की रक्षा करने को बैठ गई॥

मरियम इस प्यारे बालक को अत्यन्त प्यार करती थी॥

उस में और बालकों की नाईं पाप न था परन्तु वुह अति दीन और कोमल था। यद्यपि और बालकों को पालना और कोमल तकिया मिली परन्तु ईसा एक चरनी में पड़ा रहा॥

पन्दरहवां पाठ॥

गड़रियों के विषय में॥

बैतलहम के निकट मैदान थे और उस रात को जिस में ईसा का जन्म ज्ञआ गड़रिये उस मैदान में अपनी भेड़ों के निकट बैठे थे क्यों वे रात्री के समय बैठकर जाग रहे थे। अपनी भेड़ों को ज्ञंडार और सिंह से जो रात को चलते फिरते हैं बचाने के हेतु। जहां हम बसते हैं ज्ञंडार और सिंह नहीं हैं परन्तु बैतलहम के निकट अनेक बनैले पशु थे॥

और देखो कि प्रभु का दूत उन पास आया और एक बड़ा उंजियाला उन के चारों ओर चमका और वे बज्ञत डर गये उस दूत ने तब उन्हें कहा कि मत डरो मैं तुम्हारे पास मंगल समाचार लाया ज्ञं परमेश्वर ने अपने निज पुत्र को स्वर्ग से तुम्हें नरक से उद्धारने के हेतु भेजा है वुह अभी बालक है और चरनी में लेटा ज्ञआ है बैतलहम को जाओ और तुम उसे वहां पाओगे॥

दूत यह सन्देश कहता ही था कि इतने में सैकड़ों दूत की सेना आकाश में प्रगट ज्ञई और परमेश्वर की स्तुति में गीत गाती और कहती थी॥

कि महान् परमेश्वर ने अपने पुत्र को मनुष्यों के बाचाने के

हेतु भेजा है उस की कृपा भलाई के कारण उस का धन्यबाद करो ॥

अन्त को दूत स्वर्ग को फिर लौट गये और गड़रिये अकेले रह गये ॥

क्या वे अपनी भेड़ों के पास फिर रहे ॥

नहीं उन्हों ने कहा कि आओ चलें और परमेश्वर के पुत्र को देखें ॥

वे बैतलहम को धाये और सराय के तवेले में जाय वहां एक बालक को चरनी में लेटा हुआ मरियम और यूसुफ को उस के निकट बैठे हुए देखा तब गड़रियों ने कहा कि यही परमेश्वर का पुत्र है इस लिये कि दूतों ने आज की रात हम को यही पता दिया है ॥

और जब गड़रियों ने बैतलहम के बासियों से परमेश्वर के पुत्र और दूतों का समाचार कहा तो वे अति अचम्भित हुये ॥

सोलहवां पाठ ॥

ज्ञानियों के बिषय में ॥

कोई धनी और ज्ञानी मनुष्य थे जो बैतलहम से बहुत दूर पर रहते थे उन्हें जान पड़ा कि परमेश्वर ने अपने पुत्र को इस जगत में अवतार लेने को भेजा है पर उन को इतना ज्ञान न था कि उसे किस रीति से और कहां पावें सो पर-

मेश्वर ने एक महा सुन्दर तारे को आकाश में प्रगट किया और उन ज्ञानियों से यों कहा कि जिधर यह तारा जाय तुम भी उधर चले जाओ॥

सो ज्ञानियों ने अपने घर द्वार छोड़े और यात्रा को चल निकले पर पहिले उन्हों ने यह विचारा कि आओ हम परमेश्वर के पुत्र के लिये कुछ भेंट ले चलें इस लिये कि वुह राजा है॥

निदान उन्हों ने सोना और लोबान ले लिया और तारे को देखते हुये चले गये यहां लों कि वुह तारा बैतलहम नगर के एक घर पर आयके ठहरा और वे उस तारे को देखके अत्यन्त आनन्द से आनन्दित हुये इस लिये कि वे परमेश्वर के पुत्र को देखने की बड़ी लालसा रखते थे और जब वे घर में आये तो मरियम और उस के बालक ईसा को देखा और दण्डवत करके उसकी पूजा करी और उसे परमेश्वर का पुत्र और राजा कहने लगे॥

और अपनी भेंट निकाल कर उसे चढ़ाया मरियम निर्धन थी पर अब उस के पास कुछ रोकड़ हुआ कि अपने छोटे बालक के लिये कुछ वस्तु मोल ले॥

सत्रहवां पाठ॥

हेरोदेस राजा के विषय में॥

एक महा दुष्ट राजा था जिस का नाम हेरोदेस था

वुह बेतलहम से एक थोड़ी दूर पर रहता था कहीं उस ने सुना कि बेतलहम में एक बालक उत्पन्न हुआ है और कि कोई लोग कहते हैं कि वुह बालक राजा है॥

हेरोदेस न चाहता था कि उस के अधिक कोई दूसरा राजा हो हां वुह यह भी न चाहता था कि परमेश्वर का पुत्र राजा हो सो उस ने यह मन में ठाना कि मैं उस बालक को घात करूंगा जो राजा कहलाता है॥

हेरोदेस इतना जानता था कि वुह बालक बेतलहम में है परंतु इस के अधिक और अनेक बालक भी थे पर वुह ठीक न जानता था कि वुह बालक जो राजा कहलाता है सो कौन सा है॥

परन्तु बहुत लोग उसे जानते थे कि वुह कौन सा है और उसे प्यार भी करते थे और न चाहा कि उसे हेरोदेस को बतलावें तब हेरोदेस के मन में एक बुरी चिन्ता उपजी और उस ने यह बिचारा कि मैं बेतलहम के सब बालकों को घात करूंगा। तो क्या तुम्हारी बिचार में आता है कि परमेश्वर ने अपने पुत्र को घात करने दिया। नहीं। परमेश्वर जानता था कि हेरोदेस क्या करने पर है इस कारण उस ने अपने पवित्र दूतों में से एक को यूसुफ़ के पास जब वुह सो गया था यह सन्देश कहने को भेजा॥

दूत ने आकर यह समाचार कहा कि हे यूसुफ़ एक दुष्ट राजा इस बालक को घात किया चाहता है इस लिये

मरियम और बालक को लेकर दूर भाग जा यूसुफ़ झट उठ खड़ा हुआ और मरियम और बालक को बछेड़े पर चढ़ा करके चल निकला और जब वे चले उस काल अंधियारा था सो उन्हें जाते किसी ने न देखा॥

बिहान होते ही सिपाही हेरोदेस की आज्ञा के समान खड्ग लेकर आये कि सब बालकों को घात करें उन्हों ने एक एक द्वार खाल कर पूछा कि इस घर में कोई बालक तो नहीं है और यदि पाया तो उस को माता की गोद से झपट कर उस का सिर तलवार से भुट्टा सा उड़ा दिया यह कुदशा देखते ही उस की माता बिलख बिलख के रोई॥

यदि तुम गलियों में जाय निकलते तो स्त्रियों के रोदन और बिलाप के अधिक और कुछ न सुनते कि हाय मेरा सुन्दर बालक मर गया मैं उसे फिर कभी न देखूंगी॥

क्या ईसा भी घात किया गया था॥

नहीं वुह बैतलहम से निकलकर दूर चला गया था इस लिये कि परमेश्वर ने उसे दूर देश भेज दिया था इसी कारण से हेरोदेस उसे मार न सका क्योंकि परमेश्वर की इच्छा न थी कि वह इतनी जलदी मरे॥

अन्त को जब हेरोदेस राजा मर गया तब परमेश्वर ने एक दूत यूसुफ़ के पास यह भेद बतलाने को जब वुह सो गया था भेजा दूत ने आकर यह सन्देश कहा कि हे यूसुफ़ अपने देश को फिर लौट जा क्योंकि हेरोदेस मर गया है

यह समाचार सुनते ही यूसुफ मरियम और प्रिय बालक को बछेड़े पर चढ़ा कर अपने देश में फिर लौट आया ॥

यूसुफ बढ़ई था और ईसा उस के और मरियम के संग रहता और उन की आज्ञाकारी करता था वुह बुद्धिमान बालक था और परमेश्वर के बिषय ध्यान करने में बड़ी प्रीति रखता था और परमेश्वर उस का पिता उसे बज़त प्यार करता था और हर कोई उस्से स्नेह रखते थे इस लिय कि वुह बज़त कोमल और दयालु था और ज्यों ज्यों वुह सयाना ज़ुआ त्यों त्यों लोग उस्से अधिक प्रेम करते थे ॥

अठारहवां पाठ ॥

परीक्षा के बिषय में ॥

जब ईसा सयाना भया तो उस ने जाना कि उसे उचित है कि एक स्थान से दूसरे को जाये और मनुष्यों को परमेश्वर की बिधि सिखावे ॥

परन्तु पहिले वुह एक स्थान में जो बन था आप अकेले गया वहां उस के सोने के हेतु कोई घर न था और न बातें करने को कोई मित्र और न भोजन खाने को ॥

रात्री को शीत और दिन को गर्म्मी होती थी ॥

वहां कोई मनुष्य न थे परन्तु सिंह ज़ंडार और भालू रहते थे रात को वे गरजते और गुर्राते थे पर ईसा ने अपने पिता परमेश्वर पर भरोसा रक्खा ॥

चालीस दिन और चालीस रात उस ने कुछ न खाया
ओर परमेश्वर ने उसे जीता रक्खा जिस समय वुह अकेला
था उस ने मन में अपने प्रिय पिता से बार्त्ता किई॥

अन्त को कोई आया, और उस्से बोला॥

सो वुह कौन था॥

वुह न तो मनुष्य न पवित्र दूत न परमेश्वर परन्तु शैतान
था मैं उस का बखान नहीं कर सक्ता कि वुह कैसा था॥

वह ईसा से दुष्टाई करवाने के लिये जिसतें वुह अपने
पिता परमेश्वर की न माने उस की परीक्षा करने को आया
था। वुह जानता था कि ईसा को भूख लगी थी। सो उस
ने उस्से कहा कि इन पत्थरों को रोटी बना परन्तु ईसा ने
उस की न मानी इस लिये कि परमेश्वर ने आप ही उसे
खिलाने की प्रतिज्ञा किई थी॥

इस के पीछे शैतान उसे एक कोठे की चोटी पर ले गया
जो गिरजे से भी अधिक ऊंचा था देखो ऊंचे स्थान की
चोटी पर खड़े होने से कैसा भय लगता है यदि कोई चोटी
से नीचे को झांके तो कांप उठता है॥

फिर शैतान ने ईसा से कहा कि तू अपने को इस स्थान
से नीचे गिरा दे क्योंकि तेरा पिता अपने दूत भेजकर तुझे
चोट लगने से बचा लेगा इस कारण कि तू जानता है कि
उस ने तेरी रखवाली करने के निमित्त बचन दिया है॥

यदि ईसा आप को वहां से गिरा देता तो क्या भला

करता। नहीं। ईसा जानता था कि यदि वुह आप को गिरा दे तो उस का पिता उस्से प्रसन्न न होगा और वुह सदा ऐसे कार्य करता था जो उस के पिता को प्रसन्न थे॥

फिर शैतान उसे एक महा ऊंचे पर्बत की चोटी पर ले गया और जगत की समस्त सुन्दर बस्तुन को जैसे फुलवारी कोठे जहाज रथ बहल और सुन्दर सुन्दर बस्त्र और ज्योनार दिखाये उस ने कहा कि इन अच्छी बस्तुन की ओर देख मैं उन सब बस्तुन को तुझे देऊंगा यहां लों कि सारा जगत तेरा हो जावे यदि तू मुझे दण्डवत कर और परमेश्वर बखान॥

परन्तु ईसा ने उत्तर देके कहा कि मैं केवल अपने पिता से प्रार्थना करूंगा पर तुझ से नहीं॥

सो ईसा अपने पिता को जगत की सारी बस्तुन से अधिक प्यार करता था॥

आदम और हव्वा ने शैतान की आज्ञाकारी किई और परमेश्वर की आज्ञा को भंग किया परंतु ईसा ने जैसा उस के पिता ने कहा था वैसा ही किया सो देखो आदम आज्ञा लंघक और ईसा आज्ञा पालक था॥

तब शैतान ने उसे छोड़ा और देखो कि दूत आये और उस की सेवा किई॥

शैतान इधर उधर चलता फिरता है और बालकों को दुष्ट करने का उपाय किया करता है सिंह तो केवल तुम्हारी

देह भक्ष सक्ता है परंतु शैतान घात में लगा रहता है कि तुम्हारा आत्मा और देह को नरक में ले जाये शैतान तुम से बैर रखता है वुह तुम्हारे बैरी है परंतु परमेश्वर शैतान से अधिक बलवन्त है तुम परमेश्वर से बिन्ती करो कि मुझे शैतान की आज्ञाकारी से बचा तो वुह तुम्हें बचाय रक्खेगा॥

उन्नीसवां पाठ॥

बारह शिष्यों के बिषय में॥

जब ईसा सयाना भया तो उस ने लोगों के आगे अपने पिता के बिषय में सिखाना और उपदेश करना आरम्भ किया॥

वुह कहां उपदेश करता था॥

कोई कोई समय वुह मनुष्यों को एक स्थान में जो मन्दिर की नाईं था उपदेश करता था और कोई समय खेत अथवा मैदान में कोई समय पहाड़ की चोटी पर और कोई समय वुह नाव पर बैठता था और लोग उस की सन्ने को तट पर खड़े होते थे सो ईसा एक ही स्थान में नित्य नहीं रहता था परन्तु हर एक नगर ग्राम और डगर में फिरा करता था॥

क्या ईसा अकेले ही इधर उधर फिरा करता था। नहीं। उस के संग उस के बारह मित्र नित्य रहते थे जिन्हें उस ने अपने बारह शिष्य कहे॥

बारह कितने होते हैं आओ इस कोठरी के बारह बालकों को गिनें तो यह बारह भये बस ईसा के ठीक इतने ही शिष्य थे॥

एक का नाम पतरस एक का यूहन्ना एक का यअ़कूब और एक का नाम सोमा था बस और सब के नाम न बताऊंगा इस लिये कि तुम भूल जाओगे॥

पतरस मछुआ था उस के पास एक छोटी सी नाव थी और वुह निश दिन मछली पकड़ा करता था यअ़कूब और यूहन्ना के पास भी एक छोटी नाव थी और वे भी मछली पकड़ा करते थे॥

एक दिन ईसा उन की नाव के निकट पहुंचा तो उस ने पतरस और उस के भाई अन्दरियास को मछली पकड़ने के लिये समुद्र में जाल डालते देखा और ईसा ने उन्हें कहा कि मेरे साथ आओ तब पतरस और अन्दरियास ने तुरन्त अपने जालों और नावों को छोड़ा और उस के साथ हो लिये॥

और ईसा ने थोड़ी दूर आगे बढ़के यअ़कूब और यूहन्ना को अपनी नावों पर बैठे हुये जाल सुधारते देखा तब ईसा ने उन से कहा कि मेरे साथ आओ और वे अपने जालों को छोड़ कर उस के संग हो लिये॥

ईसा ने अपने साथ रहने के लिये जिन्हें चाहा उन्हें चुन लिया॥

क्या मैं तुम्हें बतलाऊं कि ईसा ने अपने साथ नित्य रहने
के लिये बारह मित्रों को क्यों चुना तुम को कैसा बूझ
पड़ता है कि इस का कारण क्या था॥

ईसा की इच्छा यह थी कि उन्हें परमेश्वर अपने पिता के
बिषय सिखावे जिस्तें वे उस के ज्ञान का भेद औरों को सिख-
लावें वे उस के साथ रहने और उस की बातें सुन्ने से बहुत
प्रसन्न थे क्या तुम भी उस के साथ नित्य रहने को प्रसन्न हो॥

जब ईसा अपने शिष्यों के संग अकेला होता था तो उन्हें
गुप्त भेद परमेश्वर और स्वर्ग के बिषय बतलाया करता था
और वे उस्से अति प्रीति रखते थे हां वे उसे गुरु और प्रभु
कहते थे परंतु वुह उन्हें और अधिक प्यार करता था इस
लिये कि उस ने उन्हें अपना मित्र कहा॥

ईसा उन्हें अपनी बस्तुन में से बांट देता था परंतु ईसा के
रहने के लिये घर न था और उस के पास थोड़ा ही रोकड़
था कोई कोई समय वे बहुत दूर चलने के कारण थक
जाते थे और कोई कोई समय वे अति भूखे और प्यासे होते
थे परंतु दयावन्त पुरुष उन्हें अनेकन बेर अपने घर बुला-
कर उन का आदर भाव करते और उन्हें भोजन देते थे॥

और कोई कोई पुरुष उस पर हंसते और उसे बिराते
थे॥

क्या शिष्य भले थे नहीं वे भी हमारे तुम्हारे समान बुरे
थे परंतु ईसा ने अपने आत्मा को उन में डाल कर उन्हें

भला बनाया। पर शिष्य लोग ईसा के समान पवित्र मय न थे अनेकन बेर वे आपुस में एक दूसरे से लड़ते झगड़ते थे और कोई कोई बेर वे दीनों पर दयाल न होते थे॥

बीसवां पाठ॥

पहिले आश्चर्य कर्म के विषय में॥

मैं ने तुम्हें पहिले बतलाया कि बज्जधा लोग ईसा को अपने घर बुलाते थे। पर अब मैं तुम्हें एक पुरुष के बिषय जिस ने ईसा को बलाया बतलाऊंगा उस ने एक जेवनार दिया और ईसा उस नेवते में गया हां ईसा की माता मरियम और उस के शिष्य भी गये उस जेवनार में इन से अधिक और बज्जत लोग भी थे॥

वहां लोगों के पीने के लिये कुछ थोड़ी मदिरा भी थी और वुह निदान ऐसी थोड़ी थी कि जल्दी खरच हो गई॥

ईसा जान गया कि मदिरा चुक गई। तो क्या वुह लोगों को और मदिरा नहीं दे सक्ता था। हां वुह दे सक्ता था इस कारण कि उसी ने जगत और सारी बस्तुन को बनाया॥

वहां एक कोठरी में पत्थर के छः मटुके धरे थे ईसा ने सेवकों से कहा कि मटुकों को पानी से भरो और उन्हों ने उन्हें मुहे मुंह भरा। तब ईसा ने कहा कि उस में से एक कटोरा भरके भण्डारी को पीने को दो सेवकों ने ले जाके उसे दिया परन्तु ईसा ने पानी को मद बना डाला था॥

जब उस अधिपति ने उसे चीखा तो कहा कि अहा हा
या अच्छी मदिरा है यह कहां से आई॥

सेवकों ने उसे सारा समाचार जैसा कि ईसा ने
न्हें मटुके पानी से भरने को कहा था कह सुनाया
ब तो सभा के सब लोगों ने जाना कि ईसा ने पानी से
द बनाया है॥

यह पहिला आश्चर्य कर्म था जो ईसा ने किया ऐसे कर्म
ो आश्चर्य कहते हैं॥

किस कारण ईसा आश्चर्य करता था॥

इस कारण कि जिस में लोगों पर प्रगट हो कि वुह
रमेश्वर का पुत्र है और शिष्यों को भी निश्चय करके जान
ड़ा कि वुह परमेश्वर का पुत्र है॥

एक्कीसवां पाठ॥

ईसा के और आश्चर्य कर्मों के विषय में॥

पानी से मदिरा बनाने के पीछे ईसा ने अनेक और बड़े
ड़े आश्चर्य कर्म किये उस ने अन्धन को दृष्टि दान दिये
और रोगिन को अच्छा किया और गूंगन को बचन दिया
और पंगुन को पांव से चलाया॥

जब वुह किसी स्थान में आया तब रोगियों ने उसे
ारो ओर से घेर लिया॥

तो क्या इस कारण कि समस्त रोगी ईसा को क्लेश देते

थे उस ने उन्हें बिना शुद्ध किये लौटा दिया। नहीं। उस ने सब को चंगा किया॥

एक समय उस ने एक अन्धे को इस भांति से दृष्टि दान दिया केवल इतनाही कहा कि देख और वुह उसी घड़ी देखने लगा॥

ईसा ने एक गूंगे और बहिरे को इस भांति से चंगा किया कि उस ने अपनी अंगुली उस के कानों में डाली और उस की जीभ को छूआ और स्वर्ग की ओर देख के अपने पिता से कहा कि खुल जा और तुरन्त उस की जीभ का बन्धन ढीला हो गया और वुह ठीक बोलने लगा॥

एक समय ईसा ने एक दुखिया रोगी को खटोले पर पड़ा देख कर कहा कि तू चंगा होने चाहता है उस दुर्बल दुखिया ने उत्तर देके कहा कि हां मेरी बड़ी लालसा है कि मैं चंगा हो जाऊं तब ईसा ने उस्से कहा कि उठ अपना खटोला उठा के चला जा उस मनुष्य ने उठने का उपाय किया और उठ बैठा इस कारण कि ईसा ने उसे बलवन्त कर दिया था॥

एक समय ईसा एक मंदिर में जो गिरजा घर की नाईं था मंगल समाचार सुना रहा था और वहां उस ने एक स्त्री को देखा जिस की पीठ कुबरी हो गई थी और वुह किसी रीति से सीधी न हो सक्ती थी उसे देख ईसा ने कहा कि हे स्त्री तू अपने दुर्बलता से छूटी यह कह उस ने उस

र अपना हाथ धरा और वुह तुरन्त सीधी हो गई और उस ने परमेश्वर की स्तुति किई॥

कभी कभी ईसा ने मृतकन को जीव दान देकर फिरजिला॰ या जो रोगियों के चंगा करने से अधिक आश्चर्य्य कर्म था॥

एक समय वुह मार्ग में चला जाता था और बड़ी मंडली उस के साथ थी इस कारण कि लोग उस की बार्त्ता सुन्ने और उन आश्चर्य्य कर्म्मों को जो वुह करता था देखने की बड़ी लालसा रखते थे। सो ऐसा भया कि उन्हें कई एक लोग मिले जो एक मृतक को गाड़ने के लिये ले जाते थे। और एक बुढ़िया स्त्री उन के पीछे बिलख बिलख कर रोती जाती थी वुह उस की माता थी और यह उस का एकलौता पुत्र था॥

ईसा ने उसे रोते देख कर अति दया किई और उसे धीरज देकर कहा कि मत रो और इतना कहके उस मुरदे की रथी को छूआ इस लिये कि वुह ढंपी न थी और उस में वुह मुरदा लेटाया हुआ था॥

सो ईसा ने उस मृतक से कहा कि हे जवान तू उठ वुह तुरन्त उठ बैठा और बोलने लगा और ईसा ने उसे उस की माता को सौंप दिया॥

लोग यह आश्चर्य्य कर्म देख कर अति अचम्भित हुये और कहने लगे कि निःसन्देह यह परमेश्वर का पुत्र है इस लिये कि वुह मृतक को जिला सक्ता है॥

बाईसवां पाठ॥

पापी और सतजन के बिषय में॥

ईसा मसीह इस जगत में क्यों आया। हमें नरक से बचाने को॥

परन्तु किस कारण परमेश्वर ने कहा कि मनुष्य घोर नरक में जायेंगे। इस कारण कि सब पापी थे॥

ईसा मसीह मनुष्यों के पाप क्षमा करके उन्हें भला कर सक्ता है। परन्तु वह उन के पाप क्षमा न करेगा जो पछताते नहीं सो अब मैं तुम्हें एक अभिमानी पुरुष के बिषय बतलाऊंगा जो न पछताया और एक दीन स्त्री के बिषय जो बहुत पछताई॥

एक गर्भी धनवान ने चाहा कि ईसा उस के संग भोजन करे और उसे अपने घर न इस लिये कि वुह उस्से प्रेम रखता था बुलाया परन्तु इस लिये कि उस की वार्त्ता सुने और उसे हंसी में उड़ावे किन्तु ईसा ने कहा कि मैं तेरे घर चलूंगा॥

उस घमण्डी पुरुष ने ईसा पर कुछ दया न किई और न उस के चरण धोने को उसे जल दिया और न उन पर सुगन्ध तेल मला और न उन्हें चूमा॥

जब एक स्त्री ने जो पापिन थी जाना कि ईसा धनवान के घर गया है उस के पीछे आके खड़ी भई और अपने को

ापिन जानके रोने लगी वुह जानती थी कि ईसा मेरे पापें
ा क्षमा कर सक्ता है और वुह ईसा को प्यार करती थी॥

वुह एक डिबिया में सुगन्ध तेल लाई थी जब वुह झुक
ाई तब उस के आंसू ईसा के चरणों पर गिरे और उन
आंसुओं से उस ने ईसा के चरण धोये और अपने सिर के
बालों से पोंछ कर उन्हें चूमा और सुगन्ध तेल लगाया॥

तब उस धनवान ने क्रोध से उस स्त्री की ओर देखा वुह
जानता था कि वुह पापिन है और वुह ईसा को उस पर
अति दयाल देख कर अधिक क्रोधित हुआ॥

परन्तु ईसा ने उस धनवान से कहा मैं जानता हूं कि यह
स्त्री पापिन है परन्तु अब वुह पछताई और मैं ने उस को
क्षमा किई वुह तो मुझ्को अति प्यार करती है हां वुह तुझ
से अधिक प्यार करती है तू ने मुझ पर दया न की पर उस
ने किई तू ने मेरे चरणों के लिये जल न दिया परन्तु उस ने
मेरे चरणों को आंसुओं से धोया तू ने मेरे चरणों को
चूमा न लिया परन्तु जब से मैं यहां आया यह मेरे चरणों
को चूम रही है तू ने मेरे सिर में तेल न लगाया परन्तु इस
स्त्री ने मेरे चरणों पर सुगन्ध तेल लगाया॥

और ईसा ने दयाल होकर उस स्त्री से कहा कि देख
तेरे पाप जो बहुत हैं क्षमा कीये गये॥

सो ईसा ने इस दीन स्त्री को शान्ति दी परन्तु वुह अभि-
मानी पुरुष और उस के मित्र और अधिक क्रोधित भये॥

ईसा मसीह तुम्हारे भी पाप क्षमा करेगा यदि तुम पछताओ और उस्से बिन्ती करो और यदि तुम गर्भ से कहो कि मैं पापी नहीं हूं तो वुह तुम्हें क्षमा न करेगा इस कारण कि वुह घमण्डी को देख नहीं सक्ता है॥

तेईसवां पाठ॥

समुद्र की आंधी के विषय में॥

ईसा मसीह बहुधा अपने शिष्यों के साथ नाव पर जाता था पतरस के पास एक नाव थी और एक यूहन्ना के पास वे प्रसन्नता से ईसा को अपनी नावें पर चढ़ने देते थे॥

एक दिन ऐसा भया कि ईसा अपने शिष्यों के संग नाव पर चढ़ा और एक आंधी उठी और नाव पानी से भरने लगी और शिष्य आपत्ति में पड़े॥

ईसा तकिये पर सिर धरके सो गया था और आंधी और पानी के शब्द उसे जगा न सके॥

उस के शिष्य उस पास आये और उसे जगा के कहा कि हे गुरु तू हमारी चिन्ता नहीं करता कि हम नष्ट होते हैं॥

तब उस ने उठ कर आंधी और जल की तरंग को डांट कर कहा कि थम जाओ वहीं आंधी थम गई और जल की तरंग मिट गई॥

और ईसा ने अपने शिष्यों से कहा कि तुम किस लिये डर गये क्यों तुम ने विश्वास न किया कि मैं तुम्हें बचा सक्ता था॥

ईसा जानता था कि वे आंधी से फेंके फिरते थे यदि वुह सो भी गया था तथापि वुह उन्हें बचा सक्ता था॥

तब शिष्यों ने विस्मित होके आपुस में कहा कि निःसन्देह यह परमेश्वर का पुत्र है इस कारण कि वायु और जल इस की आज्ञा मानते हैं॥

चाबीसवां पाठ॥

याइर के बेटी के विषय में॥

एक धनवान ईसा के पास आया और उस के चरणों पर गिरके बिन्ती करने लगा कि मेरी एकलौती पुत्री महा पिड़ित है सो मैं तेरी बिन्ती करता हूं कि मेरे घर चलके उसे सुस्थ कर और ईसा उस धनवान के घर गया॥

जब वे घर के निकट आ पहुंचे तो उस धनवान के यहां से एक ने आ कर उसे कहा कि तेरी पुत्री अभी मर गई अब कोई उसे आरोग्य नहीं कर सक्ता है॥

परन्तु ईसा ने उत्तर देके कहा कि मत डरो मैं उसे आरोग्य कर सक्ता हूं॥

फिर ईसा ने उस कन्या के माता पिता से कहा कि मेरे संग भीतर चलो और पतरस यअ़कूब और यूहन्ना को छोड़ किसी को जाने न दिया॥

सो वे उस कोठरी के भीतर जहां वुह पुत्री बिछौने पर पड़ी थी गये तो क्या देखा कि एक बड़ी भीड़ बिलाप के

बाजे बजाती गाती और रोती पीटती थी इस कारण कि वुह पुत्री मर गई थी ईसा ने उन से कहा कि मत रोओ वुह मर नहीं गई परन्तु नींद में है ॥

ईसा ने इस कारण कहा कि वुह नींद में है कि वुह उसे बेग जिलाया चाहता था ' तब वे यह जान के कि वुह मर गई है उस पर हंसे और उन्हें बिश्वास न था कि वुह उसे फिर जिलावेगा ॥

तब ईसा ने उन सभों को बाहर किया और द्वार बन्द कर लिया और पतरस यअ्‌कूब और यूहन्ना और उस कन्या के माता पिता को उस कोठरी में रहने दिया और उस ने उस पुत्री का हाथ पकड़के कहा कि उठ वुह तुरन्त उठ बैठी और बिछौने से उतरके उस कोठरी में फिरने लगी तब ईसा ने आज्ञा दिई कि उसे खाने को दो ॥

यह दशा देख उस के माता पिता आनन्दित और निहाल भये और समस्त जन अति बिस्मित हुए ॥

पचीसवां पाठ ॥

रोटी और मछलियों के बिषय में ॥

एक समय ईसा अपने शिष्यों के संग एक शुन्य स्थान में अलग गया और एक बड़ी मंडली उस के पीछे पीछे गई और ईसा ने उस भीड़ को हित उपदेश दिया और अपने पिता के बिषय उन्हें समझाया और यह भी बताया

कि वुह किस भांति मनुष्यों को शैतान अर्थात् दुष्टआत्मा से उद्धारने के लिये स्वर्ग से उतरके इस जगत में आया सो समस्त मंडली प्रातःकाल से सांझ लों उस का उपदेश सुनती रही॥

जब अंधियारा होने लगा उस के शिष्यों ने उस के समीप आके कहा कि दिन चला गया लोगों को बिदा कर कि अपने अपने घर जायें॥

परन्तु ईसा आप जानता था कि सब लोगों ने आज दिन भर कुछ नहीं खाया सो उस की इच्छा न थी कि उन्हें थका और भूखा घर भेजे तब ईसा ने अपने शिष्यों से कहा कि तुम उन्हें भोजन दो॥

शिष्यों ने उत्तर देके कहा कि हम उन्हें खाने को नहीं दे सक्ते इस कारण कि हमारे पास यहां केवल पांच रोटी और दो छोटी मछलियां हैं और ऐसी बड़ी मंडली में वे क्या हैं॥

परन्तु ईसा ने आज्ञा किई कि लोगों को घास पर बैठाओ और रोटी और मछली मेरे पास लाओ सो शिष्यों ने सब लोगों को घास पर बैठाया॥

इस भीड़ में स्त्री और बालक को छोड़ाय पांच सहस्र मनुष्य थे॥

देखो छोटे बालक कैसे अकुला उठे होंगे इस लिये कि यह समय उन के बयारी खाने का और सोने का था सो

तुरंत जान पड़ेगा कि ईसा ने उस मंडली को किस भांति भोजन दिया ॥

सब लोग घास पर बैठ गये और ईसा ने पांच रोटियों और दो मछलियों को लेकर अपने पिता की ओर दृष्टि करके आशीर्बाद दिया और रोटियों को तोड़के एक टुकड़ा पतरस को दिया और कहा कि इन लोगों को जो यहां बैठे हैं खिलाओ और दूसरा टुकड़ा यूहन्ना को दिया और कहा कि उन लोगों को खिलाओ इसी रीति उस ने सब शिष्यों को दिया और उन्हों ने मंडली को ॥

देखो एक टुकड़ा रोटी इस कोठरी के बालकों के लिये प्रचुर न होती परन्तु ईसा ने समस्त मंडली को उन्हीं रोटियों से तृप्त किया कोई टुकड़ा जिसे मनुष्य खाकर तृप्त ज़ए घटा नहीं परन्तु अधिक ज़आ सब तृप्त हो गये और बज़त चूरचार भूमि पर गिराया तब ईसा ने अपने शिष्यों से कहा कि टोकरियों में चूरचार उठाओ सो उन्हों ने बारह टोकरियां भरीं उठाईं इस के पीछे ईसा ने लोगों को बिदा किया ॥

देखो ईसा ने कैसा आश्चर्य कर्म्म किया और हे मेरे छोटे बालको वुह अब भी तुम्हें और समस्त मनुष्यों को भोजन देता है ॥

वुह कैसे तुम्हें भोजन देता है ॥

वुह तुम को रोटी देता है ॥

रोटी किस्से बनती है। आटा से॥

आटा काहे से बनता है। अनाज से॥

अनाज कहां से आया। परमेश्वर ने बनाया॥

परमेश्वर ने उसे किस्से बनाया। अपदार्थ से। परमेश्वर समस्त वस्तुन को अपदार्थ से उत्पन्न करता है सो ईसा मसीह परमेश्वर है। वही अनाज को उगाता और तुम्हें भोजन देता है यदि वुह अन्न को खेतों में न उगावे तो सब मर जायें परन्तु वुह हमें एक पल नहीं भूलता हां वुह छोटी चिड़ियों की भी सुध लेता है। वे ऐसी अज्ञान हैं कि न जोततीं न बोतीं और न काटतीं न खलियान में ढेर करतीं हैं तथापि परमेश्वर उन से उपवास नहीं कराता वे परमेश्वर से फिरियाद करतीं और वुह सुनता है और उन्हें भोजन पहुंचाता है। सो देखो वुह चिड़ियों से हमें और अधिक प्यार करता है इस लिये कि हम में एक अविनाशी आत्मा है यदि हम उस्से प्रार्थना करें तो वुह हमारी निःसन्देह सुनेगा॥

यद्यपि तुम्हारी माता के पास रोटी न हो और न उसे मोल लेने को दाम तथापि परमेश्वर तुम्हारी माता की बिन्ती सुनेगा और उसे भूखा न रक्खेगा सो क्या तुम भी यह बिन्ती न करोगे कि हे परमेश्वर हमारी प्रतिदिन की रोटी हमें दे॥

सो हमें अत्यन्त उचित है कि कलेवा भोजन अथवा

बयारी के खाने से आग परमेश्वर से यह बिन्ती करें कि हे प्रभु हम इस सुखादित भोजन के लिये तेरा धन्यवाद करते हैं॥

छब्बीसवां पाठ॥

ईसा की दया के विषय में॥

तुम सुन चुके हो कि शिष्य कभी कभी दया हीन थे परन्तु ईसा सदा दयाल था॥

एक समय एक स्त्री ईसा के पास आके चिल्लाई और उसे कहा कि हे प्रभु मुझ पर दया कर कि मेरी पुत्री अति दुःखी है। ईसा ने उसे कुछ उत्तर न दिया तब शिष्यों ने चाहा कि उसे हका दें इस लिये कि वे दयालु न थे परन्तु वुह अधिक चिल्लाई तब उन्हों ने ईसा से आ कर बिन्ती किई कि उसे बिदा कर॥

तब उस स्त्री ने ईसा के चरणों पर गिरके कहा कि हे प्रभु मेरी सहायता कर। ईसा ने उस स्त्री पर दया किई और कहा कि तेरी इच्छा के समान तेरे लिये हो॥

वुह सुनकर बहुत आनन्दित हुई और उस की पुत्री उसी घड़ी चंगी हो गई॥

एक समय शिष्यों ने बालकों को घुड़क दिया था सो इस भांति कि जब स्त्रियां अपने बालकों को ईसा के पास लाईं कि वुह उन्हें छूवे और उस के शिष्य भी वहीं थे। उन्हों ने इन स्त्रियों को उस के निकट न जाने दिया॥

परन्तु घुड़ककर कहा कि चली जाओ बालकों को हमें क्लेश देने के लिये यहां मत लाओ। परन्तु ईसा सुनकर उन से अति अप्रसन्न हुआ॥

ईसा ने उन बालकों को न जाने दिया और अपने शिष्यों से कहा कि उन्हें मेरे पास आने दो रोको मत॥

तब उस ने बालकों को गोद में लिया और अपने पिता से बिन्ती किई और उन पर हाथ रक्खे और उन्हें आशीर्बाद दिया॥

हे भाग्यवान और सुखी बालको जिन्हें ईसा ने गोद में लिया॥

ईसा कोमल और दीन बालकों को प्यार करता है वे ईसा की भेड़ें हैं और वुह उन का गड़ेरिया है मरने के पीछे वुह उन्हें स्वर्ग में ले जायगा॥

सत्ताईसवां पाठ॥

प्रभु की प्रार्थना॥

जब ईसा इस जगत में रहा तब अपने पिता के विषय बहुत प्रेम से ध्यान करता था अपने पिता से प्रार्थना करने के लियं वुह अकेले ही प्रसन्न करता था वुह कभी कभी बिलाप करता और आंसू बहा बहाके प्रार्थना और बिन्ती करता था। एक समय उस ने एक ऊंचे पर्बत की चोटी पर सारी रात अकेले ही प्रार्थना में काटी॥

जब वुह प्रार्थना करता था तब कभी कभी उस के शिष्य भी निकट खड़े होके सुनते थे॥

एक समय जब वुह अपने शिष्यों के संग प्रार्थना करके उठा इतने में उन्हों ने कहा कि हमें प्रार्थना करना सिखा। तब ईसा ने उन्हें एक छोटी सी प्रार्थना सिखाई सो यह है। हे हमारे पिता जो स्वर्ग में है तेरा नाम पवित्र किया जाय तेरा राज्य आवे तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में है वैसी पृथिवी पर भी होवे हमारी प्रतिदिन की रोटी आज हम को दे और हमारे ऋणों को क्षमा कर जैसा कि हम भी अपने ऋणियों को क्षमा करते हैं और हमें परीक्षा में न डाल परन्तु दुष्ट से हमें छुड़ा क्योंकि राज्य और पराक्रम और माहात्म्य सदा तेरे ही हैं। आमीन॥

हे छोटे बालको मैं जानता हूं कि तुम इस प्रार्थना को प्रातःकाल और रात को कहते हो इस लिये कि तुम्हारी माता ने तुम्हें सिखाया है परन्तु यह भी जानते हो कि किस ने इसे पहिले कहा। प्रभु ईसा ने। इसी कारण यह प्रभु की प्रार्थना कहाती है यह बहुत सुन्दर प्रार्थना है इस लिये कि ईसा ने उसे कहा परन्तु बालकों के समझने के लिये बहुत कठिन है॥

इस का क्या अर्थ है कि तेरा नाम पवित्र होवे। इस का अर्थ यह है कि ईश्वर के नाम की प्रतिष्ठा होवे॥

क्या तुम चाहते हो कि परमेश्वर की प्रतिष्ठा होवे॥

ऋण क्या है अपराध अथवा पाप॥

परमेश्वर से बिन्ती करो कि वुह तुम्हारे पापों अथवा ऋणों को क्षमा करे॥

मैं आशा रखता हूं कि तुम और भी छोटी छोटी प्रार्थना जिन्हें तुम कुछ कुछ समझते हो कहते होगे॥

क्या तुम ईश्वर के धर्म्मात्मा का सहाय नहीं चाहते। परमेश्वर उसे तुम्हारे हृदय में भेज सक्ता है यदि तुम उस के लिये परमेश्वर से बिन्ती करो॥

परमेश्वर ने तुम्हारे तन के लिये तुम्हें भोजन और वस्त्र दिया है परन्तु वुह इन से भी अधिक अच्छी अच्छी वस्तु तुम्हें देगा॥

कौन सी अच्छी वस्तु परमेश्वर तुम्हें दे सक्ता है। धर्म्मात्मा जो तुम्हारे आत्मा को पवित्र कर सक्ता है सो परमेश्वर से बिन्ती करो कि हे दयाल परमेश्वर मुझ पापी को अपना धर्म्मात्मा दे॥

तुम को अवश्य है कि कभी कभी परमेश्वर से गुप्त में भी प्रार्थना करो देखो ईसा अकेले ही प्रार्थना करता था और बहुत से बालक थे जिन्हों ने परमेश्वर से प्रार्थना किई और अब वे स्वर्ग में समस्त भले हैं और अनेक बालक इस जगत में हैं जो उस्से प्रार्थना करते हैं यद्यपि वे अभी सम्पूर्ण भले नहीं हैं तथापि परमेश्वर उन्हें प्रतिदिन अच्छा बनाता है और अन्त को वे स्वर्गधाम में सुख पाय सम्पूर्ण धर्म्मी हो जायेंगे॥

अट्ठाईसवां पाठ॥

ईसा का अपनी मृत्यु का आगम कहना॥

जो कुछ बीतनेहारा था उसे ईसा आगे से जानता था और उसे यह भी बूझ थी कि वह बेग मरेगा॥

बहुधा वह अपने गुप्त भेद अपने शिष्यों को कहा करता था सो एक दिन उस ने उन्हें एकान्त में लेजाके कहा कि मैं थोड़े दिन और तुम्हारे पास हूं इस लिये कि दुष्ट मुझे पकड़के रस्सी से बांधेंगे और मुझे मारेंगे और मुझ पर हंसेंगे और क्रूस पर मेरे हाथ पांव में कीलें गाड़ेंगे परन्तु स्मरण रक्खा कि मैं फिर जी उठूंगा॥

शिष्य ईसा की मृत्यु सुनकर जो उस ने उन से कहा बहुत उदास हुए इस लिये कि वे उसे अति प्यार करते थे वे सब बहुत उदास थे तब पतरस ने कहा कि यह तुझ पर कभी न होगा तू न मरेगा परन्तु ईसा ने कहा कि मुझे आवश्यक है कि मनुष्यों को उद्वारूं और अपने पिता को प्रसन्न करने के हेतु मरूं॥

पिता की यही इच्छा थी कि ईसा अपने प्राण त्यागे और वुह भी अपने पिता की आज्ञा लङ्घन करने नहीं चाहता था॥

बहुधा मनुष्य जो ईसा को घात किया चाहते थे सो एक बड़े नगर यरूसलम में रहते थे॥

ईसा भी अनेकन बेर यरूसलम में जा जाकर उपदेश करता था॥

परन्तु लोग उस्से क्यों बैर करते थे। इस कारण कि वुह उन की दुष्टाई उन्हें सुझाता था॥

वुह उन से कहता था कि तुम परमेश्वर को प्यार नहीं करते जो मेरा पिता है तुम मिथ्या अभिमानी और गर्भी हो तुम मुझे घात किया चाहते हो और तुम बहुत झूठ बोलते हो और कंगालों पर दया नहीं करते भले देखाई देते हो परन्तु इधर प्रार्थना करते और मन उधर और कहीं रहता है तुम्हारे हृदय अधर्म्म और पापों से भरे हैं सो तुम शैतान अर्थात् दुष्टआत्मा के सन्तान हो॥

ईसा उन्हें उन की दुष्टाई से फेरने चाहता था इस कारण कि वे दुष्ट लोग उस के पिता से बैर रखते और अपने कुमार्ग से नहीं फिरते थे वुह बहुत शोक करता था॥

वे अधर्म्मी और दुष्ट लोग ईसा से क्रोध करते और झिड़की से कह उठते थे कि परमेश्वर तेरा पिता नहीं है परन्तु ईसा ने उन्हें यह उत्तर दिया कि हां वुह मेरा पिता है वुह स्वर्ग में जहां से मैं आया हूं बास करता है और कोई दिन मैं फिर उसी के पास चला जाऊंगा॥

अन्त को उन लोगो ने चाहा कि ईसा को पत्थरवाह करें परन्तु उस के मरने का समय नहीं पहुंचा था इस कारण वुह उन के मध्य से गुप्त हो गया और उन्हों ने उसे न देखा॥

ओर ईसा अपने शिष्यों सहित यरूसलम नगर से निकल दूर देश में जा कर रहा जब लों उस का यरूसलम में फिर आने का समय न पहुंचा॥

उन्तीसवां पाठ॥

लाजर के विषय में॥

ईसा अपने शिष्यों के संग अकेला रहता था। पापी लोग जो उस के घात में लगे थे उसे नहीं जानते थे परन्तु ईसा के मित्र जानते थे कि वुह कहां है॥

शिष्यों से अधिक ईसा के और भी मित्र थे एक मित्र का नाम लाजर था जिस को दो बहिन थीं उन का नाम मरियम और मरथा था यह तीनों एक ही संग रहते थे और वे ईसा को और ईसा उन्हें बहुत प्यार करता था और बहुधा वुह उन को देखने को आता और घर में बैठके उन से वार्त्ता करता था मरथा उस के लिये अच्छा भोजन बनाने को प्रसन्न थी और मरियम उस की वार्त्ता सुन्ने को॥

सो इन का भाई लाजर रोगी हुआ॥

मरियम और मरथा अपने भाई लाजर से बहुत प्रेम रखती थीं और उन्हें विश्वास था कि ईसा उसे चंगा कर सक्ता है सो उन्हों ने एक मनुष्य से ईसा के पास यह कहला भेजा कि लाजर रोगी है॥

वुह मनुष्य ईसा से सन्देश कहने के हेतु बड़ी दूर निकल

ाया इतने में लाजर और अधिक दुःखी होके मर गया
हो उस के मित्रों ने उसे कफनाके एक समाधि में रक्खा
और ऊपर से एक बड़ा पत्थर ढुलका दिया ॥

मरियम और मरथा ईसा के आने की बाट जोह रहीं
थीं ॥

चार दिन बीते ईसा आया और मरियम और मरथा को
इतना विश्वास न था कि ईसा लाजर को फिर जिलावेगा
इस कारण कि उसे मरे चार दिन बीत गये थे सो वे सब बैठ
कर बिलाप और रोदन करते थे ॥

जब मरथा ने सुना कि ईसा मार्ग में थोड़ी दूर पर है
तो उसे आगे मिलने को धाई और ईसा से कहा हे प्रभु
यदि तू यहां होता तो मेरा भाई न मरता और अब भी तू
उसे जिला सक्ता है ॥

तब ईसा ने कहा कि तेरा भाई फेर जीयेगा ॥

मरथा ने कहा कि हां मैं जानती हूं कि वुह पुनरुत्थान
में पिछले दिन फेर उठेगा ॥

मरथा भय करती थी कि ईसा लाजर को बेग जिलाने
नहीं चाहता है परन्तु उसे विश्वास था कि वुह लाजर को
जिला सक्ता है ॥

सो वुह फिर घर गई और मरियम और जो उस के संग
बैठे थे देखा ॥

तब मरथा ने मरियम के कान में फुसफुसाके कहा कि

गुरु आया है वुह तुझ से वार्त्ता करने चाहता है से वुह दोनें मिलके ईसा के पास आईं॥

मरियम के मित्र भी बिलाप करते उस के संग थे और मरियम बिलख बिलखके रोती थी जब उस ने ईसा को देखा तो उस के चरणें पर गिरके कहा कि हे प्रभु यदि तू यहां होता तो मेरा भाई न मरता॥

जब ईसा ने उसे देखा कि रोती है और उन को भी जो उस के संग आये थे कि रोते और बिलाप करते हैं हाय किई और खेदित ज्ञआ वुह ऐसा दयाल है कि किसी को क्लेश में देखने नहीं चाहता है॥

तब ईसा ने कहा कि तुम ने लाजर को कहां रक्खा है॥

से मरथा और मरियम और उस के संगियें ने कहा कि आ और देख और उसे उस स्थान की ओर ले चले॥

जब ईसा चला जाता था उस की आंखें से आंसू ढुलकते थे॥

से वुह हाय करता ज्ञआ समाधि पर आया वुह एक गुहा थी और उस पर एक भारी पत्थर धरा था॥

ईसा ने कहा कि पत्थर उठाओ॥

मरथा ने समझा कि वुह लाजर की लोथ को देखने चाहता है इस लिये उस ने कहा कि भीतर न जाओ उस के मांस से दुर्गन्ध आती होगी क्योंकि उसे रक्खे चार दिन ज्ञए परन्तु ईसा ने उसे कहा कि तू बिश्वास रख कि मैं उसे फेर जिलाऊंगा॥

तब उन्हों ने ईसा के कहने के समान उस पत्थर को
सरकाया॥

ईसा ने आंखें ऊपर करके कहा कि हे पिता मैं तेरा
धन्यबाद करता हूं कि तू ने मेरी सहायता किई और
सुनी॥

उस के पास एक बड़ी भीड़ खड़ी थी और अचम्भे से
ईसा की ओर देख रही थी कि देखे वुह क्या करता है॥

मरथा और मरियम बड़ी लालसा से बाट जोहती थीं
कि लाजर को फेर जीता देखें॥

तब ईसा ने बड़े शब्द से चिल्लाके कहा कि हे लाजर
बाहर निकल आ॥

लाजर यदि मृतक था तथापि उस ने उस के शब्द को सुना।
मृतक ईसा की सुनते हैं। वुह उठ बैठा और समाधि से
बाहर निकल आया उस के हाथ पांव बस्त्र से बन्धे थे और
उस का मुंह दुपट्टे से लपेटा था॥

तब ईसा ने कहा कि उसे खोलो और जाने दो॥

मरियम और मरथा लाजर को फेर देखकर कैसी आ-
नन्द हुई होंगी और प्रभु ईसा को ऐसे दयावन्त कार्य्य के
लिये बड़ी स्तुति किई होगी॥

और जिन्हों ने यह आश्चर्य्य कर्म देखा अति अचम्भित
हुए और कहा कि निःसन्देह ईसा मसीह परमेश्वर का
पुत्र है॥

तीसवां पाठ ॥

ईसा का यरूसलम में जाना ॥

ईसा ने कौन सा बड़ा आश्चर्य्य कर्म किया ॥

लाजर को जो चार दिन का मृतक था फेर जिलाया ॥

अनेक दुष्टों ने जो ईसा के बैरी थे इस समाचार को सुना परन्तु उस्से और अधिक बैर किया और उन्हों ने एका किया कि उसे घात करें और यह भी कहा कि यदि हम उसे जीता रहने देवें तो सब उस पर विश्वास लावेंगे कि वे परमेश्वर का पुत्र है ॥

परन्तु ईसा जान गया कि वे उसे घात किया चाहते हैं इस कारण उस ने प्रगट में फिरना छोड़ दिया और वहां से जाके एक स्थान में अपने शिष्यों के संग रहा जिसे वे न जानते थे उन्हों ने उसे ढूंढा पर न पाया ॥

क्या प्रभु ईसा नित्य उसी स्थान में अपने शिष्यों के संग छिपा रहा। नहीं। वुह हमारे कारण बलिदान होने को स्वर्ग से आया इस कारण वुह केवल अपने मरने के समय लों वहां रहा परन्तु अन्त को उस ने अपने शिष्यन से कहा कि हमें यरूसलम में जाना आवश्यक है वहां दुष्ट मुझ पर हसेंगे और कोड़े मारेंगे और घात करेंगे परन्तु तीसरे दिन मैं समाधि से फेर जी उठूंगा ॥

शिष्य यह सुनके बहुत उदास हुए और ईसा से कहा कि जहां कहीं तू जाय हम भी तेरे संग चलेंगे॥

सो ईसा चलते चलते यरूसलम में जब पहुंचा तब ठहर गया और अपने शिष्यन् से कहा कि मैं गदही के बच्चे पर चढ़के यरूसलम में जाऊंगा परन्तु ईसा के पास निज का बछेड़ा न था क्योंकि वुह एक स्थान से दूसरे को पांव पैदल आता जाता था परन्तु वुह किसी मनुष्य के मन को पलटके उस का बछेड़ा ले सक्ता था॥

तब ईसा ने दो शिष्यों को यह कहके भेजा कि तुम उस गांव में जो तुम्हारे सन्मुख है जाओ और तुम वहां एक गदही और उस के बच्चे को उस के संग बंधा हुआ पाओगे और एक मनुष्य भी उन के निकट खड़ा होगा सो तुम उस गदही और बच्चे को मेरे पास ले आओ मैं निश्चय करके जानता हूं कि वुह तुरन्त उन को भेजेगा॥

सो दो शिष्य ईसा की आज्ञा के समान उस गांव में जो थोड़ी दूर पर था गये और एक बंधी हुई गदही को और उस के संग एक बच्चे को पाया और जब वे उस गदही को खोलने लगे तब उस मनुष्य ने जो उन के निकट खड़ा था कहा कि तुम क्यों उस गदही को खोलते हो॥

उन्हों ने कहा कि प्रभु को उन का आवश्यक है तब उस ने उन को तुरन्त भेज दिया॥

मेरे बिचार में यह आता है कि वुह पुरुष ईसा को

बज़त प्यार करता था और अपनी बस्तु उसे उधार देने को अति प्रसन्न था॥

वे दोनों शिष्य गदही और उस के बच्चे को ईसा के पास लाये और उस बछेड़े पर अपने बस्त्र रक्खे और ईसा को उस पर सवार किया॥

और एक बड़ी भीड़ यरूसलम से उसे देखने को आई इस लिये कि सभों ने सुना था कि ईसा ने लाज़र नाम चार दिन के म्टतक को जीवदान दिया है सो समस्त मंडली ने ईसा की स्तुति किई और उसे पुकार पुकारके राजा कहा उन्हों ने अपने बस्त्रों को मार्ग में बिछाया कि गदहे उन को रोंदते चले आवें औरों ने वृक्षों की डालियां काटीं और मार्ग में बिथराईं॥

और जब वुह यरूसलम में पज़ंचा तो उस में बड़ा कोलाहल मचा यहां लों कि समस्त लोग उसे देखने को बाहर निकले हां छोटे बालकों ने भी उस की स्तुति किई और उसे राजा बखाना परन्तु दुष्ट जो उस के बैरी थे उस की स्तुति सुनके अति क्रोधित ज़ए उन्हें ईसा की स्तुति न भाती थी इस लिये वे उस के निकट आये और उस्से कहा कि तू क्यों इन बालकों को आप को राजा कहने देता है॥

परन्तु ईसा को बालकों की स्तुति बज़त भाती थी इस लिये उस ने उन को न रोका॥

ईसा छोटे बालकों को बहुत प्यार करता था और वे भी उस को प्यार करते थे॥

एकतीसवां पाठ॥

मन्दिर के बिषय में॥

यरूसलम में गिरजे के समान एक मन्दिर था जो बाहर और भीतर से अति सुन्दर था और उस के द्वार प्रतिदिन खुले रहते और लोग आकर उस में प्रार्थना करते थे इस कारण कि वुह परमेश्वर का घर था ईसा भी बहुधा अपने शिष्यन के संग उस में जाता था और कंगाल अन्धे और लंगड़े उस के निकट आते थे और वुह उन्हें चंगा करता और अपने पिता के बिषय उन को उपदेश देता था॥

छोटे छोटे बालक उस मन्दिर में उस की स्तुति करते थे और ईसा भी दिन भर लोगों को परमेश्वर के बिषय उपदेश करता और सिखाता था और सब लोग उस की सुन्ने में लवलीन रहते थे॥

बहुत से दुष्ट उस मन्दिर में आकर ईसा पर हंसते और उसे दुर्बचन बोलते थे परन्तु उस ने मेम्ने की नाईं उन की सुनकर सह लिया॥

रात को मन्दिर से निकलकर वुह एक पर्वत पर गया और आप अकेले परमेश्वर की प्रार्थना किई॥

ईसा के बैरी उस के घात में लगे थे कि कौन यत्न से

उसे पकड़के घात करें उन्हों ने आपस में कहा कि हम उस पर किस प्रकार से हाथ डालें यदि लोग देखें तो वे हम को उसे छूने न देंगे क्या हम उसे मन्दिर में जब वुह अकेला हो पकड़ लें और यदि वुह अंधेरे में हमारे हाथ लगे तो उसे रस्सी से बांधके न्यायी के पास ले जावें ॥

इस रीति से उन दुष्टों ने बैठके आपस में बिचार किया ॥

बत्तीसवां पाठ ॥

यहूदाह के बिषय में ॥

ईसा के बारह शिष्य थे परन्तु क्या वे सब ईसा को प्यार करते थे ॥

पतरस यूहन्ना और सब शिष्य उस्से प्रेम रखते थे परन्तु उन में यहूदाह नाम शिष्य उस्से कपट से प्रेम रखता था वुह पिशाच की नाईं था ॥

क्या ईसा को यहूदाह की दुष्टता प्रगट थी ॥

हां वुह उस के अन्तःकरण को जानता था परन्तु शिष्य समझते थे कि यहूदाह भला मनुष्य है इस लिये कि वुह प्रभु को बज्जधा चूमता और प्रेम से उस्से बोलता था और और शिष्यन की नाईं परमेश्वर के बिषय बार्त्ता करता था ॥

परन्तु यहूदाह रुपेयों का प्रेमी था वुह चाहता था कि ढेर रुपेये बटोरे वुह लोभी और चोर था शिष्यों के पास

एक थैली थी और सब शिष्य उसी थैली में अपना रोकड़
धरते थे परन्तु उस में बज्जत रुपैया पैसा न रहता था
क्योंकि वे कंगाल थे पर जब कभी उन्हें कुछ पैसा कौड़ी
मिले तो वे उसी थैली मं डाल देते थे और वुह थैली यझ-
दाह के पास रहती थी और वुह उस में से कुछ चुराकर
अपने लिये अलग धर छोड़ता था परन्तु यह बात केवल
ईसा के और किसी को प्रगट न थी कि यहूदाह चोर है वुह
सब जानता था॥

यहूदाह को निश दिन यही चिन्ता रहती थी कि किस
जत्न से और रुपैया मिले॥

एक दिन जब सब अभिमानी दुष्ट लोग एकट्ठे बैठे थे तो
यहूदाह उन के मध्य में गया और उन से कहा कि तुम
चाहते हो कि ईसा तुम को अकेले मिले यदि तुम मुझे कुछ
रुपैये दो तो मैं तुम्हें ठीक पता बताऊं कि वुह रात को
कहां जाता है॥

तब उन दुष्टों ने कहा कि हां हम तुझ को देंगे॥

फिर यहूदाह ने पूछा कि तुम मुझे कितने रुपैये दोगे।
उन्हों ने उत्तर दिया कि तीस॥

तब यहूदाह ने कहा कि कोई समय रात को जब वुह
अकेला रहे तब मैं तुम को उस के पास ले चलूंगा॥

यह बचन सुनके दुष्ट अति आनन्दित ज्ञए। कि अब
हम उसे जल्दी से पकड़के घात करेंगे। यह समाचार

देके यहूदाह ईसा के समीप फिर आया और अपना भेद किसी शिष्य को न बतलाया परन्तु अन्तर्जामी ईसा जानता था कि उस ने क्या किया है इस लिये कि ईसा उस के अन्तःकरण का जांचनेहारा था और जो कुछ यहूदाह निश दिन करता वुह जानता था तथापि ईसा ने यहूदाह को न जताया कि वुह उस के समस्त दुष्ट कर्मों को जानता है॥

तेंतीसवां पाठ॥

प्रभु भोज के बिषय में॥

पहिला भाग॥

तब ईसा ने अपने शिष्यन से कहा कि मैं अब शीघ्र घात किया जाऊंगा इस लिये मैं दुःख सहने से आगे यरूसलम में तुम्हारे संग फसह खाऊंगा॥

सो ईसा ने पतरस और यूहन्ना को यह कहके भेजा कि जाओ फसह सिद्ध करो उन्हों ने उसे कहा कि तू कहां चाहता है कि हम सिद्ध करें इस कारण कि ईसा का कोई घर यरूसलम में न था परन्तु वुह जानता था कि घर मिल सक्ता है॥

तब ईसा ने पतरस और यूहन्ना से कहा कि यरूसलम में जाओ वहां एक मनुष्य जल का घड़ा लिये तुम को मिलेगा और जिस घर में वुह प्रवेश करे उस के पीछे पीछे चले जाइयो और उस घर के स्वामी से कहियो कि मेरे मरने का

समय आ पड़ंचा सो मैं अपने शिष्यन के संग फसह कहां खाऊं और वुह तुम्हें एक कोठरी बता देगा॥

सो पतरस और यूहन्ना यरूसलम को गये॥

और वहां पड़ंचके किसे पाया॥

एक मनुष्य को जल का घड़ा लेजाते ड़ए॥

वे उस के पीछे पीछे हो लिये जब उस ने एक घर में प्रवेश किया तब पतरस और यूहन्ना भी उस के पीछे पीछे गये और उस घर के स्वामी से कहा कि ईसा एक कोठरी चाहता है कि जिस में अपने शिष्यन के संग मरने से आगे फसह खाय॥

उस घर के स्वामी ने उन्हें ऊपर लेजाके एक कोठा संवारा ड़आ दिखाया उस में एक मंच जिस के चारों ओर बैठके थे धरी थी और एक घड़ा और बासन पांव धोने के लिये और कटोरे और थाली भी थीं॥

तब पतरस और यूहन्ना दोनों ने मिलके रोटी और दाखरस और अनेक प्रकार की बस्तु लाके फसह सिद्ध किया और जाके ईसा को जो यरूसलम से एक थोड़ी दूर पर था सन्देश दिया कि फसह सिद्ध है सो ईसा और उस के प्रेरित सांझ को वहां गये और खाने पर बैठे॥

ईसा यूहन्ना को और शिष्यों से अधिक प्यार करता था इस लिये यूहन्ना ईसा के पास बैठा॥

जब फसह खा चुके तब ईसा उठ खड़ा ड़आ और एक

अंगोछा लेके अपनी कटि में बांधा और एक पात्र में घड़े से जल डाला और शिष्यन के पांव धोने लगा और उस अंगोछे से जो कटि में बांधा था पोछने लगा॥

और जब वुह पतरस के पास आया तब पतरस ने उसे कहा तू मेरे पांव कभी न धोना॥

पतरस ने समझा कि यह ईसा की बड़ी क्रिया है कि मेरे पांव धोता है मानों वुह चाकर है परन्तु ईसा अभिमानी न था वुह शिष्यों पर अति दयाल था॥

और ईसा ने पतरस से कहा यदि मैं तुझे न धोऊं मेरे संग तेरा भाग न होगा मैं तो तुम्हें पवित्र कर चुका हूं। ईसा ने पतरस के हृदय को पवित्र किया था॥

सो पतरस ने आनन्द से अपने पांव धोने दिया॥

सब शिष्य सम्पूर्ण पवित्र थे परन्तु यहूदाह न था वुह केवल दुष्टता से भर पूर था उस में शैतान अर्थात् दुष्ट-आत्मा समाया था तथापि ईसा ने उस के पांव धोये वुह उस दुष्ट पर भी दयाल हुआ जो उस्से बैर रखता था॥

जब वुह उन के पांव धो चुका तो बैठ गया और उन से यह कहने लगा॥

कि तुम जानते हो मैं ने तुम से क्या किया मैं ने तुम्हारे पांव धोये यदि मैं तुम्हारा गुरु और प्रभु हों मैं ने तुम्हें सिखलाया कि जैसा मैं ने तुम से किया तुम भी एक दूसरे से ऐसा ही करो॥

चौंतीसवां पाठ॥

प्रभु भोज के बिषय में॥

दूसरा भाग॥

तुम जानते हो कि यहूदाह के मन में कैसी बुरी चिन्ता
थी ईसा भी जानता था कि वुह उस के बैरियों को उस
के समीप ले आवेगा और उसे पकड़वाय देगा और दुष्ट
उसे घात करेंगे ईसा यहूदाह पर अति दयाल था परन्तु
वुह उस की दुष्टता देख बहुत उदास था॥

जब वुह अपने शिष्यन के संग फसह पर बैठा था तब
उस ने कहा कि एक तुम में से मुझे बैरियों के हाथ में
घात करने के लिये पकड़वा देगा॥

और सब शिष्य अति उदास हुए इतने में पतरस ने
कहा कि क्या मैं हूं और यूहन्ना ने कहा क्या मैं हूं और
सब ने इसी भांति कहा क्या मैं हूं परन्तु ईसा ने न बताया
कि वुह कौन है॥

यूहन्ना उस की छाती पर लेटा था सो पतरस ने उस को
सैन किई कि पूछे वुह कौन है जो दुष्टों को जहां ईसा
रहे लेजाके पकड़वावेगा॥

सो यूहन्ना ने ईसा से कहा कि हे प्रभु वुह कौन है॥

ईसा ने उत्तर दिया कि वुह जो मेरे साथ ग्रास में रोटी
भिगाता है॥

इस लिये कि उस मंच पर एक बासन में ग्रास धरा था और ईसा अपनी रोटी उस में भिगाता था और जिस बासन में वुह भिगाता था एक शिष्य ने भी उस बासन में हाथ डाला सो वुह कौन था॥

यहूदाह अपनी रोटी ईसा के संग एक ही बासन में भिगाता था तब यूहन्ना ने जाना कि वुह दुष्ट कौन है॥

तब ईसा ने उसे कहा कि जा जो कुछ कि तू करता है झटपट कर॥

तब यहूदाह उस कोठरी से बाहर चला गया॥

वुह कहां गया था॥

उन्हीं दुष्टों के पास जिस में ईसा को अंधेरे में पकड़वावे परन्तु शिष्यों ने समझा कि वुह दुकान पर कुछ मोल लेने अथवा कंगालों को कुछ पैसा बांटने गया है॥

पैंतीसवां पाठ॥

प्रभु भोज के बिषय में॥

तीसरा भाग॥

फसह के पीछे ईसा ने रोटी लिई और तोड़के थोड़ी थोड़ी सब को बांटी और कहा यह मेरी देह है मैं मरने पर हूं सो इसे लो खाओ और मेरा स्मरण करो॥

फिर ईसा ने एक कटोरा में दाखरस डालके अपने शिष्यों से कहा कि इस में से तुम सब पीओ और उस ने

कहा यह मेरा लोहू है मैं शीघ्र लोहू लोहान होकर प्राण त्यागूंगा सो तुम मेरे स्मरण के लिये इसे पीओ॥

फिर ईसा ने उन से कहा कि अब से आगे मैं तुम्हारे संग बेयारो न खाऊंगा जब लों मैं न मरूं मैं अपने पिता के पास जाता हूं और तुम्हें यहीं छोड़ जाता हूं परन्तु मैं फिर आऊंगा॥

इस के पीछे सभों ने एक भजन गाया॥

तब ईसा मंच पर से उठा और कोठे से नीचे उतरके चल निकला और उस के शिष्य भी उस के पीछे हो लिये उस समय अंधेरा था पर ईसा उन से बात करता चला जाता था कि आज की रात मैं अपना प्राण त्यागूंगा और तुम सब मुझे छोड़ दोगे॥

पतरस ने उत्तर देके कहा कि मैं तुझे कभी न छोड़ूंगा मैं तेरे संग बंदीगृह में जाने और तेरे संग मरने को सिद्ध हूं परन्तु मैं तुझे कभी न छोड़ूंगा॥

ईसा ने उत्तर दिया कि हां पतरस तू मुझे छोड़ देगा तू कहेगा कि मैं ईसा को नहीं जानता और न मैं ईसा का मित्र हूं आज की रात कुक्कुट के शब्द करने से आगे तू मुझ से मुकरेगा क्योंकि विहान हीं को कुक्कुट शब्द करते हैं॥

फिर प्रेमसागर ईसा ने अपने शिष्यन से कहा कि व्याकुल मन होओ कि मैं जाता हूं मैं अपने पिता के पास

जाऊंगा और फिर आऊंगा और जब लों स्वर्ग में रहूं मैं तुम्हें न भूलूंगा परन्तु तुम्हारे लिये स्वर्ग में सदन ठीक करूंगा केवल तुम एक दूसरे को प्यार करो और मैं अपना आत्मा तुम्हारे पास पठाऊंगा॥

इतने में ईसा एक बाटिका में आया जिस में वुह अपने शिष्यन के संग बहुधा जाया करता था और यहूदाह भी जिस ने उसे पकड़वाया वुह स्थान जानता था॥

इस समय यहूदाह इसकरियत कहां था॥

उन दुष्ट अभिमानियों के संग॥

तुम बेग सुनोगे कि वुह किस भांति से उस बाटिका में आया और किस प्रकार से उन दुष्टों के चाकरों को अपने संग लाया क्योंकि वे दुष्ट बड़े धनवान और अभिमानी थे वे ईसा के पकड़ने के लिये आप न गये परन्तु अपने चाकरों को भेजा॥

छत्तीसवां पाठ॥

बाटिका के बिषय में॥

जब ईसा उस बाटिका में जो गतसमने कहावता है आया तो अपने शिष्यों को आज्ञा दी कि तुम सब इसी स्थान में रहो जब लों मैं लौटूं और तीन को अपने संग लेके आगे गया॥

वे तीन शिष्य कौन थे॥

पतरस और ज़बदी के दो पुत्र यअ़कूब और यूहन्ना थे जिन्हें उस ने बाटिका के एकान्त में लेजाके कहा कि मैं अति उदासीन और शोकित हूं मैं प्रार्थना करने को जाता हूं सो तुम यहां ठहरो और प्रार्थना करो॥

और वुह थोड़ा आगे बढ़के औंधे मुंह भूमि पर गिरा और यह प्रार्थना किई कि हे पिता तू मुझे मृत्यु से बचा तिस पर भी तेरी इच्छा होय॥

और प्रार्थना करते करते वुह ऐसा ब्याकुल भया कि उस की देह से लोहू निकला और वुह भूमि पर गिरा तब वुह उठके पतरस यअ़कूब और यूहन्ना के पास आया और उन्हें सोते पाया और उन्हें जगाके कहा कि प्रार्थना करो॥

वुह दूसरी बेर फिर गया और प्रार्थना किई कि हे पिता मुझे मृत्यु से बचा तब उस ने आके उन्हें फिर सोते पाया॥

फिर ईसा ने प्रार्थना किई और उस के पिता ने उसे शान्ति देने को दूत पठाया मैं ठीक नहीं जानता कि उस दूत ने ईसा से क्या कहा परन्तु यह जानता हूं कि उस ने ईसा को प्यार किया और उसे मीठे बचन से शान्ति देके कहा कि देख तेरा पिता तुझे कैसा प्यार करता है। वुह दूत देर लों ईसा के समीप न रहा परन्तु ईश्वर के पास फिर चला गया॥

तब ईसा अपने शिष्यों के पास फिर आया और उन्हें

सोते ही पाया और उन्हें जगाके कहा कि चौकस रहो क्योंकि यहूदाह समीप आय पहुंचा॥

और जब वह यह कह रहा था देखो कि एक बड़ी मंडली उस बाटिका में देख पड़ी वे सब लोग यरूसलम के अभिमानियों के चाकर थे वे खड्ग और लाठियां और मसाल लिये हुए थे और यहूदाह ईसा के बताने के लिये उन के आगे आगे था और प्रेम करने के बहाने से ईसा को बड़ी चतुराई से आके उस ने चूमा॥

ईसा ने जो उस के मन में था जानके कहा कि हे मित्र तू किस कारण आया और मुझे क्यों चूमता है॥

तिस पर भी ईसा वहां से न भागा पर उन के निकट जायके उन से पूछा कि तुम किसे ढूंढ़ते हो॥

उन्हों ने कहा कि ईसा को॥

तब उस ने कहा कि मैं हूं॥

और ज्यों ही उस ने उन से कहा कि मैं हूं वे पीछे हट और भूमि पर गिर पड़े तब ही वह उन से भाग सक्ता था परन्तु उस ने अधिक प्रसन्न किया कि पापियों के कारण अपने प्राण देवे॥

सो उन दुष्टों ने ईसा पर हाथ डाला क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें ऐसा करने दिया और ईसा ने उन से कहा कि तुम मुझे पकड़ लेओ परन्तु मेरे शिष्यों को जाने दो॥

देखो ईसा अपने शिष्यों पर कैसा दयाल था कि उन्हें

न बिसराया परन्तु वे सब निपट डर गये और भागने का मन किया और ईसा के संग मरने न चाहते थे॥

परन्तु पतरस ने उन दुष्टों के चाकरों में से एक के कान को खड्ग से उड़ा दिया और बुह चाहता था कि उन से युद्ध करे पर ईसा ने उस्से कहा कि अपना खड्ग मियान में कर और मेरे कारण उन से युद्ध न कर यदि मैं चाहूं तो सहस्रों दूत युद्ध के लिये यहां मंगा सक्ता हूं परन्तु पिता की आज्ञा के समान मैं अपना प्राण प्रायश्चित्त में देने को प्रसन्न हूं तब ईसा ने उस मनुष्य का कान छूके चंगा किया इतने में पतरस आदिक शिष्य ईसा को उन दुष्टों के संग अकेला छोड़के भाग गये तब उन दुष्टों ने उस को बांधा और यरूसलम को ले चले परन्तु ईसा भेड़ के बच्चे की नाईं कोमलता से उन के संग हो लिया॥

सैंतीसवां पाठ॥

पतरस का मुकरना॥

वे अधर्मी दुष्ट लोग जो ईसा के शत्रु थे रात भर जागते रहे क्योंकि उन्हों ने चाकर पठाये थे कि ईसा को पकड़ लावें और वे सब चंडाल एक सुन्दर घर में बैठे वार्त्ता करते और ईसा के धर आने की बाट जोहते थ॥

और आपस में यह कह रहे थे कि जब वुह आवे हम उसे न्यायी के पास पकड़ ले जायेंगे और उसे घात करंगे॥

इतने में दुष्ट चाकरों ने ईसा को लाय खड़ा किया उसे देखते ही सब अधर्म्मी हर्षित भये और ईसा को उस बड़ी कोठरी के बीच में खड़ा किया और उस्से घुड़कके पूछा कि क्या तू परमेश्वर का पुत्र है॥

ईसा ने उन्हें उत्तर देके कहा कि हां मैं हूं और एक दिन तुम मुझे दूतों के संग आकाश के मेघों में आते देखोगे तब ही तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर का पुत्र हूं॥

तब सब अभिमानी अति क्रोधित भये॥

और कहा कि तुम सुनते हो वुह क्या कहता है इतने में सब एक संग चिल्लाये कि वुह अपने को परमेश्वर का पुत्र ठहराता है सो निःसन्देह हम उसे न्यायी के पास धर लेजायेंगे जिसतें वुह घात किया जाय॥

परन्तु ईसा चुपचाप खड़ा रहा और एक बात भी न बोला॥

इस समय शिष्य कहां थे॥

कहीं दूर भाग गये थे॥

क्या पतरस भी भाग गया था॥

पतरस ने तो वाचा दिई थी कि मैं ईसा के संग मरने को सिद्ध हूं पर वुह भी भाग गया॥

अन्त को पतरस के मन में आया कि मैं ईसा को जायके ढूंढूं और देखूं कि वे चण्डाल लोग ईसा से क्या कर रहे हैं॥

सो पतरस यरूसलम में पहुंचके उस घर में आया पहिले तो वुह दलान में गया जहां सब दुष्ट चाकर बैठे आग ताप रहे थे और वहां का एक द्वार खुला था जिस्से पतरस ने ईसा को देखा कि वुह चण्डालों के सन्मुख खड़ा है। पतरस को यह भरोसा था कि उसे कोई न पहचानेगा कि वुह ईसा के शिष्यों में से है कहीं ऐसा न हो कि वुह मारा जाय सो ज्यों हीं वुह बैठके आग तापने लगा एक सहेली ने आके उस्से पूछा कि तू भी ईसा के शिष्यों में से है॥

पतरस निपट डर गया और सन्मुख मुकरके कहा मैं नहीं हूं और उस मनुष्य को जिसे तू कहती है मैं नहीं जानता॥

तब पतरस वहां से उठके ओसारे में आया और एक दूसरी सहेली ने उसे कहा कि निःसन्देह तू ईसा के शिष्यों में से है॥

पतरस ने मुकरके कहा मैं नहीं हूं सो वुह फिर जाके आग तापने और चाकरों से बतलाने लगा॥

पर जिन्हों ने उसे बाटिका में देखा था उसे पहचाना और उस के पास आके कहने लगे निश्चय तू भी उन में से है और एक ने यह भी कहा कि मैं ने तुझ को उस बाटिका में देखा था॥

पतरस ने किरिया खाके कहा मैं नहीं था ॥

और जब वुह ऐसी कठोरता से कह रहा था तुरन्त कुक्कुट ने शब्द किया ॥

तब पतरस ने ईसा के बचन को चेत किया और ईसा की ओर दृष्टि किई और ईसा ने भी अपना मुंह फेरके पतरस की ओर ताका ईसा की दृष्टि ऐसी थी कि यद्यपि उस ने अपने मुख से पतरस को कुछ न कहा तथापि वुह अपनी चितवन से मानें उस्से यह कहता था कि अरे क्या तू मेरा मित्र पतरस है जिस ने मुझे बाचा दिई थी कि मैं तेरे संग हे ईसा मरने को सिद्ध हूं सो यही तेरा प्रेम है कि मैं ईसा को नहीं जानता कि वुह कौन है ॥

तब पतरस महा शोकित भया मानें उस का मन टूट गया और वुह बाहर जाके बिलख बिलख रोने लगा इस लिये कि वुह ईसा को मन से प्यार करता था वुह केवल शैतान अर्थात् दुष्ट आत्मा के बगदाने से ऐसा कठोर हो गया और कहा कि मैं उसे नहीं जानता ॥

यदि वुह उस बाटिका में सोने की सन्ती प्रार्थना करता तो कभी परीक्षा में न पड़ता मसीह ने बहुधा उस के कारण प्रार्थना किई जिस्तें उस का प्राण शैतान के हाथ में न पड़े ॥

अठतीसवां पाठ ॥

पनतूस पिलातूस के बिषय में ॥

सो ईसा रात भर उसी घर में खड़ा रहा ओर दूजे पतरस के बचन सुनके उस ने बज़त श्रोक किया ओर दुष्ट सिंह ओर बाघ के सन्तान थे परन्तु ईसा उन के सन्मुख जैसे एक भेड़ी का बच्चा खड़ा था ओर वे ईसा की ओर ऐसे घूरते थे कि मानें उस्से जले मरते थे ॥

एक बेर जब वुह बोला तो एक चाकर ने उसे थपेड़ा मारा पर उस ने नम्रता से सह लिया ॥

न्यायी अब लें सोके नहीं उठा था क्योंकि रात थी सो उन दुष्टें को प्रातःकाल लें ठहरना पड़ा ॥

तब ईसा के चारों ओर चाकर बटुर आये ओर उस के मुंह को अंगोछे से मूंदके उसे मारा ओर धक्का दिया ओर उस पर थूका ओर उसे हंसी में उड़ाया ॥

जब प्रातःकाल ज़आ तब दुष्टें ने कहा कि अब हम उसे न्यायी के पास धर ले जायेंगे ॥

सो वे उस भवन से बाहर निकले ओर ईसा को भी संग लिया ॥

तब न्यायी एक महा ऊंचे सिंहासन पर चैाहे में बैठा उस का नाम पनतूस पिलातूस था ओर वुह ईसा

को न जानता था सो उस ने यह प्रश्न किया कि इस ने क्य
किया है॥

दुष्टों ने उत्तर दिया कि वह अपने को राजा ठहराता है

पिलातूस ने ईसा से पूछा कि क्या तू राजा है ईसा ने
कहा कि हां मैं हूं पिलातूस ने उस की भलमनसाई देखके
न चाहा कि उसे दण्ड दें॥

पर दुष्टों ने गुहार मचाके कहा कि तू उसे सलीब दे।

पिलातूस ने कहा कि नहीं मैं केवल उसे मारूंगा और
यह बस है सो उस ने ईसा को सिपाहियों को सौंप दिय
और उन्हों ने घर में लेजाके उसे गठीली रस्सियों से
मारा॥

ऐसी मार कोड़े की कहावती है॥

और मार खाते खाते उस की पीठ से लोहू बह चला।
तब कठोर सिपाही इस कारण कि उस ने अपने को राजा
कहा उस पर हंसे और उस का वस्त्र उतारके उसे बैंगनी
और लाल वस्त्र जैसे राजा लोग पहिरते हैं पहिराया॥

फिर उन्हों ने परामर्श किया कि आओ हम उस के सीस
पर मुकुट रक्खें सो उन्हों ने सूई के समान नोकीले कांटे
लाके उसे सजाया और उन का एक मुकुट बनाके उस के सीस
पर धरा॥

फिर उन्हों ने कहा कि उचित है कि उस के पास
राजदण्ड भी हो इस कारण कि राजा लोग अपने हाथ में

उसे रखते हैं सो उन्हों ने उस की सन्ती एक सरकण्डा उस के हाथ में दिया फिर उसे छीनके उस के सिर में मारा और हंस हंसके उस के सन्मुख दण्डवत किई और कहा कि हे राजा हे राजा॥

उस के पीछे पिलातूस ईसा को बाहर लाया जहां सब दुष्ट लोग और एक बड़ी भीड़ खड़ी थी और उन्हें दिखाके कहा कि अपने राजा की ओर दृष्टि करो॥

पिलातूस को यह आशा थी कि वे उस के इस बुरे व्यवहार को देखके शोकित होंगे इस लिये कि कांटों से उस का माथा लोहू लोहान और पाठ कोड़े की मार से उपटी और कुचली हुई थी और अच्छे अच्छे बस्त्र उसे पहिनाये गये थे जिस्तें उसे चिढ़ावें परन्तु वे चण्डाल दुष्ट बाघ की नाईं निर्दय थे॥

सो सब चिल्लाके बोले कि उसे क्रूस पर मार क्रूस पर मार इत ने में सब मंडली चिल्लाय उठी कि उसे क्रूस पर मार यद्यपि ईसा सब पर दयाल रहा॥

पिलातूस ने कहा कि क्या तुम अपने राजा को क्रूस पर मारोगे॥

उन्हों ने कहा कि वुह हमारा राजा नहीं है और समस्त मंडली के एक संग बोलने बतलाने से उस चोरहे में महा कोलाहल मचा॥

पिलातूस ने जिस्तें कि चण्डालों को सन्तुष्ट करे आज्ञा दिई कि उसे लेजाके क्रूस पर मारो यह सुन सब हर्षित

भये और प्यादों ने उन भड़कीले बस्त्रों को उतार फिर उसी के बस्त्र उसे पहनाये॥

पिलातूस की इस में महा दुष्टता थी कि ईसा को क्रूस पर मारने दिया यदि वुह जानता था कि उस में कुछ दोष नहीं तथापि अधर्म्मियों के सन्तुष्ट करने के लिये उसे घात करने की आज्ञा दिई॥

उन्तालीसवां पाठ॥

यहूदाह की मृत्यु के बिषय में॥

इस समय लों यहूदाह कहां था॥

यदि पापियों ने उसे तीस रुपैये दिये थे तथापि वुह सुखी न था॥

वुह हाय मार मारके कहता था कि मैं ने अनर्थ किया जो अपने निष्पापी स्वामी को घात करवाया हाय मैं कैसा दुष्ट मनुष्य हूं॥

वे रुपैये उसे न भाते थे और न मन में चैन था कि उन्हें अपने पास रक्खे इस लिये कि उस ने महा कुकर्म से उन्हें कमाया था सो वुह उन्हें उन्हीं अधर्म्मियों के पास फिर ले गया और उन्हें भूमिपर फेंक एक खेत में गया और अपने गले में रस्सी बांधी और एक पेड़ में अपने को फांसी देके मर गया इस्से उस ने और अधिक बुराई किई कि परमेश्वर

से क्षमा के लिये प्रार्थना करने की सन्ती उस ने अपने को फांसी दिई॥

यहूदाह का प्राण मरने के पीछे कहां गया॥

शैतान के पास नरक में गया वुह दुष्ट अब और कष्ट स्थान में है न्याय के दिन ईसा उस का बिचार करके कहेगा कि हे स्रापित तू दूर हो॥

चालीसवां पाठ॥

क्रूस के बिषय में॥

पहिला भाग॥

अब पिलातूस ने ईसा को क्रूस पर मारने की आज्ञा दिई तो सब पापी बहुत आनन्द हुए उन्हों ने काठ की दो बड़ी पटियों से एक क्रूस बनाया और ईसा को कहा कि उसे ले चले सो वे यरूसलम से उसे बाहर ले चले और सब दुष्ट भी उस के संग हो लिये॥

ईसा ऐसा दुर्बल हो गया था कि उस्से चला न जाता था और क्रूस भी ऐसा भारी कि उस्से चलता न था उस ने तो मार्ग ही में उसे गिरा दिया होता यदि एक मनुष्य आके उस के ले चलने में उस का सहाय न करता॥

बहुत थोड़े लोग थे जो ईसा के कारण शोक करते थे॥

और बहुधा स्त्रियां जो ईसा को अति प्यार करती थीं

उस के लिय रोती पीटती उस के पीछे पीछे जाती थीं ईसा ने उन्हें रोते सुनकर उन की ओर फिरके कृपा से कहा॥

मेरे लिये मत रोओ परन्तु इन दुष्ट अधर्म्मियों के लिये रोओ जो अपने बुरे कर्म्मों के कारण महा दण्ड भोगेंगे॥

अन्त को जब ईसा एक ऊंचे पर्वत की चोटी पर पहुंचा तब सिपाहियों ने उसे क्रूस पर लेटाया और उस के हाथ पांव में कीलें गाड़ीं यहां लों कि वे कीलें उस के हाथ पांव को छेदकर क्रूस की पटियों में जा धसीं तब सिपाहियों ने एक गड़हा खोदके उस क्रूस को खड़ा गाड़ दिया॥

उन्हों ने ईसा के वस्त्र उतार लिये थे और जब वुह क्रूस पर था उन्हें चीर फाड़के आपस में बांट लिया परन्तु एक कुर्ता जो सर्वत्र बिना कुआ और बहुत सुन्दर था उन्हों ने न फाड़ा इस लिये कि उस में सिलाई का नाम न था सो एक सिपाही ने उसे ले लिया और उन्हों ने ईसा की वस्तुओं में से एक न छोड़ी॥

क्या ईसा उन से अति क्रोधित भया॥

नहीं। वुह भेड़ के बच्चे की नाईं कोमल रहा जब लों वुह क्रूस पर था उस ने अपने पिता से प्रार्थना किई और यदि वुह अपने हाथ उठा नहीं सक्ता था तथापि वुह परमेश्वर से बिनती कर सक्ता था उस ने उन दुष्टों के लिये यह प्रार्थना किई कि हे पिता उन को क्षमा कर क्योंकि वे नहीं जानते कि क्या करते हैं॥

एकतालीसवां पाठ॥

क्रूस के विषय में॥

दूसरा भाग॥

तब पनतूस पिलातूस ने यह पत्र लिखके उस के ऊपर क्रूस पर लगाया कि यह, यहूदियों का राजा है॥

यहूदी कौन थे॥

यरूसलम के बासी यहूदी कहावते थे॥

सारे अधम लोगों ने जब उन अक्षरों को पढ़ा तो ईसा को हंसी में उड़ाया और अपने सिर हिला हिला और मुंह बिगाड़ बिगाड़के ईसा से कहा कि यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो क्रूस पर से उतर आ॥

क्या ईसा को शक्ति थी कि क्रूस पर से उतर आवे॥

हां वुह सब बस्तुन में अपनी इच्छा पूरी कर सक्ता था परन्तु उसे यही भाया कि पापियों के कारण अपने प्राण देने को अधड़ में लटका रहे॥

दुष्टों ने कहा कि यदि वुह परमेश्वर का दुलारा होता तो वुह उसे क्रूस पर कभी मरने न देता परन्तु उस के पिता ने उसे इस लिये मरने दिया कि हम सब पापियों को बचावे॥

ईसा के क्रूस के दहिने बायें दो और भी क्रूस थे जिन पर दो चोर लटकाये गये थे सो उन कुकर्मियों में से एक उसकी निन्दा करके कहता था कि यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो हमें बचा॥

कंपाया और लोग अत्यन्त डर गये और उस के मरने के पीछे बहुतों ने कहा कि निःसन्देह यह परमेश्वर का पुत्र था ॥

तेंतालीसवां पाठ ॥

सिपाहियों के बिषय में ॥

प्यादे ईसा और उन दो चोरों को देखने आये कि यदि वे मर चुके हों तो उन्हें दिन रहते कबर में गाड़ें। योद्धाओं ने पहिले दोनों चोरों को देखा कि वे अब लों नहीं मरे हैं सो उन्हों ने पहिले और दूसरे की टांगें तोड़ीं पर एक सिपाही ने भाले से ईसा का पञ्जर छेदा और तुरन्त उस्से लोहू और पानी निकलके भूमि पर गिरा यूहन्ना पास ही खड़ा था उस ने लोहू के फुहारे भूमि पर गिरते आप देखा तुम्हें चेत होगा जब कि ईसा ने पकड़ जाने से पहिले कहा था कि यह मेरा रुधिर है जो पापियों के कारण बहाया जाता है ॥

अब तो उस का रुधिर बह चुका ॥

भाले ने ईसा के पञ्जर में छेद कर दिया उस के पञ्जर में छेद और दोनों हाथ और पावों में भी छेद थे और उस का माथा कांटों से चुभा हुआ था उस की आंखों से आंसू बहुत बहे थे और उस की देह से रुधिर बहा था ये सब कष्ट उस ने हम पापियों के कारण सहे जिसतें परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करे ॥

चौवालीसवां पाठ ॥

समाधि के विषय में ॥

और देखो कि एक धनवान मनुष्य यूसुफ़ नाम जो सज्जन और धर्म्मी पुरुष था ईसा को बहुत प्यार करता था वुह यूसुफ़ नहीं जो मरियम का पति था परन्तु दूसरा यूसुफ़ उस को एक बाटिका थी जिस में उस ने एक क़बर बनाई थी जान पड़ता है कि यह क़बर उस ने अपने लिये बनवाई थी कि मरने के पीछे उसी में रक्खा जाऊं ॥

सो यूसुफ़ ने बिचार किया कि मैं अपनी क़बर में प्रभु ईसा को रक्खूं तो क्या अच्छी बात है वुह क़बर बहुत सुन्दर थी और उस में कोई कभी रक्खा न गया था ॥

सो उस ने पिलातूस पास आके ईसा की लोथ मांगी और कहा कि यदि तू आज्ञा दे तो मैं उसे क्रूस पर से उतारके लेजाऊं ॥

पिलातूस ने कहा कि अच्छा उतार ले जा ॥

तब यूसुफ़ हर्षित भया और अति सुन्दर बस्त्र लाया कि उस में ईसा को लपेटे और भांति भांति के गरम मसाला और महकीली सुगंध की बस्तु जो भूमि में उपजतीं हैं और कुछ मनुष्य भी अपने संग लाया उन्हों ने उस के हाथ पांव की कीलें निकालके उस की लोथ को क्रूस पर से

उतारा तब यूसुफ़ ने उसे वस्त्र में लपेटा और उस लोथ को सुगंधित मसालों से बासा इस के पीछे कुछ मनुष्य मिलके उस लोथ को यूसुफ़ की बाटिका में ले गये॥

उस बारी में एक चटान थी और उस में एक बड़ा सा छेद सेंध के समान था सो उन मनुष्यों ने ईसा की लोथ को भीतर घुसके अंधकार में रक्खा अब ईसा को चैन हुआ और उस ने क्लेश और शोक से छुटकारा पाया दुष्ट भी वहां न थे सो प्रभु अपनी सूनी कबर में पड़ा था और लोगों ने एक बड़ा सा पत्थर उस कबर के मुंह पर ढुलका दिया जिसतें कोई उस में न घुसे सो कोई पशु पंछी प्रभु ईसा को न पा सके उस फुलबारी में उस की कबर के निकट पेड़ और फूल थे और स्वर्गीय दूत उस की चौकी देते थे परन्तु किसी ने उन्हें न देखा॥

उस समय वे स्त्रियां जो ईसा को प्यार करती थीं कहां रहीं॥

उन्हों ने उसे क्रूस पर टंगा देखा था सो वे उसे बड़े शब्द से चिल्लाते और लोहूलोहान देखके कैसी रोई होंगी॥

उन स्त्रियों ने मनुष्यों को उसे क्रूस पर से उतारते भी देखा था और यूसुफ़ की बाटिका लों उस के पीछे पीछे गईं हां उन्हों ने ईसा को जो कबर में बड़े यत्न से धरा गया देखा॥

उन्हां ने आपस में कहा कि आओ हम और मसाला लाके प्रभु ईसा पर फिर सुगंध द्रव्य और तेल डालें॥

यूसुफ़ ने तो उस पर सुगंध डाला था परन्तु स्त्रियों ने घर जाके और अच्छा अच्छा गरम मसाला लाके सुगंध द्रव्य उस के हेतु बनाया॥

पैंतालीसवां पाठ॥

मसीह के जी उठने के विषय में॥

एक दिन बड़े तड़के जब ईसा को केवल दो दिन मरे बीते थे वे स्त्रियां बाटिका में कबर पर आईं परन्तु उस समय उंजियाला न भया था इस कारण कि वुह पो फटने का समय था॥

मार्ग में सुगंध द्रव्यों को लिये ऊए यह बार्त्ता करती थीं कि हम वहां पऊंचके पत्थर को कबर से कैसे हटावेंगी और किस जतन से उस के भीतर घुसेंगी और पत्थर भी ऐसा भारी और बड़ा है कि हम से टसकने का नहीं॥

सो कोई जुगुत उन्हें सूझ न पड़ती थी अन्त को वे कबर पर आईं पर उस पत्थर को कबर से ढुलकाया ऊआ पाया तब तो स्त्रियों ने बड़ा आश्चर्य्य माना और डर भी उठीं कि दुष्टों ने इस पत्थर को ढुलकाया है और वे ईसा की लोथ को चुरा ले गये हैं यह दशा देख निपट घबराईं और उन्हों ने भीतर जाके प्रभु ईसा की लोथ न

पाई और देखो दो स्वर्गीय दूत चमकते बस्त्र पहिने ऊ
उन्हों ने अपने पास खड़े ऊए देखे उन के मुंह सूर्य्य से अधि
चमकीले और उन के बस्त्र पाला से अधिक स्वेत थे ॥

जब स्त्रियों ने उन दूतों को देखा तो कांप उठीं पर दू
ने उन पर दयाल होके मीठे बचन से कहा कि तुम मत ड
हम जानते हैं कि तुम ईसा को ढूंढती हो वुह यहां नह
है परन्तु जी उठा है चेत करो उस ने तुम से क्या कह
था कि क्रूस पर मारे जाने के पीछे मैं फिर जी उठूंगा ॥

फिर दूतों ने कहा कि आओ देखो जहां प्रभु पड़ा था
तुम शीघ्र जाके उस के शिष्यों से कहो कि प्रभु ईसा फि
जी उठा है और वे उसे शीघ्र देखेंगे ॥

स्त्रियां अति मगन होकर यह समाचार शिष्यों
कहने के हेतु कबर से बेग भागीं और वे कंपित औ
बिस्मित ऊई भागी जाती थीं कि उन्हों ने अकस्मात ई
को देखा कि वुह आगे के समान न था उस के गा
पर आंसू न थे वे पोंछ लिये गये थे वुह मूर्छित औ
दुर्बल आगे की नाईं जैसा क्रूस लेजाने के समय था
था वुह फिर कभी दुःखित न होगा और न फिर मरेगा।

स्त्रियां उसे देख बऊत हर्षित ऊईं और भूमि पर गि
दण्डवत कर उस के पैर थांभ लिये जिसतें वुह उन्हें छो
के चला न जाय और उसे अपना प्रभु और परमेश्वर कह
लगीं तथापि कुछ कुछ डरती भी थीं परन्तु ईसा ने उ

ीरज दे के कहा कि मत डरो जाओ मेरे भाइयों से कहो
कि मैं उन्हें बेग फिर देखूंगा॥

ईसा ने किन्हें अपने भाई कहा॥

अपने शिष्यन को यदि वे जब कि दुष्टों ने उसे पकड़ा
छोड़के भाग गये थे तथापि ईसा ने उन्हें क्षमा किया॥

उन स्त्रियों ने ईसा के कहे के समान शीघ्र से जाय उस के
शिष्यों से यह समाचार कहा कि हम ने स्वर्गीय दूतों को देखा
और प्रभु को भी देखा कि वुह घूम रहा है सो तुम बेग उसे
देखोगे परन्तु शिष्यों ने स्त्रियों का विश्वास न किया॥

छियालीसवां पाठ॥

मरियम मिगदाली के विषय में॥

मैं ने तुम से दो मरियमों का बर्णन किया अर्थात् एक तो
ईसा की माता और दूसरी लाजर की बहिन थी पर इन
दोनों को छोड़ाय एक और थी जिस का नाम मरियम
मिगदाली था वुह उन दोनों से पहिले तड़के ऐसा कि जब लों
अंधियारा था कबर पर आई और उस के भीतर झांका परन्तु
स्वर्गीय दूतों को न देखा सो मरियम मिगदाली वहां से शीघ्र
भागी और पतरस और यूहन्ना से आय कहा कि ईसा
कबर में नहीं है कोई दुष्ट उसे कबर से चुरा ले गये सो
मुझे जान पड़ता है कि अब वुह न मिलेगा॥

तब दोनों शिष्य एक संग निकले श्रौर कबर की श्रोर
धाये परन्तु यूहन्ना पतरस से श्रागे बढ़ गया श्रौर कबर
पर पहिले पड़ंचा उस ने झुकके उस के भीतर झांका ते
सूती कपड़े पड़े देखे॥

फिर पतरस उस के पीछे पड़ंचा श्रौर कबर के भीतर
झांकके उस ने कपड़ों को श्रलग पड़े ड़ए देखा श्रौर वु
श्रंगोछा जिस्से उस का सिर बंधा था लपेटा एक स्थान
में श्रलग पड़ा ड़श्रा देखा तब यूहन्ना भी भीतर गया
श्रौर देखके प्रतीति किई कि ईसा ने जो कहा था कि मैं
श्रवश्य जी उठूंगा सो सत्य ड़श्रा॥

यूहन्ना ने कहा कबर में कोई नहीं है इस लिये वि
निःसन्देह वुह जी उठा है॥

तब यूहन्ना श्रौर पतरस कबर से निकल श्रपने श्रपने
घर गये परन्तु उन्हों ने उन दूतों श्रथवा ईसा को न देखा

मरियम मिगदाली श्रब लों कहां थी॥

वुह कबर के पास बाहर श्रकेली खड़ी रोती थी
क्योंकि शिष्य श्रपने श्रपने घर चले गये थे॥

तब उस ने कबर में झुकके दृष्टि किई ते। दो दूतों के
श्वेत वस्त्र पहिने एक को सिरहाने श्रौर दूसरे को पैंताने में
बैठे देखा॥

उन्हों ने मरियम से कहा कि तू क्यों रोती है परन्तु
वुह रो रो कहती थी कि कोई दुष्ट मेरे प्रभु को ले

गये हैं और मैं नहीं जानती कि उन्हों ने उसे कहां रक्खा है॥

उस ने यों कहके पीछे फिरके एक मनुष्य को यह कहते सुना कि हे स्त्री तू क्यों रोती है॥

पर उस ने न चीन्हा कि वुह ईसा है इस लिये उस को माली जानके कहा कि यदि तू ने उस को यहां से उठाया हो तो मुझ से कह कि तू ने उस को कहां रक्खा है क्योंकि मैं उसे ले जाऊंगी॥

तब उस मनुष्य ने उसे कहा कि मरियम। उस ने पीछे फिरके देखा और चीन्ह गई कि ईसा है और वुह अपने प्रभु और स्वामी को जिसे वुह प्यार करती थी देख अति आल्हादित ऊई परन्तु ईसा उस के संग देर लों न रहा। उस ने मरियम से कहा कि मेरे प्रिय शिष्यों के पास जा और उन से कह कि ईसा फिर जी उठा है मैं तो बेग स्वर्ग पर अपने पिता के पास जाऊंगा परन्तु पहिले मैं अपने शिष्यन को देखूंगा॥

सो मरियम मिगदाली ने आके शिष्यन से सब समाचार कहा परन्तु वे सब रोते पीटते थे और मरियम की बात पर विश्वास न लाये। पर वुह आनन्द होती थी कि भला ऊआ कि मैं ने जाके ईसा को देखा सो उस ने सब से पहिले प्रभु को जब वुह फिर जी उठा देखा॥

सैंतालीसवां पाठ॥

दो मित्रों के बिषय में॥

इतवार के दिन बड़े तड़के स्त्रियां ईसा की कबर पर गईं थीं॥

और देखो उसी दिन सांझ को दो मित्र यरूसलम से एक बस्ती को जो वहां से पौने चार कोस पर थी जाते थे और आपस में ईसा के बिषय चर्चा करते जाते थे और जब से वुह जी उठा न तो उन्हों ने उसे देखा और न उन्हों ने सुना कि वुह फिर जी उठा है अथवा नहीं। परन्तु वे उस के क्रूस पर मर जाने के बिषय बार्त्ता करते जाते थे और ज्यों ज्यों वे ईसा के बिषय चर्चा करें त्यों त्यों उन के मन में उदासी और बियोग उपजे। अन्त को एक राही उन्हें मिला और उन से बार्त्ता करने लगा उन्हों ने बिचारा कि यह कोई परदेशी है तथापि वुह सज्जन और दयावन्त नर देख पड़ा॥

इतने में यह सज्जन पुरुष उन्हें देख बोल उठा कि तुम क्यों रोते हो मुझे जान पड़ता है कि तुम दोनों कोई महा दुःख के बिषय बोलते बतलाते हो॥

इन भले मनुष्यों ने कहा कि हां सत्य है कि हम ऐसी ही बार्त्ता करते हैं परन्तु क्या तुम ने ईसा के बिषय कभी नहीं सुनें कि उस ने कैसे कैसे आश्चर्य्य कर्म किये हैं उ

स्वामी ने ऐसे सुकर्म्म किये कि अंधन को दृष्टि दान दिया पंगुन को पदगामी किया टुंडन को हस्त दान दिया बिबिध रोगिन को चंगा किया मृतकन को जीव दान दिया गूंगन को वाग्दान और परमेश्वर के बिषय लोगन को उपदेश दिया समस्त लोग उसे प्यार करते थे अन्त को बैरियों ने उसे क्रूस पर खींचा हम ने समझा था कि वुह परमेश्वर का पुत्र है पर अब मन में सन्देह आता है कि वुह परमेश्वर का पुत्र नहीं था इस कारण कि वुह मर गया और हम अकुलाय घबराय भय खाते हैं कि फिर कभी उस का दर्शन न पावेंगे॥

दयाल परदेशी उन्हें रोते देख निपट उदास हो कहने लगा कि ईसा परमेश्वर का पुत्र क्यों नहीं है क्या तुम ने पवित्र पुस्तक में नहीं पढ़ा जो परमेश्वर ने अपने पुत्र के बिषय कहा है कि वुह भेड़ी के बच्चे की नाईं बध करने को लाया जायगा सो परमेश्वर की इच्छा के समान वुह मारा गया और निःसन्देह वुह फिर जी उठेगा और अपने पिता के पास स्वर्ग में जायगा॥

इस परदेशी ने बहुत कुछ कहा उसे केवल अर्थात् ईश्वरीय ग्रंथ कण्ठ था सो इस्से उस ने उन्हें बहुत ज्ञान जिसे वे नहीं जानते थे सिखाया वे मित्र अति प्रसन्नता से सुनते थे और उस के बचन उन्हें ऐसे सुहावने लगे कि उन का शोक बिसर गया॥

जैसे तैसे दोनों मित्रों ने बस्ती में पहुंच अपने घर में प्रवेश किया और उन्हों ने यह समझके कि वुह राही आगे बढ़ा चाहता है उस्से बिन्ती कर बोले कि हे सज्जन अंधकार हो चला है सो हमारे घर में कृपा कर प्रवेश कीजिये और भोजन खाय आज की रात यहीं सो रहिये ॥

राही ने उन की बिन्ती सुन कहा कि अच्छा मैं आज की रात तुम्हारे ही घर टिक रहूंगा ॥

तब दोनों मित्र और वुह बिदेशी रसोई में पैठ मंच के चारों ओर बैठ गये निदान उस बिदेशी ने रोटी ले उसे तोड़ परमेश्वर का धन्यवाद किया इतने में उन दो मित्रों ने चीन्हा कि वुह बिदेशी कौन है ॥

और चिल्लाय उठे कि वुह प्रभु ईसा मसीह है और सत्य है कि वुह प्रभु था सो उन्हों ने उस की ओर दृष्टि करके देखा परन्तु वुह अदृश्य हो गया केवाड़े बन्द ही रहे वुह अन्तर्ध्यान हो गया ॥

तब उन्हों ने आपस में बिचार किया कि देखो वुह हम से कैसे प्रेम से बार्त्ता करता था और जब वुह ग्रंथों का अर्थ करता था क्या हमारे मन आनन्द से हम में न तपते थे ॥

तो क्या तुम समझते हो कि वे दोनों रात को सोये ॥

नहीं। उन्हें नींद कहां वे उठ खड़े भये और कहा कि चलो यह सारा समाचार शिष्यन से कहें कि हम ने प्रभु ईसा को देखा है यह बिचारकर भोजन छोड़ तुरन्त

यरूसलम को फिरे और बेग चलते चलते बात की बात में यरूसलम में आय पडुंचे ॥

समस्त शिष्य एक घर में एकट्ठे थे और, द्वार बन्दकर लिया था जिसतें कोई दुष्ट घर में न घुसे परन्तु इन दोनें को आनन्द से घर में जाने दिया ॥

सभा में बैठ इन दोनें ने यह समाचार कहा कि हम ने ईसा को देखा है और उन्हों ने मार्ग की बातें भी बर्णन किईं कि हम ने जब लों वुह हमारे संग भोजन पर न बैठा था न चीन्हा परन्तु जब उस ने रोटी तोड़ी और अपने पिता का धन्यवाद किया तब हम ने उसे पहचाना शिष्यों ने यह समाचार सुन स्वीकार किया और कहा कि कई एक स्त्रियें और पतरस ने भी उसे देखा है ॥

और जब वे यें कह रहे थे अकस्मात ईसा को उन्हों ने अपने मध्य में खड़ा देखा उस ने द्वार न खोले परन्तु उन के बीच में चला आया ॥

तब शिष्य अकुलाय भय खाय अविश्वासी हो कहने लगे कि यह ईसा नहीं है ॥

परन्तु ईसा ने दयाल हो उन से कहा कि मत डरो मैं सचमुच तुम्हारा स्वामी ईसा हूं जिसे तुम देख रहे हो तुम क्यों व्याकुल हो मेरे हाथों और पावें को देखो कि मैं आप ही हूं मेरे हाथ पांव में कीलें के चिन्ह देखो और

टटोलो और पञ्जर में भाले का चिन्ह देखाया जिस्से लोहू और पानी निकला था ॥

तब ईसा ने कहा कि अब तो विश्वास लाते हो कि मैं ईसा हूं ॥

शिष्यों ने जब अपने प्रिय स्वामी को चीन्हा तो उसे देख उन के मन में बहुत हर्ष उत्पन्न हुआ जिस समय से ईसा उन से गुप्त था वे निपट व्याकुल थे और उन्हें यह भी प्रतीति हुई कि जब वे उसे छोड़ भाग गये तो उस ने उन्हें क्षमा किया ईसा ने उस के बिषय कुछ चर्चा भी न किया उस ने पतरस को भी क्षमा किया वुह जानता था कि पतरस उसे प्यार करता और अति शोकित है ॥

और जिसतें वे आनन्द से प्रतीति करें कि वुह ईसा है उन से कहा कि तुम्हारे पास यहां कुछ भोजन हो तो लाओ मैं खाऊंगा तब उन्हों ने उसे थोड़ी सी मछली और मधु का छत्ता दिया उस ने लेके उन के सन्मुख खाया ॥

इस के पीछे उस ने सब बातें कहीं कि मेरा मरना और व्यवस्था और भविष्यद्वक्तों और भजनों का सम्पूर्ण होना अवश्य था सो हो चुका अब मैं अपने पिता के पास जाता हूं कि तुम्हारे लिये उस्से प्रार्थना करूं ॥

यह रात उस रात्री के समान न थी जब ईसा बाटिका में शोक और व्याकुलता से भर पूर था परन्तु महा हर्षित और आनन्द की थी शोक मोह और दुःख सब बीत गये ॥

अठतालीसवां पाठ॥

तोमा के विषय में॥

तुम सुन चुके हो कि किस भांति शिष्यों ने ईसा को सांझ समय देखा परन्तु तोमा उन बारहों में से एक जिस की पदवी दीदमूस थी ईसा के आने के समय उन के संग न था पर कोई कारण जान नहीं पड़ता कि वुह क्यों उन के संग न था॥

सो जब शिष्यों ने तोमा को देखा तो उस्से कहा कि हम ने ईसा को इतवार की रात को देखा है जिस समय हम सब एकट्ठे थे उस ने हमारे मध्य में आप हम से बातें किईं हम निःसन्देह जानते हैं कि वुह ईसा था इस कारण कि उस ने अपने हाथों और पावों में कीलों के चिन्ह हमें देखाये और पञ्जर में भाले का छेद हम ने आप टटोलके देखा॥

परन्तु उस ने उन का विश्वास न किया और कहा मेरे बिचार में आता है कि तुम ने उस ईसा को जो क्रूस पर मर गया नहीं देखा सो जब लों मैं उस के हाथों और पावों में कीलों के चिन्ह न देखूं और कीलों के चिन्ह में अपनी अंगुली न करूं और अपने हाथ उस के पञ्जर में न डालूं मैं कधी प्रतीति न करूंगा॥

इस रीति से बोलने में तोमा की बड़ी भूल थी उसे अवश्य था कि ईसा के बचन को जो उस ने कहा था कि मैं फिर जी उठूंगा अपने चित्त में रखता॥

ईसा ने तोमा को बोलते सुना यद्यपि तोमा ने उसे न देखा इस लिये कि वुह शिष्यों के संग नित्य रहता था और जो कुछ वे बोलते थे वुह तुरन्त सुन लेता था इस कारण कि वुह घट घट का अन्तर्जामी और परमेश्वर था॥

फिर जब दूसरे इतवार समस्त शिष्य एकट्ठे थे तोमा भी उन के संग था और सब केवाड़े बन्द थे जिस्तें दुष्ट न घुस पड़ें परन्तु शिष्य जानते थे कि ईसा आ सक्ता है यद्यपि द्वार बन्द हैं तो क्या भया सो वुह सचमुच उन के पास आया और उन्हों ने उसे मध्य में खड़ा देखा तब उस ने दया से उन से कहा कि तुम पर कुशल॥

फिर उस ने तोमा से कहा कि अपनी अंगुली इधर ला और मेरे हाथों को देख अपना हाथ इधर बढ़ा और उसे मेरे पञ्जर में कर॥

तोमा जान गया कि जो कुछ मैं ने कहा उस ने सुना और जानता है क्योंकि मैं ने कुबचन कहा है सो वुह अति शोक और लाज से भर गया तब तोमा ने जाना कि वह ईसा है उस ने ईसा को उत्तर दे के कहा हे मेरे प्रभु हे मेरे परमेश्वर॥

ईसा ने तोमा से कहा तुम ने मुझे देखा और विश्वास लाते हो धन्य हैं वे जिन्हों ने नहीं देखा परन्तु विश्वास लाये सो ईसा ने तोमा के अपराध को क्षमा किया इस लिये कि वुह ईसा को हृदय से प्यार करता था॥

उनचासवां पाठ ॥

भोजन के विषय में ॥

ईसा ने अपने शिष्यन से कहा कि तुम सब यरूसलम से दूर निकल जाओ वहां मैं भी तुम्हें देखने को आऊंगा सो शिष्य दूर की बस्तियों में निकल गये और चलते चलते उस झील के तीर पडुंचे जहां वे आगे रहा करते थे उन की नावें घाट में लगी थीं जिन से वे अगले समय जब उन पर रहा करते थे मछली मारते थे ॥

एक रात पतरस ने शिष्यन से कहा कि मैं मछली पकड़ने जाता हूं शिष्यों ने कहा हम भी तेरे संग चलेंगे और निकलके तुरन्त नाव पर चढ़े पर रात भर कुछ न पकड़ा और परिश्रम से थके और भूखे प्यासे थे ॥

परन्तु जब प्रातःकाल ज़ुआ उन्हों ने एक मनुष्य को तीर पर खड़े देखा पर न जाना कि वृह कौन है ॥

उस मनुष्य ने उन से चिल्लाके कहा कि हे बालको तुम्हारे पास कुछ भोजन है ॥

उन्हों ने उत्तर दिया कि नहीं हम ने अभी कुछ नहीं पकड़ा ॥

उस मनुष्य ने उन से कहा कि नाव की दहिनी ओर जाल डालो तो तुम पाओगे ॥

सो उन्हों ने उस के कहे के समान डाला और इतनी

मछलियां जाल में आईं कि बड़ताई से वे उसे खैंच न सके॥

तब यूहन्ना जान गया कि वुह कौन है उस ने पतरस से कहा कि यह प्रभु है॥

पतरस ने जब यह सुना अति हर्षित हो समुद्र में कूद पड़ा और पैरके ईसा के पास चला अरु और शिष्य नाव पर जाल को मछलियों समेत खैंचते आये और ईसा जानता था कि वे भूखे और थके हैं ज्यों हीं वे तीर पर आये उन्हों ने वहां कोयलों की आग और उस पर मछली धरी हुई और रोटी देखी देखो ईसा कैसा दयाल था कि उस ने अपने भूखे शिष्यों को भोजन दिया॥

ईसा ने कहा कि उन मछलियों में से जो तुम ने अभी पकड़ीं लाओ सो पतरस ने जाल को एक सौ तिरपन बड़ी मछलियों से भरा हुआ तीर पर खैंचा॥

यह भी एक बड़ा आश्चर्य्य कर्म था जो ईसा ने किया फिर ईसा ने उन्हें कहा कि आओ भोजन करें इतने में सब भोजन करने को एक संग बैठे तब ईसा ने रोटी लिई और उन्हें दिई और उसी रीति से मछलियां भी दिईं॥

शिष्य निश्चय करके जानते थे कि जो उन्हें भोजन खिलाता सो ईसा है इसी भांति उन्हों ने ईसा के मरने से आगे उस के संग भोजन किया था सो अब मरके फिर जी उठा और आगे की नाईं उन्हों ने फिर उस के संग भोजन

किया परन्तु वे इतना निःसन्देह जानते थे कि अब वुह बहुत देर लों उन के संग न रहेगा॥

जब सब भोजन कर चुके ईसा ने पतरस से कहा क्या तू मुझे प्यार करता है॥

पतरस ने उत्तर दिया हां हे प्रभु तू जानता है कि मैं तुझे प्यार करता हूं॥

ईसा ने उसे कहा मेरे मेम्नों को चरा अर्थात् और लोगों को सिखा कि वे भी मुझे प्यार करें और जाकर उपदेश कर कि मैं ने उन के कारण अपना प्राण दिया है॥

तुम हे मेरे छोटे बालको मसीह के मेम्ने हो और जब मैं तुम से उस के बिषय बार्त्ता करता हूं तो मानो मैं तुम्हें चराता हूं हां मैं तुम्हारे आत्मा को चराता हूं और उन्हें नरक से बचाने का उपाय करता और सहेजता हूं॥

यद्यपि पतरस ईसा को प्यार करता था और ईसा जानता था कि वुह उसे प्यार करता है तथापि ईसा ने उसे फिर कहा क्या तू मुझे प्यार करता है पतरस ने उत्तर देके कहा कि हां हे प्रभु तू तो जानता है कि मैं तुझे प्यार करता हूं उस ने उसे कहा कि मेरी भेड़ें चरा॥

ईसा ने उसे तीसरी बार कहा क्या तू मुझे प्यार करता है पतरस अकुलाय और शोकित हो कि ईसा उस का विश्वास नहीं करता कहने लगा कि हे प्रभु तू तो सब कुछ जानता है तू जानकार है कि मैं तुझे प्यार करता हूं॥

ईसा ने उसे कहा मेरी भेड़ें चरा॥

यदि पतरस ईसा को प्यार करता था तो उसे अवश्य था कि जो कुछ उस ने आज्ञा दिई उसे कर लाता और जाके लोगों को उस के बिषय सिखाता॥

क्या हे मेरे छोटे बालको तुम ईसा को प्यार करते हो तुम क्या उत्तर देओगे यदि वुह तुम से पूछे कि क्या तुम मुझे प्यार करते हो क्या तुम ईसा से कह सक्ते हो कि हे ईसा मेरे हृदय को जांच और देख कि मैं तुझे प्यार करता हूं अथवा नहीं यदि तुम निश्चय उसे प्यार करते हो तो तुम झूठ क्रोध लोभ मोह से घिन करोगे और दयाल और कोमल होने और सत्य बोलने का पीछा करोगे॥

किस कारण ईसा ने पतरस से दोहराय तेहरायकर पूछा कि वुह उसे प्यार करता है अथवा नहीं॥

इस कारण कि पतरस ईसा से तीन बार मुकर गया था और कहता था कि मैं उसे नहीं जानता हूं इसी लिये उस ने पतरस से दोहराय तेहरायकर पूछा कि वुह ईसा को प्यार करता है कि नहीं॥

इस के पीछे ईसा ने पतरस को बतलाया कि जब वुह वृद्ध होगा तो उस पर क्या क्या बीतेगा सो उस ने कहा जब तू तरुण था जहां कहीं चाहता था जाता था परन्तु जब तू वृद्ध होगा तो और लोग तेरे हाथ को फैलावेंगे और जहां तू न चाहे तुझे ले जायेंगे॥

ईसा का पतरस के विषय ऐसा कहने से यह अर्थ था कि पतरस क्रूस पर खैंचा जायगा और लोग उस के हाथ फैलाय उन में उस भांति कीलें गाड़ेंगे जैसे उन्हों ने ईसा के हाथ पांव में गाड़ी थीं, दुष्ट उसे इस लिये क्रूस पर मारेंगे कि वुह ईसा को प्यार करता था और फिर कभी पतरस न मुकरेगा कि मैं ईसा को नहीं जानता॥

अब पतरस का अहङ्कार जाता रहा वुह तो परमेश्वर से दिन रात प्रार्थना करता था जिसतें ईश्वर उसे समस्त पापों से बचाये रक्खे॥

पचासवां पाठ॥

ईसा का स्वर्ग पर जाना॥

जब ईसा मरके फिर जी उठा वुह बहुधा अपने शिष्यों को देखाई देता और उन से बातें करता था परन्तु आगे की नाईं वुह उन के संग देर लों न रहता था पर जब तब उन्हें दिखलाई देकर उन से बातें कर अन्तर्ध्यान हो जाता था॥

तब ईसा ने अपने शिष्यों से कहा कि अब मैं बेग अपने पिता के पास स्वर्ग पर जाऊंगा जब मैं चला जाऊं तुम मेरे बिषय लोगों को उपदेश करना और उन दुष्टों से भी जिन्हों ने मुझे क्रूस पर खैंचा कहना और उन्हें धर्म उपदेश देना कि यदि वे अपने पापों से अब भी पछतायें तो मैं

उन्हें क्षमा करूंगा मैं पवित्र आत्मा को स्वर्ग से तुम्
पास पठाऊंगा और तुम मेरे समान आश्चर्य कर्म करोगे
दुष्टों से मत डरो मैं तुम्हारे संग सर्वदा रहूंगा यदि तुम
मुझे नहीं देखते मैं कोई दिन तुम्हारे पास फिर आऊंगा।

शिष्यों ने उससे पूछा कि हे प्रभु तू कब आवेगा पर उस ने
उन्हें न बतलाया कि वुह कब आवेगा॥

एक दिन प्रभु शिष्यन के पास आय उन्हें अपने संग ले
सब हिल मिलकर एक पर्वत की चोटी पर गये तब ईसा
ने अपने शिष्यन के संग प्रार्थना कर अपना हाथ बढ़ाय
उन्हें आशीस दिई और जब वुह उन से बातें कर आशीस
दे चुका उन के देखते ही देखते मेघ ने उस को ऊपर उठाय
उन की दृष्टि से छिपा लिया और वुह अपने पिता के पास
जाता रहा शिष्य उस को ऊपर जाते आकाश की ओर
ताक रहे थे यहां लों कि वुह मेघ उन की दृष्टि से लोप हो
गया तिस पर भी वे स्वर्ग की ओर ताक रहे थे तब अचानक
उन्हों ने किसी को यह बोलते सुना कि तुम किसे खड़े ताक
रहे हो इतने में क्या देखते हैं कि दो स्वर्गीय दूत उन के
पास खड़े हैं वे अति चमकीले श्वेत बस्त्र पहिने थे सो उन्हों
ने शिष्यों से कहा कि तुम क्यों स्वर्ग की ओर खड़े ताक रहे
हो जिस रीति से तुम लोगों ने उसे स्वर्ग को जाते देखा उसी
रीति से वुह फेर आवेगा तब सब शिष्य यरूसलम को
फिरे॥

कदाचित् तुम कहोगे कि ईसा के स्वर्ग पर चले जाने से शिष्य निपट उदास थे सो नहीं वे जानते थे कि ईसा उन के लिये स्वर्ग में सदन ठीक करने को गया है जिसतें वे उस के संग सर्वदा लों रहें इस लिये वे बहुत आल्हादित थे॥

एकावनवां पाठ॥

पतरस का बन्दीगृह में पड़ना॥

ईसा ने अपने शिष्यन को पिता के पास स्वर्ग पर जाने के समय क्या आज्ञा दिई॥

यह आज्ञा दिई थी कि यरूसलम के समस्त दुष्टों को पाप मोचन के निमित्त प्रचार प्रचार उपदेश करो और उन से कहो कि यदि वे अपने पापों से पश्चात्ताप करें तो प्रभु ईसा मसीह उन के अपराधों को क्षमा करेगा॥

शिष्यों ने दुष्टों से कहा कि तुम ने परमेश्वर के पुत्र को क्रूस पर मारा पर वुह फिर जी उठा और स्वर्ग पर जाय अपने पिता के सिंहासन पर बैठा है परन्तु वुह तुम्हारी क्षमा करेगा॥

सो अनेक दुष्ट उपदेश सुन जो बुराई उन्हों ने ईसा से किई थी चेतकर निपट पछताये और परमेश्वर से बिन्ती किई कि वुह उन को क्षमा करे परन्तु औरों ने अधिक कठोर हो शिष्यों के घात करने का उपाय किया॥

एक दुष्ट राजा ने यअ्रकूब का सिर खड्ग से काट डाल और पतरस को घात करने के हेतु बन्दीगृह में डा दिया॥

क्या तुम ने कभी बन्दीगृह देखा है॥

एक अंधकार स्थान जिस में बड़े भारी द्वार और लो के मोटे मोटे बाधा लगे रहते हैं और उस के चारों ओ ऊंची ऊंची भीतें होती हैं जिस्से वुह घिरा रहता है॥

सिपाहियों ने पतरस को पकड़ हाथ पांव सीकरियों जकड़ बन्दीगृह में डाल उस के द्वार बन्द कर दिये औ पहरा खड़ा किया जिस्तें उस की रखवाली करें और को उस के भीतर न घुसें॥

परन्तु पतरस के मित्र अर्थात् परमेश्वर के लोग ब चिन्ता में थे और अति दुःखी थे कि वुह बन्दीगृह में पड़ा वे उसे बन्दीगृह से बाहर नहीं निकाल सक्ते थे पर सा मंडली निरन्तर उस के लिये परमेश्वर से प्रार्थना कर थी कि परमेश्वर उसे दुष्टों के हाथों से छुड़ावे और पतर के मित्रों ने सारी रात प्रार्थना में काटी॥

उस चण्डाल दुष्ट राजा ने कहा कि कल के दिन पतरस को घात करूंगा परन्तु परमेश्वर ने उसे घात हो न दिया और परमेश्वर ने एक महा सुन्दर स्वर्गीय दूत पतरस के पास भेजा कि उसे बन्दीगृह से छुड़ावे उस दूत ऐसी सामर्थ थी कि बिना द्वार खोले वुह भीतर चला जाय

स्वर्गीय दूत उसी रात को पतरस पास आया परन्तु वुह दो सिपाहियों के बीच में दो सीकरियां से जकड़ा ऊआ सोता था हे बालको यदि कोई तुम्हें सीकरियों से जकड़ सिपाहियों के मध्य में सुलावे तो तुम्हें कभी न भावेगा और तुम तनिक प्रसन्न न करोगे परन्तु पतरस जानता था कि परमेश्वर उस की सहायता पर है और उसे प्यार करता है सो उस ने कुछ भय न खाया और अपने को निरापद जाना॥

सो दूत उस अंधकार बन्दीगृह में आया॥

क्या पतरस ने उसे देखा॥

हां इस लिये कि स्वर्गीय दूत सूर्य के समान चमकीला था उस घर में ज्योति का प्रकाश ऊआ॥

दूत ने पतरस की पसली पर मारके उसे जगाया कि शीघ्र उठ वहीं सीकरियां उस के हाथों से गिर पड़ीं॥

तब उस ने पतरस से कहा कि अपने बस्त्र पहिन उस ने वैसा ही किया फिर उस ने कहा कि मेरे पीछे हो ले सो दूत आगे आगे चला और पतरस उस के पीछे हो लिया और जब वुह बन्दीगृह से बाहर चला सिपाहियों ने न जाना इस लिये कि परमेश्वर ने उन पर भारी नींद भेजी और वे सो गये पर पतरस ने बऊत अचम्भा माना और न जाना कि यह जो दूत ने किया सत्य है परन्तु समझा कि मैं स्वप्न देखता हूं यह सचमुच दूत नहीं है॥

जब वे पहिले दूसरे पहरे से निकल लोहे के फाटक

और सब उस्से पूछने लगे कि तुम कैसे बन्दीगृह से निकल आये॥

उस ने उन्हें हाथ से सैन करके कहा कि चुप रहो मैं सब समाचार बतलाता हूं कि मैं किस भांति बन्दीगृह से छूटा॥

सो उस ने बर्णन किया कि प्रभु ने अपना दूत भेजके मुझे बन्दीगृह से निकाला और उस ने यह भी कहा कि यह समाचार और सब भाइयों को पहुंचाओ इस लिये कि मैं यहां से अभी जाता हूं यह कह वुह निकलके किसी और स्थान में जा रहा जहां राजा उसे न पाय सके॥

बिहान को जब पतरस को सिपाहियों ने न पाया तो उन पर कैसी बीती॥

वे बहुत घबराये कि सीकरियां तो हैं पर पतरस को क्या हुआ। उन्हों ने बन्दीगृह के द्वार भी बन्द देखे पर न जाना कि पतरस कहां से निकल गया॥

जब पतरस के घात करने का समय आया तो राजा ने उसे बुलवाय भेजा और यरूसलम के समस्त दुष्ट उस का तमाशा देखने को बटुर आये और उस की बाट जोह रहे थे इतने में प्यादे सिपाहियों के पास जाय पहुंचे और जाते ही कहा कि पतरस कहां है उसे बाहर लाओ॥

रखवाले डरपि उठे और कहने लगे कि हम नहीं जानते उसे क्या हुआ और वुह कहां लोप हो गया॥

प्यादे उलटे पांव फिरे और राजा से जा लगाई कि पतरस बन्दीगृह में नहीं है राजा ने यह अन्धेर सुन अति रिसियाय प्यादों से कहा कि जाओ सिपाहियों को पकड़ लाओ मुझे जान पड़ता है कि वे सो गये थे॥

प्यादे तुरन्त उठ धाये और सिपाहियों को पकड़ लाय राजा के सन्मुख खड़ा किया सिपाही कुछ न बतलाय सके कि पतरस कैसे निकल गया क्योंकि परमेश्वर ने अपना दूत भेजके उसे छुड़ाया और इन्हें भारी नींद में डाला था तब राजा महा कोपित हुआ और आज्ञा दिई कि रखवालों को घात करें॥

देखो यह क्या ही दुष्ट राजा था वुह बुराई करने में कैसा आनन्द होता था वुह अभिमानी और परमेश्वर और उस के लोगों का निपट बैरी था और वुह क्रोध के वश हो अपने अधिक किसी की चिन्ता न करता था अन्त को परमेश्वर ने अपने दूत को भेजा कि उसे मार डाले सो वुह कीड़े पड़कर मर गया॥

सो देखो परमेश्वर दुष्टों को दण्ड देने के लिये अपने स्वर्गीय दूतों को भेजता है और पतरस की नाईं जो उस के सच्चे प्रेमी हैं उन पर दया करता और उन्हें सब दुःखों से छुड़ाता है॥

बावनवां पाठ ॥

यूहन्ना के विषय में ॥

इसी रीति सब शिष्य दुष्टों से घात किये गये जब पतरस वृद्ध हुआ तो अधर्म्मियों ने इस कारण कि वुह ईसा को अपने हृदय से प्यार करता था उसे क्रूस पर खींचा सो देखो वुह अब चमकीले बस्त्र पहिने अपने स्वामी ईसा के संग स्वर्ग में है उस की आंखों के आंसू पोंछे गये उस का प्रिय प्रभु नित्य उस के पास रहता है और इसी लिये वुह बहुत प्रसन्न और आनन्द और चैन में है॥

जब यूहन्ना बहुत वृद्ध हुआ तो एक चण्डाल राजा ने उसे पकड़ उपद्वीप में भेज दिया जहां न बस्ती न कोई मनुष्य थे परन्तु उस के चारों ओर समुद्र था उस में से यूहन्ना कहीं नहीं जा सक्ता था॥

क्या यूहन्ना वहां रहने से घबराया॥

कभी नहीं इस लिये कि परमेश्वर उस के संग था वुह प्रसन्नता से नित्य परमेश्वर और उस के पुत्र के विषय ध्यान करता था॥

एक दिन इतवार को यूहन्ना परमेश्वर के ध्यान में था और देखो कि एका एकी उस ने अपने पीछे तुरही का महा शब्द सुना और तुरन्त पीछे फिरके देखा॥

और क्या देखता है कि प्रभु ईसा मसीह अपने विभव

ग्रोर प्रकाश में उस के पास प्रगट ज्ञआ जब उस ने उसे
देखा तो उसे बोलने अथवा खड़े रहने की शक्ति न रही
तो वुह मुरदे के समान भूमि पर ग्रोंधे मुंह गिर पड़ा
परन्तु ईसा ने उसे अपने हाथ से छूके कहा कि मत डर
मैं वही हूं जो मुआ था फिर जी उठा ग्रोर सर्वदा लों
जीता हूं मैं तुझे बज्जत सी अनोखी बस्तु देखाजंगा ग्रोर
तो जो तू देखे उन्हें एक पुस्तक में लिख ले तब ईसा उसे
स्वर्ग पर ले गया ग्रोर एक दूत ने उसे अति सुन्दर बस्तु
देखाई ॥

उस ने परमेश्वर को सिंहासन पर बैठे देखा ग्रोर उस
सिंहासन के चारों ग्रोर एक धनुष था ग्रोर बज्जत से बैठके
जिन पर मनुष्य बैठे थे जिन के बस्त्र श्वेत ग्रोर जिन के
सिरों पर सोनहले मुकुट थे सो उन मनुष्यों ने अपने मुकुट
उतार सिंहासन के सन्मुख फेंक ईसा परमेश्वर के मेम्ने की
स्तुति किई ॥

फिर उस ने अनगणित दूतों को देखा जो सिंहासन के
चारों ग्रोर खड़े मेम्ने की स्तुति गाते थे ॥

परन्तु जितनी बस्तु उस ने स्वर्ग में देखीं उन में कोई
बस्तु परमेश्वर के विभव सी न देख पड़ीं ॥

स्वर्ग में न तो सूर्य्य न चन्द्रमा ग्रोर न दिया न बाती
है तथापि वहां नित्य उंजियाला रहता है इस कारण
कि परमेश्वर सूर्य्य से अधिक चमकता है तार के बाजों

और मीठे गीतों का शब्द नित्य सुनाई देता है इस लिये
कि सब स्वर्गीय दूत परमेश्वर की स्तुति गा सक्ते हैं॥

यूहन्ना ने ये सारी बस्तु देख सुन बड़ा आश्चर्य मान
और जिस दूत ने उसे यह बस्तु देखाई उस के चरणों पर
यूहन्ना गिर पड़ा॥

तब उस दूत ने उसे उठाके कहा कि मेरी अर्चना न कर
मैं तो केवल परमेश्वर का सेवक हूं परन्तु परमेश्वर की
स्तुति और उसी का धन्यवाद कर॥

और देखो वुह दूत बतलाता रहा कि ईसा मसीह
जगत का न्याय करने को आवेगा और उन के लिये जो
उस की आज्ञा पालनहार हैं स्वर्ग के द्वार खोल देगा
कि वे बैकुंठ में प्रवेश करें परन्तु जो झूठ बोलते और
नाना प्रकार की बुराई करते हैं उन के लिये वुह स्वर्ग के
द्वार न खोलेगा इस लिये नरक उन का भाग होगा॥

सब जो ईसा को प्यार करते यह लालसा रखते हैं
कि वुह बादलों में फिर आवे॥

हे मेरे छोटे बालको क्या तुम ईसा को देखने की
लालसा रखते हो॥

यदि ऐसा है तो तुम भी कहोगे कि हे प्रभु ईसा आ
मेरी बड़ी लालसा है कि तुम्हारा आत्मा मरने के पीछे
ईसा के पास जाय और जब वुह फिर आवे तो तुम्हें अपने
संग ले जाय॥

सो यूहन्ना ने जितनी बस्तु स्वर्ग में देखीं उन्हें एक पुस्तक में लिख छोड़ीं और उन का बर्णन बैबल अर्थात् पवित्र पुस्तक में है अन्त को यूहन्ना मर गया और उस का प्राण परमेश्वर के पास गया अब तो वह ईसा के संग स्वर्ग में है वहां सोनहले बाजों को दूतों के संग बजा बजाके परमेश्वर की स्तुति करता है और जब प्रभु ईसा मसीह इस जगत के न्याय के लिये फिर आवेगा तो यूहन्ना भी उस के संग आवेगा॥

तिरपनवां पाठ॥

न्याय के दिन के बिषय में॥

तुम निश्चय जानते हो कि प्रभु ईसा मसीह इस जगत के न्याय के लिये मेघों में फिर आवेगा॥

हे छोटे बालको क्या तुम जानते हो कि वुह कब आवेगा यदि तुम जान्ने चाहते हो तो क्या मैं तुम्हें बतलाऊं मैं कैसे बतलाऊं मैं तो आप ही नहीं जानता उस दिन को स्वर्गीय दूत भी नहीं जानते हैं केवल परमेश्वर के और कोई नहीं जानता है उस दिन बहुतेरे धर्म्मी और दुष्ट लोग जीते पाये जायेंगे और एक दूत तुरही फूंकेगा तब ईसा मुर्दों से कहेगा कि अपने अपने कबरों से बाहर निकलो॥

तब मृतकन की देहें कबरों से बाहर निकलेंगी और वे जो प्रभु ईसा को प्यार करते हैं सो दूतों के समान आकाश में

उड़ेंगे और यदि उस के आने के समय तुम जीते रहो तो
वुह तुम्हें भी वायु में ऊपर उठा लेगा जिस्तें तुम उस्से मिलो

वुह बादलों में सूर्य से अधिक चमकता ऊआ अपने दूतो
के संग विभव में आवेगा और अपने विभव के श्वेत सिंहा
सन पर बैठेगा और एक मुकुट अपने सिर पर पहिनेगा औ
सब क्या छोटे क्या बड़े उस के सिंहासन के आगे खड़े होंग
तब वुह पोथियां खोलेगा जिन में सभों की करणी औ
दुष्टता लिखी होगी और जो बुरे कर्म तुम ने किये
सो भी लिखे होंगे वुह अंधियारे और उंजियाले दोन
में तुम्हें देखता है और तुम्हारे समस्त बुरे कर्म्मों के
जानता है सो वुह सब दूतों के आगे तुम्हारी करणी उ
पुस्तक से तुम्हें पढ़ सुनावेगा तौ भी वुह अनेक मनुष्यों के
छमा करेगा इस कारण कि मसीह उन के लिये क्रूस पर मरा

वुह किन को छमा करेगा॥

केवल उन्हें जो उसे प्यार करते हैं॥

उन के नाम उस ने दूसरी पोथी में जो जीवन की कह
लाती है लिख छोड़े हैं वुह उन के पापों को छमा करेग
और उन की आंखों से आंसू पोंछ डालेगा और उ
सर्वदा लों अपने संग रक्खेगा॥

क्या तुम आशा रखते हो कि वुह तुम्हारे नाम को
उस जीवन की पोथी में लिखे॥

परमेश्वर से बिन्ती करो कि वुह अपने पवित्र आत्मा

तुम्हारे हृदय में भेजे तब तुम ईसा को प्यार करोगे और दुष्ट कर्मों से घिन करोगे॥

और जो परमेश्वर को प्यार नहीं करते उन की यह गति होगी कि परमेश्वर उन्हें सीकरियों से बंधवाय अनन्त आग के कुण्ड में जो नरक कहलाता है डलवा देगा॥

उस अनन्त पीड़ा में पड़के वे अनन्त काल लों छटपटावेंगे और दांत किड़किड़ावेंगे॥

और परमेश्वर शैतान और दुष्ट आत्माओं को नरक स्थान में डालेगा॥

शैतान सब दुष्टों का पिता है सो वुह और उस के पुत्र सर्वदा लों अनन्त पीड़ा में पड़े रहेंगे और उन को एक बूंद पानी भी न मिलेगा कि अग्नि से दग्ध अपनी जीभ बुझावें और सैकड़ों लोग नरक में हाय मारके कहेंगे कि भला होता कि हम अपने गुरु की बातों को मानते पर हाय हम ने न माना और वुह अब समय भी बीत गया सो हम इस नरक कुण्ड से कभी न निकल सकेंगे हम ने बड़ी मूर्खता किई यदि हम तब प्रार्थना करते तो परमेश्वर हमारी निःसन्देह सुन्ता परन्तु अब हमारे रोने और कल्पने से क्या होता है॥

हे मेरे प्यारे छोटे बालको मैं आशा रखता हूं कि तुम में से कोई ऐसी शोकित और अनर्थ पछतावे की बातें न कहेगा॥

चेत करो कि शैतान गर्जते सिंह की नाईं इधर उधर ढूंढ-

ता फिरता है कि किस को खा जावे वुह तुम्हें बहकाता है कि जिस्तें परमेश्वर तुम से अप्रसन्न हो जाय पर यदि तुम प्रभु ईसा मसीह से प्रार्थना करो तो वुह तुम्हें दुष्टता से बचाये रक्खेगा॥

एक दिन इस जगत को जिस पर हम बसते हैं परमेश्वर निःसन्देह भस्म कर डालेगा देखो यदि एक घर को तुम जलते देखो तो वुह कैसा भयंकर लगता है क्या तुम ने कभी कोई घर अग्नि से जलते देखा है और जब तुम सब घरों और पेड़ों और सारी बस्तुन को जलते देखोगे तो कैसा भयंकर और डरावना लगेगा इस बिपत्ति से जगत में महा कोलाहल मचेगा और चहुंओर लवर और अग्नि देखाई देगी उस समय दुष्ट कभी न बचेंगे परन्तु सर्वदा लों जलेंगे यह जगत तो थोड़ी ही देर में जल भुनकर राख हो जायगा और परमेश्वर इस्से अच्छा एक और नया जगत उत्पन्न करेगा॥

और यदि तुम परमेश्वर के पुत्र और उस की आज्ञा के पालनहार होओ तो तुम जगत के भस्म होने के समय निडर रहोगे इस लिये कि प्रभु ईसा मसीह तुम्हें सब कष्ट और भय से छोड़ाय अपने संग स्वर्ग धाम को ले जायगा और तुम वहां सदा हर्षित बसोगे और ईसा की तुम्हें बचाने और प्यार करने के लिये तुम नित्य स्तुति करोगे॥